ग्राम गौरव संस्थान

विकास यात्रा रिपोर्ट

ग्राम गौरव संस्थान

बिरहटी, सुक्कापुरा, पोस्ट कल्यानी, ग्राम पंचायत–रामपुर धाबाई,
जिला–करौली, पिन.–322243 **Mobile.9166978455**
www.gramgaurav.org **Info.gramgaurav@gmail.com**

CONTENTS

	ग्राम गौरव संस्थान सचिव कि कलम से	4
	संदेश	6
	From the Desk of Board Member	8
1	ग्राम गौरव संस्थान - एक परिचय	9
2	परियोजना क्षेत्र – डांग का संक्षिप्त परिचय	22
3	ग्राम गौरव संस्थान की कार्य प्रणाली	29
4	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	38
5	कृषि	53
6	शिक्षा	64
7	स्वास्थ्य	75
8	पशुपालन एवं बकरी पालन	77
9	महिला सशक्तिकरण	85
10	पर्यावरण	87
11	आपदा प्रबंधन	89
12	अभिसरण	91
	डांग क्षेत्र में प्रवेश एवं ग्राम गौरव संस्थान का उद्गम	93
	ग्राम गौरव संस्थान का बोर्ड	99
	संस्थान में कार्यरत् स्टाफ	102
	न्यूज गैलेरी	104
	संस्थान में पधारे अतिथिगण	109
	अवार्ड	113
	संकलन की कहानी – समुदाय की जुबानी	114

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

ग्राम गौरव संस्थान

विकास यात्रा

(2001-02 to 2019-20)

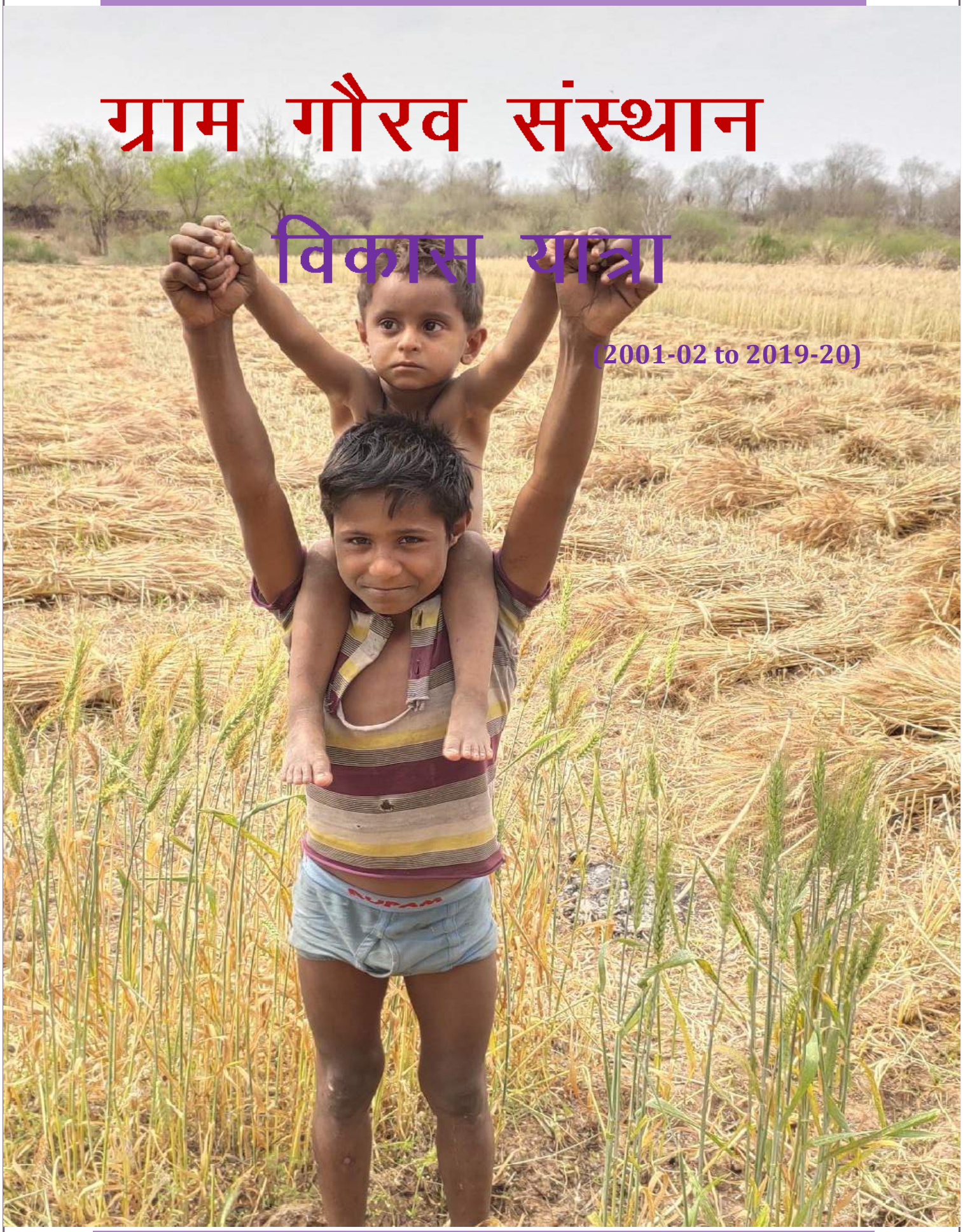

DAANG PREMIER GRASSROOT BASED ORGANISATION IN NRM

ग्राम गौरव संस्थान सचिव कि कलम से ।

ग्राम गौरव संस्थान के विकास कि यात्रा रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । इस अवसर पर मै संस्थान उद्गम के उन सभी प्रेरणा स्त्रोतो को मार्गदर्शन एवं संस्थान के कर्मठ कार्यकत्ताओ को तहे दिल से हार्दिक आभार करना चाहता हूँ जिन्होने इस दौरान आई कठिन से कठिन चुनौतियो कि परवाह न करते हुए डांग की ग्रामीण समाज की आजिविका सुदृढ करने में प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण एवं संर्वधन को समावेश करते हुए समर्पन भाव से जनतांत्रिक व्यवस्थाओ के माध्यम से ऐसे रचनात्मक कार्य किये ।

मुझे यह बताते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि संस्थान विगत 19 वर्षो में (2001–02 से 2019–20) लगभग 25 हजार परिवारो तक अपनी पहुच बना चुका है तथा 2011–12 से डांग क्षेत्र में लगभग 6 हजार ग्रामीण समुदाय परिवारो के साथ हम कार्य कर चुके है । संस्थान द्वारा बनाई गयी 624 जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ से लगभग 6 हजार परिवारो कि आजीविका सुदृढ होने से परिवारो के जीवन जीने के तौर तरीको में बदलाव आया है । ग्राम गौरव संस्थान द्वारा ग्रामीण समुदाय के सहयोग से कुल 624 जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण किया जा चुका है । इसके अलावा 47 जल संरक्षण संरचनाए संस्थान द्वारा ग्रामीण समुदाय को प्रेरित करके बिना किसी आर्थिक मदद के भी बनवायी गयी है। इन संरचनाओ के निर्माण से डांग क्षेत्र के लगभग 125 गांव में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। ये गांव अब कृषि, पशुपालन, पीने का पानी जैसी जीवन कि आधारभूत क्षेत्रो में आत्मनिर्भर हो चुके है । डांग के ऐसे सैकड़ो गांव है जहॉ पहले ग्रामवासी वर्ष भर के अनाज खरीद करने वास्ते नजदीक के बाजारो में जाकर लाते थे एवं पशु चारा वास्ते पशुओ के साथ ग्रीष्म ऋतु में पलायन कर जाते थे मुझे प्रसन्नता है कि आज डांग के सैकड़ो ग्रामीणो के लोग वर्ष भर का खाद्यान एवं पशुचारा पैदा कर रहे है । आज इन गांवो से खाद्यान, चारा, दूध बाजारो में जाने लगा है । शिक्षा, स्वास्थ्य व शारीरिक पोषण के क्षेत्रो में काफी सुधार हुआ है इस क्षेत्र के लोग खासकर महिलाए समाज कि मुख्य धारा में आगे कि और अग्रसर है ।

विगत कुछ वर्षो में संस्थान के पास आर्थिक संसाधनो कि सिमित उपलब्धता के बावजूद ग्राम गौरव संस्थान ने हार नही मानी तथा ग्राम संगठनो को जागृत करके उनकी क्षमता निर्माण का कार्य कर रही है जिससे हमारे ग्राम संगठन के लोग सरकारी योजनाओ व जनप्रतिनिधियो के सहयोग से राशि जुटाकर अपने गांव में जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण कर रहे है जिसमें संस्थान को काफी सफलता मिली है । विगत् वर्ष ग्राम गौरव संस्थान द्वारा धर्मपाल सतपाल फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से दो गांव में किये गये जल व मृदा संरक्षण कार्यो का स्वतंत्र संस्था द्वारा मुल्याकन किया गया जिसमें संस्थान के कार्यो कि भूरी–भूरी प्रशंसा कि गई ।

इस वर्ष में ग्राम संगठनो कि मांग पर संस्थान ने बकरी पालन में भी कार्य करना शुरू किया है जिसके अच्छे परिणाम सामने आये है । डांग के इन क्षेत्र में बदलाव में ग्राम गौरव संस्थान के साथ हमारे पोखर सैनिक, गाम संगठन, ग्राम विकास समिति, ग्राम पंचायत एवं प्रशासन का भी काफी योगदान रहा है ।

ग्राम गौरव संस्थान का मानना है कि संस्थान द्वारा डांग क्षेत्र कि आजिविका को सूदृढ करने का यह मॉडल जो संस्थान द्वारा पेश किया गया है इसी आधार पर राजस्थान सरकार कि विस्तृत परियोजना के साथ पूरे डांग क्षेत्र के 384 गांवो में इस तरह का मॉडल लागु करके विकास करना चाहिए ।

मै इस अवसर पर संस्था के तरफ से हमारे सलाहकार श्री योगेश गुप्ता का हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिनके मार्गदर्शन एवं सतत् प्रयासो के कारण ही ग्राम गौरव संस्थान कि इस 18 वर्ष कि विकास यात्रा को संकलन करके आपके सामने रखी जा रही है । साथ ही संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री राधाकिशनजी का एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री समयसिंह गुर्जर तथा एम.आई.एस सहायक श्री गणेश कड़वे जी का भी मै हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूँ । . जिन्होने दिन रात इस रिपोर्ट कि लिये आकड़े इकट्ठे करने व हिन्दी में रिर्पोट टाईप करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कि है । जिन्होने कठिन परिश्रम के साथ ग्राम गौरव संस्थान कि इस विकास यात्रा में सहयोग किया ।

मै आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि ग्राम गौरव संस्थान इसी प्रकार से डांग क्षेत्र के ग्रामीण समुदाय कि खुशहाली के लिए पूरे समर्पण, त्याग व कौशलता के साथ काम करती रहे ।

धन्यवाद

जगदीश गुर्जर

सचिव ग्राम गौरव संस्थान

संदेश

ग्राम गौरव संस्थान गठितकर्त्ता टीम 1990 के दशक से वर्तमान 2020 तक प्राकृतिक संसाधनो (जल. जंगल. जमीन,) का संरक्षण व संर्वधन ग्रामीण समुदाय कि सहभागिता से स्थानीय भू–सांस्कृतिक परिस्थितियो के समानान्तर ग्रामीण आजिविका को सूदृढ करने वास्ते प्रयासरत् है :–

संस्थान द्वारा ग्रामीण समुदाय कि आजिविका सूदृढ प्रबंधन में प्राकृतिक संसाधनो का संरक्षण व संवर्धन समुदाय कि पौराणिक उत्तम विधियो को उभारकर, समुदाय में जनतांत्रिक व्यवस्था कायम करके किया जाना तय है ।

जहॉ जिस कार्य से ग्रामीण समुदाय के साथ संपूर्ण मानवजाति का हित सदता हो जैविक विविधता का संपूर्ण समावेश हो उस कार्य को ग्रामीण समुदाय अपने स्तर पर लम्बे अरसे तक करता चला जाता है जहॉ आबाद गगन हो, छलकती धरती मॉ कहती दिखाई दे की पेड़ होगे, खेतो में मेड़ होगी, पानी होगा, लहलहाती फसल होगी, दुधारू जानवर होगे, कर्मशील समुदाय होगा, सजल जीवन होगा इस तरह बनने के लिए समुदाय में भावना पनपेगी तभी हम भावी पीढ़ी के उज्वल भविष्य कि असली तस्वीर देख पाऐगे ।

उपरोक्त विचारो के साथ शुरू किये गये कार्यो में ग्राम गौरव संस्थान टीम द्वारा ग्रामीण समुदाय कि सहभागिता से –

1. वर्षाजल, मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण किया जिनमें पोखर, पैगारा, धर्मताल, खेततलाई, कुण्डानिर्माण, अड़वाट
2. समुदाय में पौराणिक विधाओ का उभारकर देवबनी, काकड़बनी, औरण्य, रखतबनी, वनभूमि पर अवैध पेड़ो की कटाई रोकने के प्रयासो में चेतनात्मक कार्य किया ।

3. असंचित क्षेत्र को सिंचित क्षेत्र में बदलकर गुणवत्तापूर्ण खेती करने की दिशा में SRI & SWI व जैविक खाद जैसी विधाओ के सहारे कृषि उत्पादन बढ़ाने का प्रयास ।
4. गांव में नुक्कड सभा व ग्राम संगठन के माध्यम से ग्राम समुदाय के मानस पटल पर ग्रामीण आजिविका के सूदृढ प्रबंधन के उपरोक्त प्रयासो को रखना ।
5. जीवन शालाओ के माध्यम से बालको का शिक्षा से जुड़ाव ।
6. प्रसुता महिलाओ का जापा अस्पताल में करवाने के लिए संस्थान द्वारा प्रसुता महिलाओ को अस्पताल तक पहुचाने मे सहयोग करना ।
7. जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ को संरकारी योजनाओ से जोड़ने के लिए ग्राम पंचायत के प्लान में जुडवाने हेतु समुदाय को प्रेरित करने का प्रयास ।

यह कार्य संस्थान द्वारा अपने अनुभव के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर स्वयं सेवक तैयार करती है जिसमें ग्राम गौरव संस्थान अपेक्षित है कि स्वयं सेवक निम्न सिध्दातों के साथ समुदाय के साथ कार्य करे ।

1. स्वयं सेवक ग्रामीण समुदाय में प्रवेश से लेकर वापसी तक हर कार्य में पारदर्शिता रखेगा ।
2. हर कार्य कि लागत, लाभ, जिम्मेवारी का ग्राम संगठन के प्रत्येक सदस्य की जानकारी में देने का प्रयास ।
3. कार्य के दौरान कर्त्ताभाव समुदाय में पैदा करेगा स्वयं कर्त्ता भाव से दूर रहेगा ।
4. स्वयं सेवक नुक्कड सभा व ग्राम सभा के माध्यम से ग्राम विकास समिति का चयन कर समिति के माध्यम से ग्रामीण आजिविका के सूदृढ प्रबंधन के कार्यो को संचालित करेगा ।
5. समाज में पनपते नकारात्मक माहौल को सद्भावना के साथ सकारात्मक में बदलने का प्रयास ।

उपरोक्त कार्य हेतु ग्राम गौरव संस्थान हर विवेकिजन के सहयोग हेतु अपेक्षित है यही जीवन जीने कि शैली है ।

प्रेषक

राधाकिशन

ग्राम गौरव संस्थान

From the Desk of Board Member

The Gram Gaurav Sansthan team has been working in the Daang region of Karauli for about twenty years with a mission to sustain lives and livelihoods of the over 135 villages through rain water harvesting and revival of traditional knowledge of water conservation and natural resource management.

Daang region is spread from district Dholpur to Karauli to Sawai Madhopur in Rajasthan. This region is characterized by huge patches of dry and stony land, highly scattered and thinly populated settlement of villages and degraded forest lands.

The team decided to devote their life time to improve the water situation in this region which has resulted in round the year drinking water for households, livestock and irrigation for second crop in 135 villages impacting lives of over 25000 population. This is an outcome after having constructed about 622 water harvesting structures such as Pagara (cemented stone wall kind of structure in a series in a valley, Pokhar (earthen embankment) and Taal (pond). All these structures have been built by the community members using locally available materials.

One of the uniqueness of the team's engagement with the community is their ability to convince them for their contributions ranging from 33 percent to 50 percent of the total cost of the structure which actually helped the team to reach out to more villages and the community. This also meant that Rs 100 given by the donor agency was converted upto Rs 150 by having a well-established trust among the communities.

In last year the team also ventured into identifying the locally suitable livelihood interventions. Goat keeping was one of those activities. The organization is still working towards coming out with well-defined interventions along with outcome indicators for this activity. I am sure by the next year, more and more families will be covered in this particular livelihood which has got great potential in this region.

The organization also focused on streamlining its management, adding new members to its board, and identifying newer opportunities with like-minded agencies and organizations.

I would also like to extend gratitude to all our partners who has been supporting us, guiding us and keep motivating us to move forward towards the accomplishment of our mission.

Sanjay Sharma

Executive Director

Manjari Foundation

1. ग्राम गौरव संस्थान - एक परिचय

ग्राम गौरव संस्थान एक गैर सरकारी संगठन है जो राजस्थान सहकारी समिति अधिनियम 1958 के तहत पंजीकृत है ग्राम गौरव संस्थान का गठन 19.12.2011 में हुआ था । इस संगठन का निर्माण 1980 से ही ग्रामीण विकास एवं सामाजिक सुधार के क्षेत्र में कार्यरत् अनुभवी, कर्मठ एवं जुझारू लोगो के समूहो द्वारा किया गया । ग्राम गौरव संस्थान **गांधीयन सिध्दातो** का पालन करने वाला संगठन है । गांधीयन सिध्दान्तो का अनुपालन करते हुए ग्राम गौरव संस्थान गांवो में उपलब्ध स्थानीय संसाधनो का उच्चतम् उपयोग करते हुए गांव को स्वावलंबन बनाने के लिए प्रतिबंध्द है । ग्राम गौरव संस्थान 2011–12 से डांग क्षेत्र के 84 गांवो मे लगभग 5500 परिवारो के साथ कार्य कर रहा ळे ।

पुष्ठभूमि (Origin) :–

ग्राम गौरव संस्थान कार्यकत्ताओ के द्वारा वर्ष 2001–02 से 2010–11 तक राजीव गांधी फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से राजस्थान के 09 जिलो जमवारामगढ (जयपुर), अलवर, दौसा, करौली, सवाई माधोपुर, पाली, बीकानेर, धौलपुर, बाडमेंर में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के कार्यो को ग्रामीण समुदाय कि सक्रिय सहभागिता से क्रियान्वित करने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई । इस समूह विशेष ने ग्रामीणो कि आजिविका सूदृढ हो सके इसके लिए ग्रामीणो के साथ सामाजिक एवं भौगालिक अनुसंधान करके निकाले गये उपायो के अनुरूप प्राकृतिक संसाधनो के संर्वधन व संरक्षण में ग्रामीण संमाज की पौराणिक उत्तम विधियो व आधुनिक तकनीकि को साझा करते हुए समाज की सहभागिता से वर्षाजल व मृदा संरक्षण व सर्वधन (जोहड़, नाड़ी, एनिकट, तालाब, टांके, खेततलाई, ताल, पोखर, पैगारा, अड़वाट) एवं पर्यावरण संरक्षण के कार्यो से जिस समुदाय के साथ काम किया उस समुदाय कि वर्ष भर कि खाद्य सुरक्षा व पशुओ को चारे कि सुनिश्चितता हुई है। इस कर्मठ एवं जुझारू समूह को समाज उत्थान में समर्पण भाव जागृत करने के लिए समय–समय पर बुध्दिजीवी व ग्रामीण विकास में प्रख्यात लोगो द्वारा विभिन्न तकनिकी के गुर भी सिखाये गये । वर्ष 2008 में राजीव गांधी फाउण्डेंशन कार्यकरणी द्वारा राजस्थान में चल रहे प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण व संवर्धन से अलग हटकर शिक्षा के क्षेत्र मे मुख्य प्रकाश डालने हेतु निर्णय लिया गया एवं राजस्थान में कार्यरत् कार्यकत्ताओ को उक्त निर्णय से अवगत कराया । कार्यरत् कार्यकत्ताओ द्वारा डांग समुदाय के साथ शिक्षा के कार्य को आगे बढ़ाते हुए समय–समय पर प्राकृतिक

ग्राम गौरव संस्थान का जन्म **19 दिसम्बर 2011** में राजीव गांधी फाउण्डेशन में कार्यरत् कार्यकत्ताओ द्वारा डांग क्षेत्र में प्राकृतिक प्रबंधन के क्षेत्र में कार्य कर डांग क्षेत्र के गरीब लोगो की आजिविका सुदृढ करने के उद्देश्य से हुआ

संसाधनो के संरक्षण व संर्वधन पर सतत् संवाद रखा समुदाय के साथ संवाद में निकलकर आया कि डांग समुदाय की आजिविका के सूदृढ प्रबंधन में वर्षाजल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ कि महती आवश्यकता है इसी विचार के साथ राजीव गांधी फाउण्डेशन की कार्यकरणी एवं कार्यरत् कार्यकत्ताओ के बीच आपसी संवाद उपरान्त निर्णय लिया गया कि डांग समुदाय कि आजिविका के सूदृढ प्रबंधन के कार्य को सतत् चलाने के लिए अलग से एक मंच हो जो इस काम को भविष्य में लंबे समय तक कर सके इसी विचार के साथ ग्राम गौरव संस्थान का जन्म हुआ । 2011–12 से ग्राम गौरव संस्थान व इससे जुडे बुध्दिजीवियो द्वारा मंथन करने तथा पूर्व में किये उत्कृष्ट कार्यो को अविरलता प्रदान करने के लिए कार्यकर्त्ता डांग क्षेत्र में विशेष अपने काम की सघनता को लेकर प्रयासरत् है ।

संकल्पना (Concept) :–

ग्राम गौरव संस्थान कि संकल्पना समाज में स्वालंबन कि आधारशिला को पुनर्जीवित करते हुए स्थानीय भू–सांस्कृतिक परिस्थितियो के समानान्तर वहॉ कि पौराणिक उत्तम विधिया जिनको धारण करने से ग्रामीण समुदाय कि सक्रिय सहभागिता से ग्रामीण आजीविका का स्थायी सुदृढ प्रबंधन ।

लक्ष्य (Goal) :–

डांग क्षेत्र के 384 गांव के 25000 परिवारो की सतत् रूप से सूदृढ आजिविका विकास ।

विजन (Vision) :–

ग्रामीण समुदाय कि सक्रिय सहभागिता से सशक्त ग्राम संगठन द्वारा डांग क्षेत्र के ग्रामवासियो कि सतत् एवं सुदृढ आजिविका विकास – डांग क्षेत्र के गांव में जहॉ स्वयं गांव के लोगो ने अपने संगठन के माध्यम से जल संरक्षण कर अपने लिए वर्ष पर्यन्त के लिए खाद्यान उपलब्ध है, पशुओ कि लिए पर्याप्त पानी व चारा उपलब्ध है व पीने के स्वच्छ जल है ।

लक्ष्य (Mission) :–

डांग क्षेत्र का प्रत्येक ग्रामवासी उच्च गुणवत्ता कि जिन्दगी को खुशीपूर्वक एवं गरिमा के साथ व्यतित करे।

- गांव के अंदर सशक्त ग्राम संगठनो का गठन एवं उचित वातावरण निर्माण ।
- ग्रामीण समुदाय कि सक्रिय सहभागिता द्वारा गाव मे उपलब्ध वर्षा के जल का संरक्षण एवं सर्वधन एवं उनका समुचित उपयोग ।
- डांग क्षेत्र के ग्रामीण समुदाय को समाज की मुख्य धारा में लाने वाले प्रयासो के लिए प्रेरित करना ।

उद्देश्य (Objectives) :–

- ग्राम वासियो द्वारा ग्राम संगठन के माध्यम से गांव में उपलब्ध वर्षा जल संगहन की जगहो को चिन्हीकरण कर उनकी योजना बनाकर उसे परियोजना अथवा जनसहयोग से निर्माण करना ।
- सरकार कि विभिन्न कल्यानकारी योजना के बारे मे जागृति एवं गावों तक उसका अधिकतम् लाभ हेतु प्रयास ।
- गांव के लोगो को प्राकृतिक संसाधन संरक्षण हेतु प्रेरित करना ।
- गांव के जागरूक समाज की सेवा करने वाले लोगो का क्षमतावर्धन एवं उन्हे अच्छे समाज के विकास हेतु तैयार करना ।
- आपदा प्रबंधन अथवा जरूरत के समय गांव के लोगो की मदद करना ।
- पर्यावरण संरक्षण हेतु पौराणिक परंम्पराओ को उभारते हुए देवबनियो में वृक्षारोपण आदि कि चेतना जागृत करना ।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए समाज को मुख्य धारा में जोड़ने हेतु ग्राम संगठनो को प्रेरित करना।
- स्थानीय जलवायु, भौगोलिक परिस्थिति एवं जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए ग्रामवासियो को कृषि एवं पशुपालन की उन्नत विधियो को तकनीकियो के बारे में जागृत करते हुए स्थानीय व टिकाऊ आजिविका हेतु प्रयासरत् होना ।

संस्था का विश्वास एवं मूल्य **(Our Belief & Core Values)**

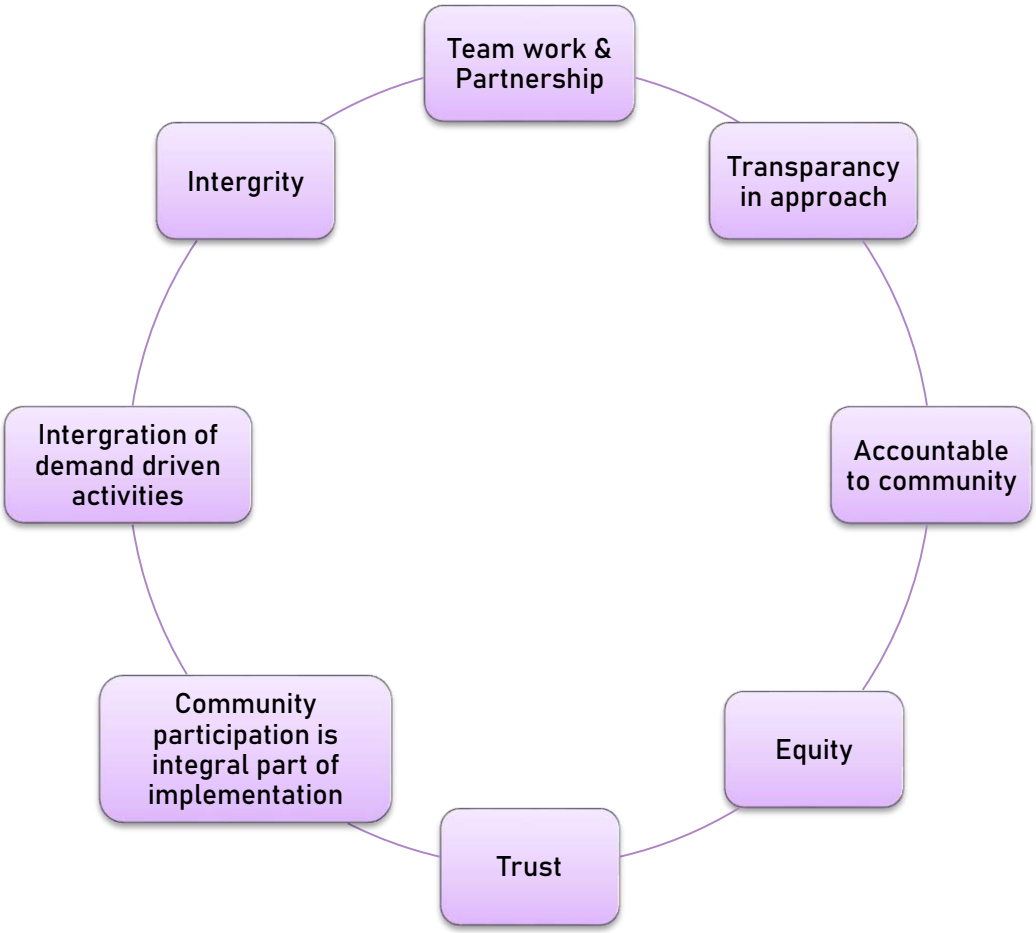

हमारे मजबूत पक्ष – **(Our Strength) :-**

- ❖ डांग क्षेत्र के 130 गांव में संस्था की मजबूत पहुच
- ❖ संस्था की मजबूत एवं स्वच्छ छबि
- ❖ संस्था के कार्यकर्त्ता जमीन से जुडे हुए लोग (Grass root level)
- ❖ प्राकृतिक संसाधन सरक्षण एवं सर्वधन में 20–30 वर्ष का अनुभव
- ❖ डांग क्षेत्र में विगत् 20 वर्षो से कार्यरत्
- ❖ डांगवासियो का संस्थान पर अट्टू विश्वास एवं आपसी समन्वय
- ❖ डांग क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियो की संपूर्ण जानकारी
- ❖ पारंपरिक व वैज्ञानिक तकनीकि के उचित समन्वय द्वारा पैगारा, पोखर, धर्मताल का निर्माण

रणनीति – (Strategy & Approach):-

- मृदा एवं जल संरक्षण की पौराणिक एवं प्राचीन विधियो व वैज्ञानिक विधियो का उचित संगम करते हुए सतत् एवं टिकाऊ आजिविका विकास हेतु जल संरक्षण कार्य
- स्थानीय लोगो का जल संरक्षण व पर्यावरण के क्षेत्र में क्षमता विकास
- ग्राम स्तरीय संगठन कि प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में क्षमता विकास
- ग्राम स्तरीय संगठन व हितग्राही कि जिम्मेदारी सुनिश्चित करना
- ग्राम गौरव संस्थान की सहजकर्त्ता एवं उत्प्रेरक की भूमिका
- ग्रामीण समुदाय, जनप्रतिनिधि एवं सरकार कि विभिन्न योजनाओ के सहयोग से मृदा व जल संरक्षण के कार्य सुनिश्चित करना
- सामाजिक, वित्तिय एवं जैव पारिस्थितिकी संतुलन सुनिश्चित करना
- परियोजना के सभी कार्यो में पारदर्शिता सुनिश्चित करना
- शोषित व अतिगरीब लोगो पर विशेष ध्यान

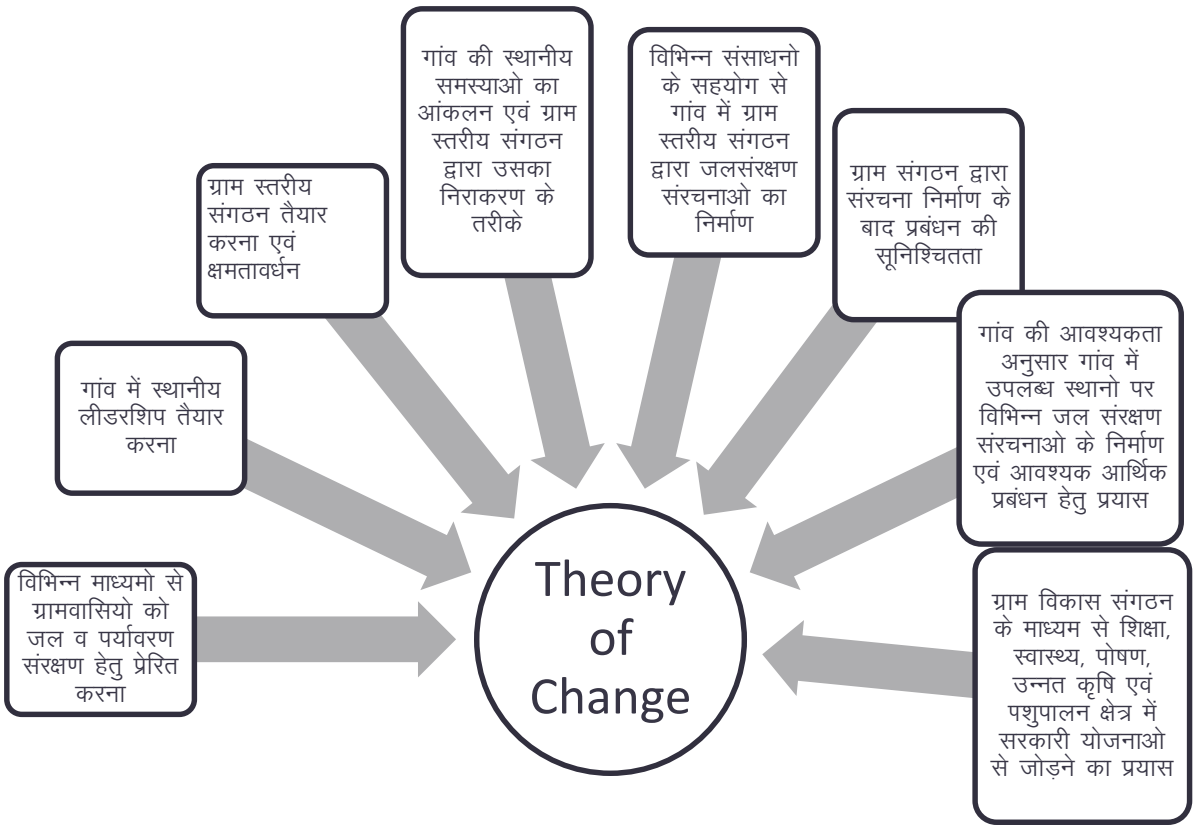

हमारे विषयगत तंत्र (Thematic Areas) :–

- संस्थागत निर्माण एवं विकास
- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन - मृदा व जल संरक्षण
- शिक्षा
- स्वास्थ्य
- पर्यावरण
- आजिविका विकास - कृषि व पशुपालन
- प्राकृतिक आपदा प्रबंधन

हमारी पहुच (Our outreach) :–

ग्राम संगठन- 169

परिवार- 8500

जनसंख्या- 42250

राज्य-3

जिल. 13

ब्लाक-18

गांव-224

संस्थागत निर्माण एवं विकास	• 169 – ग्राम संगठन • 169 – ग्राम विकास समिति • 79 – स्वयं सहायता समूह • 40 – पोखर सैनिक
प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	• 622 – जल संरक्षण सरंचनाए • 3180 – हैक्टर क्षेत्र • 5250 – परिवार
शिक्षा	• 825 – बालक एवं बालिकाए • 660 – परिवार • 35 – जीवन शाला संचालक
स्वास्थ्य	• 165 – सुरक्षित प्रसव 225 – बच्चो का टीकाकरण 395 – परिवार • 10 – दाई
पर्यावरण	• 72 – गांव • 650 – परिवार
आजिविका	• 72 – गांव 4100 – परिवार • 20 – पशुसखी
प्राकृतिक आपदा प्रबंधन	• 02 – राज्य 65 – गांव 1500 – परिवार

ग्राम गौरव संस्थान परिसर :-

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा डांग क्षेत्र में ग्रामीण आजीविका के मुख्य साधनो को (कृषि एवं पशुपालन) को सशक्त बनाने हेतु विगत् 19 वर्षो से कार्य किया जा रहा है । जिसको देखने व समझने के लिए विभिन्न क्षेत्रो से बुध्दिजीवी, विचारक, सरकारी अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं डांग के ग्रामीण समुदाय के लोगो का आना होता है। संस्थान को भी समय–समय पर संगोष्ठी, संवाद, मिटींग एवं प्रशिक्षण आयोजित करने होते है ऐसी स्थिति में संस्थान को आवश्यकता हुई कि संस्थान का अपना एक केम्पस हो जहॉ पर संस्थान के आफिस संबंधित सारे कार्य संम्पादित किये जा सके साथ में कार्यकत्ताओ का कार्य क्षेत्र से आने पर ठहराव हो सके ।

संस्थान द्वारा यह बात संस्थान के बोर्ड में रखी गई एवं संस्थान को आर्थिक सहयोग करने वाली राजीव गांधी फाउण्डेशन से केम्पस हेतु वित्तिय सहायता लेने कि गुहार लगाई । अथक प्रयासो के बाद संस्थान को करौली जिला मुख्यालय से 9 कि.मी. दूर कैलादेवी रोड़ पर पंन्द्रह बिस्वाह (एयर) भूमि केम्पस बनाने हेतु चिन्हीत कर खरीदी गई इस भूमि पर बनने वाली बिल्डिग का नक्शा तैयार किया गया । संस्थान द्वारा परिसर बनाते वक्त इस बात का खासा ध्यान रखा गया कि संस्थान में खुला वातावरण एवं ग्रामीण परिवेश जैसा वातावरण मिले साथ में आने वाले आगंतुको को आवश्यक सारी सुविधाए मिले यह भी ध्यान रखा गया । संस्थान ने केम्पस बनाते समय आने वाले विजिटरो को ध्यान में रखते हुए संस्था की बिल्डिग तैयार जिसमें निम्न सुविधाए मौजूद है।

प्रशिक्षण केन्द्र – संस्थान परिसर में 50 लोगो को प्रशिक्षण देने वास्ते मिटींग होल है एवं उनको ठहरने की सुविधाए उपलब्ध है।

अतिथी गृह – संस्थान परिसर में अतिथी गृह है जिसमें 2 बडे कमरे है, 10 अतिथीयो के लिए रूकने की सूविधा है साथ में लेट+बाथ अटैच है

रसोई – संस्थान के पास बड़ी रसोई है जिसकी लंम्बाई चौडाई 20X15 फिट जिसमें 100 लोगो को खाना बनाकर खिलाया जा सकता है।

भोजनायालय – संस्थान के पास छत वाला भोजनायालय है जिसमें 40 लोग बैठकर भोजन कर सकते है ।

मैदान – संस्थान के केम्पस में छोटा से खेल का मैदान भी है शाम को प्रागंम में घुमा व खेला जा सकता है।

.शौचालय +बाथरूम	आफिस	कामन हॉल	कमरे –	
संस्थान केम्पस में 5 शौचालय, 5 बाथरूम है ।	संस्थान के पास स्वयं का आफिस है जिसमें लेखा अधिकारी व अन्य सारे स्टाफगण बैठकर सारे लेखे–जोखे का कार्य करते है।	संस्थान के केम्पस में 2 कोमन हॉल है जिनमें 20 जन रात्रि विश्राम कर सकते है । बड़े हॉल है जिसमें डोरमेट्री सुविधा उपलब्ध है ।	संस्थान परिसर में 4 ऐसे कमरे है जिनमें हर कमरे में 3 कार्यकर्त्ता विश्राम कर सकते है।	संस्थान केम्पस में आयुर्वेदिक जडिबुटियो में काम आने वाली विभिन्न तरह के पेड़ है जिनमें मुख्यतः नीम गिलोह, हरजुडी, महवा गाडर, ग्वारपाटा, एलोविरा, श्यामतुलसास, आम, शहतुत, जामुन, करौजा, नीबु, मोगरा, गुलाब, कटहल बील पत्र, बेर के पेड़, बॉस, सागवान संस्थान केम्पस में है ।

GLIMPSES OF GGS CAMPUS

Campus spread in 0.9 Ha area –Kitchen at right side with mess facility and training room at left side

Green and Cool environment

Guest House and double occupancy rooms for participants

Offifce and Staff Quarter

मिलन केन्द्र (फिल्ड आफिस) :–

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा अपने कार्य क्षेत्र को भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार चार भागों में विभाजित करके कार्य को संचालित करने हेतु परियोजना क्षेत्र में ही 4 कार्यालय स्थापित किये गए है जिनको मिलन केन्द्र के नाम से जाना जाता है ।

मिलन केन्द्र का उद्देश्य – परियोजना के कार्यकर्त्ता अधिकतम् दो से तीन दिनो में मिलन केन्द्र पर उपस्थित रहता है तथा वही पर ग्राम संगठन व ग्रामीण समुदाय के साथ मिलकर परियोजना के कार्यो का निपटारा करता है। संस्था के चार मिलन केन्द्र जिला–करौली में निम्न प्रकार है।

1- मिलन केन्द्र 1 – ग्राम खिजूरा, ग्राम पंचायत–निभैरा, तहसील–सपोटरा
2. मिलन केन्द्र 2 – गजसिंहपुरा (आमरेकी), ग्राम पंचायत–राहिर, तहसील–मण्डरायल
3. मिलन केन्द्र 3 – पाटोर (श्यामपुर), पंचायत–श्यामपुर तहसील–मण्डरायल
4. मिलन केन्द्र 4 – मासलपुर, जिला– करौली

उपरोक्त चार मिलन केन्द्रो में से क्रमांक एक मिलन केन्द्र ग्रामीण संगठन द्वारा संस्था को उपलब्ध कराया गया है। क्रमांक दो एवं तीन मिलन केन्द्र संस्था के स्वयं के भवन है तथा क्रमांक चार किराये के भवन में संचालित किया जा रहा है।

मिलन केन्द्र – गजसिंहपुरा

मिलन केन्द्र – पाटोर (श्यामपुर)

ग्राम गौरव संस्थान की संक्षिप्त जानकारी ।	
1. संस्था का नाम	ग्राम गौरव संस्थान
2. संस्था का स्थायी पता	बिरहटी, सुक्कापुरा, पोस्ट कल्यानी, ग्राम पंचायत–रामपुर धाबाई, जिला–करौली, पिन.–322243
3. संपर्क व्यक्ति का नाम	जगदीश गुर्जर 9166978455
4. ई. मेल	**Info.gramgaurav@gmail.com**
5. वेवसाईट	**www.gramgaurav.org**
6. पंजीयन क्रमांक	*784 jaipur/2011-12*
7. पंजीयन अधिनियम	राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 (राजस्थान अधिनियम संख्या 28, 1958) *2011-12*
8. पंजीयन तिथी	19 दिसम्बर 2011
9. आयकर छूट प्रमाण पत्र	*80G/56/06/2012-13/488 dt. 26-06-12 and 12 A (A)/56/06/2012-13/487 dt. 26-06-12*
10. पेन	**AABTG7119B**
11. कुल कार्यकारणी स्टाफ	09

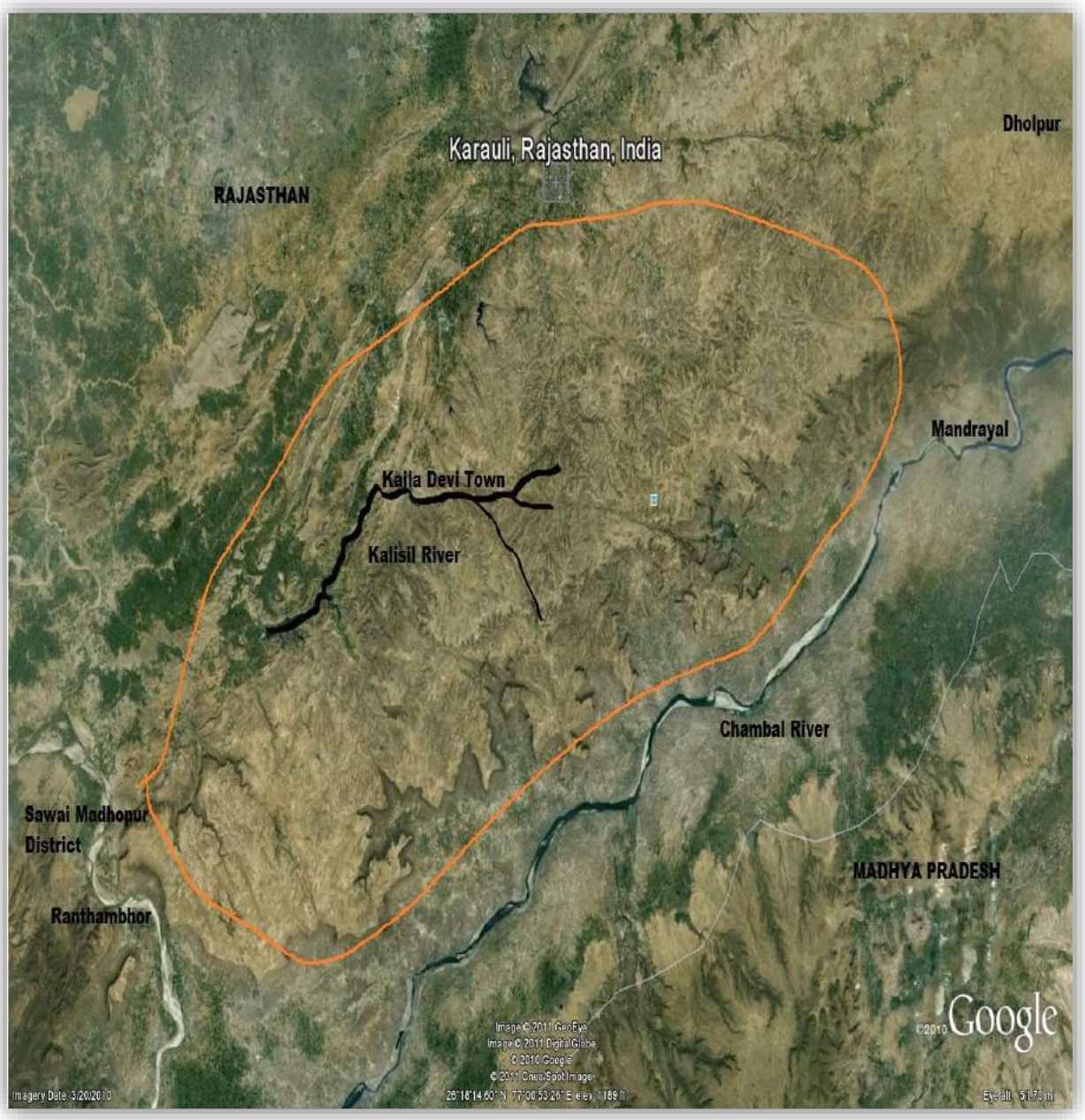

2. परियोजना क्षेत्र – डांग का संक्षिप्त परिचय

डांग अर्थात् पर्वतीय भू–भाग, जंगल, उबड़–खाबड़ ढालू क्षेत्र, गहरे–गहरे नाले, छितरे–छितरे गांव,

डांग क्षेत्र में राजस्थान के 08 जिलो (सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर, बारा, झालावाड़, भरतपुर, कोटा, बूंदी) की 26 पंचायत समिति एवं 394 ग्राम पंचायतो में फैला है पर इसमें करौली व सवाईमाधोपुर की खण्डार, सपोटरा, मण्डरायल, करौली, मासलपुर ब्लाक का डांग क्षेत्र अत्यन्त ही कठिन व पिछड़ा है। राज्य सरकार ने भी वर्ष 2003–04 में डांग क्षेत्र को समाज कि मुख्य धारा से जोड़ने वास्ते डांग विकास कार्यक्रम नाम से विशेष परियोजना शुरू की, परंतु इसका राजनैतिक उदासीनता के चलते कोई विशेष प्रभाव नही पड़ा ।

डांग की पूर्व दिशा में डांग के सामानान्तर लम्बाई में चंम्बल नदी बहती है चंबल नदी के आस–पास के सारे बीहड व रिवाईन क्षेत्र डांग क्षेत्र से ही आते है डांग व चंबल नदी के बीच की दुरी को बीहड के नाम से जाना जाता है डांग के बहुत से क्षेत्र को जोड़ने वाली अरावली पर्वत की श्रृंखलाओ में जिसकी लंबाई दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व में 160 कि.मी. सवाई माधोपुर की खंडार से धौलपुर की बाडी बसेडी तक स्थित है।

डांग का पौराणिक इतिहास ।

डांग का अतित जब डांग के बुर्जगो से सुनते है तो डांग क्षेत्र दूध, दही, धान का स्थान रहा है जनश्रृतियो में डांग को छोटे ब्रज के नाम से भी नवाजा जाता था । डांग के गायन परंपराओं के अनुसार ब्रज जैसे अनेकों राग के गीत गाए जाते हैं आज भी पशुपालक अपने खेत खिरक में प्रभाती गाते हैं खेतों में काम करते हुए लेंगी, फाल्गुन में रसिया, ग्रीष्म ऋतु में कन्हैया एवं वर्षा ऋतु में गोठ बखान आदि गाते हैं डांग के बुजुर्गों के अनुसार डांग की चैन की वंशी करीब आधी शताब्दी पूर्व से ही थमने लगी डांग में बरसाती दिन की कमी और उजड़ते जंगलों में डांगवासियों को पलायन, बेरोजगारी और कुपोषण की झोली में डाल दिया . **डांग की खांस बाते** ।

- ❖ अतिथी के आने पर डांग क्षेत्र का समुदाय खड़े होकर सिर छुकाकर अभिवादन करने की परंपरा है ।
- ❖ त्योहारो व अतिथी के आने पर अनेको प्रकार के व्यजनो को सात्विक तरीके से तैयार किया जाता है और नाना प्रकार से प्यार भरे लहजे से परोसा जाता है ।
- ❖ बेटा या बेटी के ससुर के आने पर हल्दी लगाई जाती है एवं महिलाओ अतिथी को रिझाने हेतु गाड़ी (मनुवार गीत) गाई जाती है।
- ❖ खरको में प्रातः प्रभाती गाई जाती है।
- ❖ महिलाए छाछ करते, आटा पिसते हुए भजनो के साथ–साथ अपने बालको को संस्कारित करने के लिए गीत गाती है ।
- ❖ फागोत्सव में गांव की महिलाए ऑख मिचौली के खेल खेलती है

PROJECT AREA OF GGS

RAJASTHAN IN INDIA

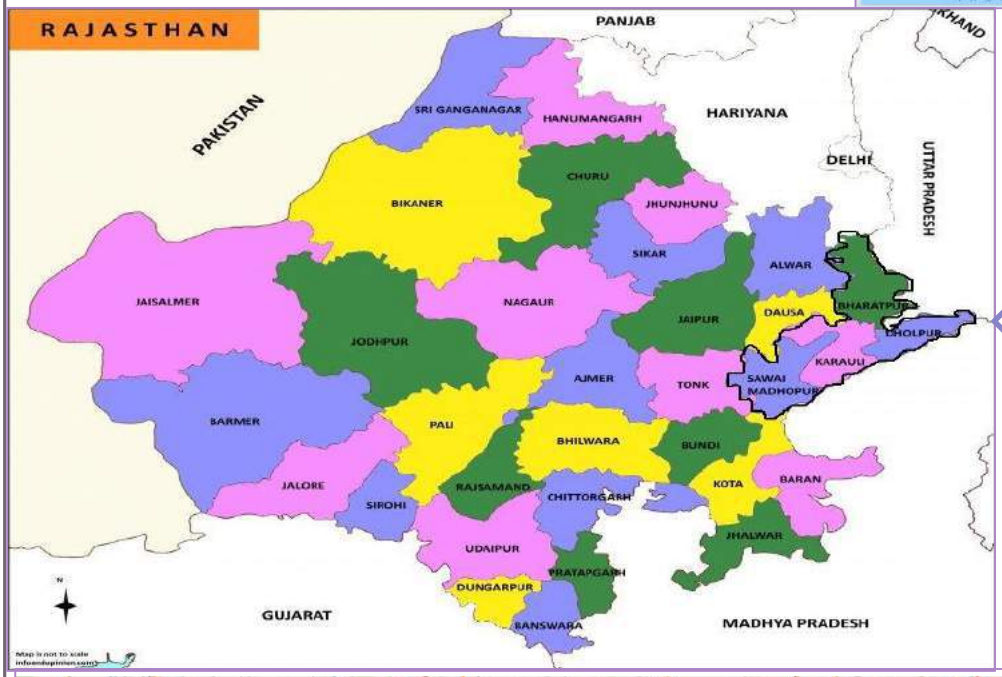

Karauli, Dholpur, Sawai Madhopur and Bharatpur districts of Rajasthan

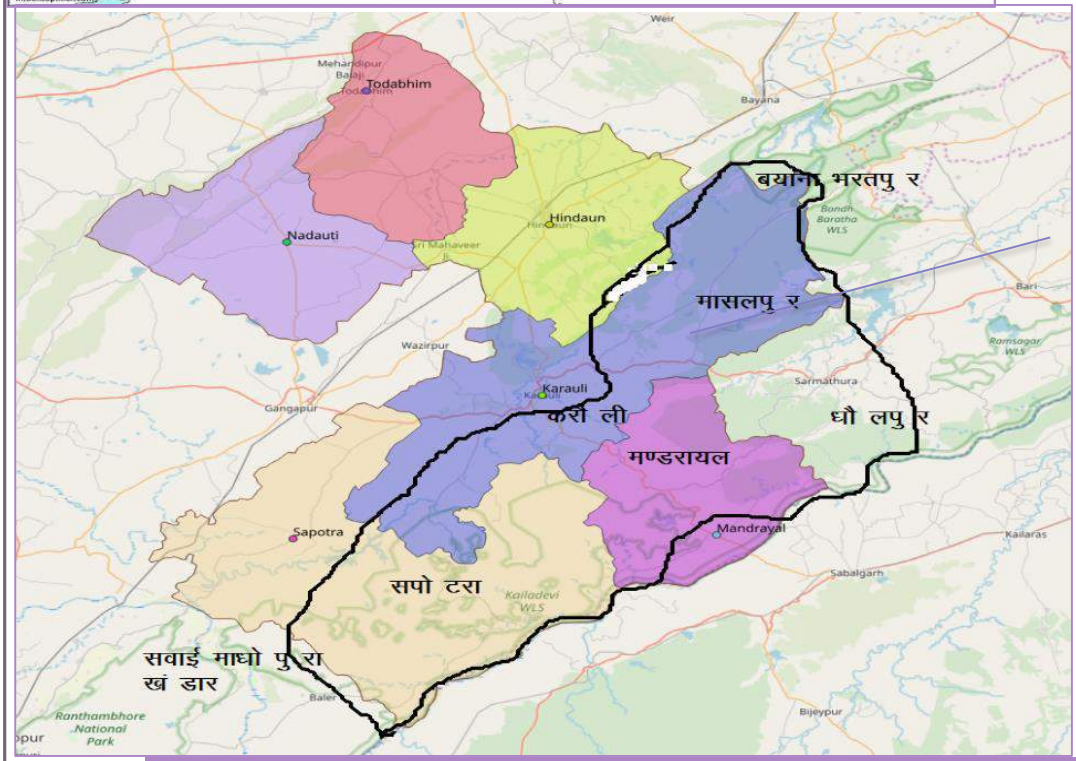

Mandrayal, Sapotara, Karauli, Sarmathura, Bari Masalpur, Khandar and Bayana block of Daang area

पहाड़ी व जटिल जगह होने के कारण विकास की एजेंसियों ने भी डांग को नजरअंदाज किया । दुर्भाग्यवश जरायम प्रवृत्ति के लोगों की शरण स्थली बनती गई जहां सब कोई को भी भय सताता है । ग्राम गौरव संस्थान के प्रणेताओ ने इस दुर्गम क्षेत्र को अपने कर्म स्थली का विशेष स्थान तय करके डांग के दुर्गम क्षेत्रों में बसे ग्रामीणों के साथ पदयात्राओं के दौरान पहुंच–पहुंचकर यहां की समस्याओं का समाधान ढूंढ निकाले यहा कि बेरोजगारी खाद्यान्न आपूर्ति के लिए जो समाज व किसी भी यहां के हितैशी सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं को जो करना होगा वह प्राकृतिक संसाधनों में वर्षा जल, वन व मृदा संरक्षण कार्य करने होगे । सामाजिक संरचनाओ का अतीत व वर्तमान के अनुसार इस कार्य में समाज को इनके संर्वधन व संरक्षण में संस्कारवान् होते हुए स्थायी व स्वावलंबन कि राह तय करेगा । विगत वर्षो में डांग क्षेत्र के विकास हेतु प्रयास हुए है पर बिना किसी सतत् रूप से व्यवस्थित योजना व इच्छा शक्ति के अभाव के कारण डांग क्षेत्र का विकास नही हो पाया ।

नीति आयोग ने 5 विषयो के 49 संकेतो के आधार पर पूरे देश मे से 115 महत्वाकाक्षी जिलो का चयन किया जो अति पिछडे है । इन जिलो में स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा, कृषि, जल संसाधन, वित्तीय समावेश एवं कौशल विकास व बुनियादी ढॉचे की स्थिति अपेक्षाकृत दयनीय है इन्ही मे से राजस्थान के 5 जिले (करौली, धौलपुर, बारा, जैसलमेर, सिरोही) इसमें शामिल किये गये है जिसमें एक करौली जिला भी है।

ग्राम गौरव संस्थान ने डांग के 4 जिलो (करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर) की 8 पंचायत समिति (मण्डरायल, मासलपुर, सपोटरा, करौली खण्डार, सरमथुरा, बाड़ी, बयाना) को अपनी कर्म स्थली बनाया। संस्थान द्वारा अपने कार्य क्षेत्र को 4 संकुलो (कुरकामठ, गजसिंहपुरा, श्यामपुर, मासलपुर) में विभाजित किया ।

डांग क्षेत्र के पिछड़ेपन् के मुख्य कारक :–

- ❖ लगभग 90 प्रतिशत परिवारो कि आजिविका कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है
- ❖ लगभग 70 प्रतिशत से ज्यादा क्षेत्र वर्षा आधारित खेती (असिचिंत) पर निर्भर है
- ❖ 60 से 70 प्रतिशत किसान आज भी 12 महिनो को खाद्यान पैदा नही कर पाते है
- ❖ डांग क्षेत्र की 20 से 25 प्रतिशत आबादी खनन क्षेत्र में श्रमिक के रूप में कार्य कर अपनी आजिविका चला रही है
- ❖ खनन में कार्यरत् लोग सिलोकोसिस बीमारी से ग्रसित हो जाते है
- ❖ भूगर्भ में चट्टान होने के कारण पानी 30–35 फिट तक ही उपलब्ध है
- ❖ धीरे–धीरे जंगलात् क्षेत्र में कमी आ रही है
- ❖ पीने के पानी के लिए महिलाओ को काफी दूर तक जाना पड़ता है

- ❖ कम बरसात अथवा अकाल की स्थिति में गर्मी के दिनो में पशुओ सहित पलायन करते है
- ❖ रोजगार के अभाव में गांव के 16 से 35 वर्ष के अधिकांश युवक बाहर रोजगार हेतु पलायन कर जाते है।
- ❖ मिट्टी के कटाव की गंभीर समस्या है।
- ❖ गांव वालो को खेती व पशुपालन की उन्नत तकनीकि के बारे में जानकारी नही है
- ❖ शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधा गांव व आसपास में उपलब्ध नही है
- ❖ ग्रामवासियो को जनकल्यानकारी योजनाओ की जानकारी का स्तर बहुत नीचे है
- ❖ गांव में आधारभूत ढांचो बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क एवं पोषण की स्थिति अत्यन्त दयनीय है
- ❖ किसी भी राज्य सरकार का डांग क्षेत्र के विकास के प्रति इच्छा शक्ति का अभाव
- ❖ जलवायु परिवर्तन के कारण लगातार पड़ने वाले अकाल कि स्थिति

उपरोक्त कारको को ध्यान में रखते हुए एवं ग्राम गौरव संस्थान के डांग क्षेत्र में पूर्व के अनुभव के आधार पर डांग क्षेत्र में जल एवं मृदा संरक्षण संरचना निर्माण करके डांग वासियो कि सूदृढ आजिविका करने कि रणनीति पर कार्य करने का निर्णय लिया ।

डांग की पथरीली व ढलाऊ भूमि

डांग की वनस्पति डांग की महिलाए व पीने का पानी का प्रबंध करने हेतु

डांग के वृध्दजन

डांग के बालक व देश का भविष्य

पोखर अथवा ताल के कारण डांग कि पथरीली भूमि में आये बदलाव

गोबर के कंण्डे रखने का स्थान

डांग का घर

3. ग्राम गौरव संस्थान की कार्य प्रणाली

ग्राम गौरव संस्थान की कार्यप्रणाली के विभिन्न चरणो का विस्तृत वर्णन इस अध्याय में किया गया है प्रथम चरण गांव में प्रवेश से लेकर अंतिम चरण गांव की जल एवं मृदा संरक्षण संरचना को ग्राम संगठन का सुपुर्द करने तक की प्रक्रिया की चर्चा इस अध्याय मे की गई है ।

गांव में प्रवेश के दो तरीके होते हैं

(1) पदयात्रा (2) रिश्तेदारों के माध्यम से

(1) पदयात्रा के दौरान कार्यकर्ता जब किसी नये गांव में पहुंचता है तो गांव में जगह–जगह नुक्कड़ बैठक करके अपने आने के उद्देश्य से ग्रामीणों को अवगत कराता है गांव वालों को अपने काम की जानकारी के लिए उन सब गांव की पहचान कराते हुए समाज के साथ मिलकर उनके साथ होने वाले कार्यों के प्रभाव की विविधता को प्रचारित करता है

(2) रिश्तेदारों के माध्यम से – जिन गांवो में कार्य हो रहा होता है उसके बदलाव की सूचना गांव के रिश्तेदार गांव में पहुंचती है गांव की गुणवत्ता, पारदर्शिता से सहित सारी उत्कृष्टतावान् पहल की सूचना ,रिश्तेदार के गांव तक पहुच जाती है कई बार हजारों की संख्या में गांव में समारोह के समय रिश्तेदारों का आगमन होने पर भी कार्यों को देखते समझते हैं और अपने रिश्तेदारों के माध्यम से कार्यकर्ताओं को अपने गांव में आकर सहयोग करने के लिए आमंत्रित करते हैं ।

प्रक्रिया :– गांव में कार्यकर्ता गांव की तासीर, व्यवहार को समझने के लिए गांव में जगह–जगह नुक्कड़ बैठकों में गांव की समस्याओं पर चर्चा करते हैं । इसी संवाद के दौरान गाव केक्षमतावान्युवाओ की पहचान कर चिन्हीत किया जाता है जो स्वयं सेवक के रूप में संस्था के साथ जुडकर ग्राम विकास की मुहीम को बढ़ाने में मदद करते है

नुक्कड बैठको में लोगों में ग्राम संगठन के गठन का वातावरण तैयार करते हैं जिन कारणो से गांव के संसाधनो का ह्रास हुआ है उन कारणो के तह तक भी नुक्कड बैठको में पहुचते है इसी के साथ गांव के स्थानीय युवाओ में नेतृत्व क्षमता का विकास किया जाता है ऐसा वातावरण तैयार होने पर कुछेक समय बाद में पूरे गांव की बैठक करने का औपचारिक निर्णय लिया जाता है।

ग्राम संगठन :–गांव में नुक्कड़ बैठकों में तय किये अनुसार कार्यकर्ता पहुंचकर गांव के उन उत्प्रेरको (स्वयं सेवक) के सहारे गांव को इकट्ठा करवाया जाता है जिन्होंने नुक्कड़ बैठकों में रुचि दिखाई हो, गांव को इकट्ठा होने पर गांव के परिवारों की सूची तैयार की जाती है, गांव के संगठन के पूर्व में क्या–क्या प्रक्रियाएँ रहती है, उन पर भी चर्चा करते हुए ऐसा कोई कारण हो जो गांव पर संगठन के

गठन में बाधक हो उनको पूर्व गांव में बने संगठनों के लक्षणों का प्रसारण उस बैठक में कार्यकर्ता प्रस्तुत करता है। कई गांवो में उसी समय ग्राम संगठन का गठन हो जाता है कई में उस समय को स्थगित करते हुए अगली तिथि तय की जाती है उस समय के दौरान कार्यकर्ता भिन्न–भिन्न जगहो पर नुक्कड़ बैठकों में संगठन के प्रति ग्रामवासियो को प्रेरित करते रहते हैं और आखिर ग्राम संगठन का गठन होता है यह कार्य सहज व औपचारिक प्रयासों से ही संभव नहीं होता है कार्यकर्त्ता कि प्रतिबंध्दता, शात्विकता, और उत्कर्ष्ट कार्यों के परिणामों के बल बूते पर ही संभव होता है क्योकि यह ग्राम संगठन औपचारिक नही होता है ग्राम संगठन को पूरा दायित्व उठाते हुए आर्थिक, तकनीकी, सर्वोहिताय कि बुनियाद ग्राम संगठन में रखी जाती है।

ग्रामीण सहभागी समीक्षा (P.R.A) –

ग्रामीण सहभागी समीक्षा के विभिन्न विधियो के माध्यम से गांव में उपलब्ध संसाधन की जानकारी ली जाती है तथा गांव की समस्याओ का चिन्हीकरण किया जाता है उनके कारणो की समीक्षा की जाती है समस्याओ का प्राथमिकीकरण किया जाता है तथा गांव वालो के द्वारा ही प्रत्येक समस्या के समाधान हेतु चर्चा कि जाती हैं । उसके उपरान्त गांव में उपलब्ध स्थानीय संसाधनो को ध्यान में रखते हुए गाव वालो द्वारा कार्य योजना बनाई जाती है

सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र के दौरान ग्राम संगठन व कार्यकर्ता मिलकर समस्याओं की प्राथमिकताओं को तय करते हुए अक्सर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व संवर्धन के कार्यों को प्राथमिकता मिलती है इसके अनुसार गांव के बरसाती नालों, खेतों, चरागाह, सिवायचक, वनी, स्कूल, रोड, सामुदायिक भवन, मंदिर, कुए, हैंडपंप आदि गांव में उपलब्ध संसाधनों को दर्शाते हुए उन संरचनाओं को गहरे मार्क के साथ चिन्हित करते हैं जिन जगहों पर मृदा हुए जल संरक्षण संरचना का निर्माण होना होता है ।

ग्राम संगठन और ग्राम गौरव संस्थान की परियोजना में उपलब्ध राशि के आधार पर कितनी जल व मृदा संरक्षण संरचनाओं का सर्वधन और निर्माण किया जा सकता है यह तय होने पर इसका बंटवारा करने के लिए गांव में थोक, जाति, मोहल्ला, आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर ग्राम संगठन के निर्णय के अनुसार तय किया जाता है ।

ग्राम विकास समिति का गठन – ग्राम संगठन की बैठक वार्षिक या छःमाही या आवश्यकतानुसार ही अनिवार्य होती है कार्यों की क्रियाविधि के लिए एक समिति का गठन किया जाता है समिति का नाम ग्राम विकास समिति रखा जाता है जो ग्राम संगठन के द्वारा नियुक्त व्यक्तियों के सदस्यों की होती है इस समिति की सदस्य संख्या 07, 11 या गांव बड़ा होने पर 15 तक पहुंच जाती है ।

सारणी – ग्राम गौरव संस्थान परियोजना क्षेत्र			
क्र.	ब्लाक का नाम	ग्राम संगठन	ग्राम विकास समिति
01	सपोटरा	30	20
02	मण्डरायल	24	18
03	करौली	03	03
04	मसलपुर	20	10
05	बसेड़ी	06	03
06	खंडार	01	01
		84	55

ग्राम विकास समिति के कार्य–

1. ग्राम विकास समिति और कार्यकर्ता मिलकर उन तय संरचनाओं की जगह की नापतोल करके जलागम क्षेत्र के अनुसार बजट तैयार करते हैं जो पूरी तरह से दस्तावेजों में लिखा जाता है एवं गांव का आधारभूत सर्वे करते हैं ।

2. बजट के अनुसार हितग्राही समूह को उस पर होने वाले खर्च से अवगत कराते हुए उनके हिस्से में आने वाली सामग्री या नगदी को बताया जाता है एवं उसके रखरखाव लाभ हानि भुगतान जिम्मेदारी का शपथ पत्र हितग्राही से लिखवाते हैं ।

3. ग्राम विकास समिति के सदस्य हितग्राही समूह और कार्यकर्ता नींव खुदाई का कार्य प्रारंभ करवाते हैं

4. कार्य में लगने वाली सामग्री अपने हिस्सेवार जगह पर पहुंचाने के लिए दर भाव तय करते हैं ।

5. मिट्टी के कार्य में तय दरों के अनुसार श्रमिको के द्वारा या आधुनिक साधनों द्वारा कार्य प्रारंभ करते हैं

6. पाल की चौड़ाई ऊंचाई के अनुसार कार्य का अवलोकन ग्राम विकास समिति कार्यकर्ता व हितग्राही समूह करता रहता है ।

7. संरचनाओं के अनुरूप भुगतान की आवश्यकता होने पर ग्राम विकास समिती सदस्य हितग्राही समूह व संस्थान कार्यकर्ता तय हिस्सो के अनुसार लिखित रूप में करते रहते हैं

8. कार्य पूर्ण होने पर संपूर्ण भुगतान को तय हिस्सो के अनुसार करते हैं और ग्राम विकास समिति व हितग्राही द्वारा पूर्णता प्रप्रत्र तैयार करवाया जाता है ।

9. संपूर्ण हुए खर्च का लेखा–जोखा संरचना के इर्द–गिर्द लिखा जाता है ।

10. गांव में निर्मित संरचनाओ का संपूर्ण खर्च कि जानकारी ग्राम संगठन कि बैठक में दी जाती है कार्यकत्ताओ कि और से ग्राम संगठन को संरचना को सुपर्द किया जाता है ग्राम संगठन अपने आन्तरिक व्यवस्था के अनुसार संरचना का रखरखाव कि जिम्मेवारी हितग्राही समूह को देता है।

जल व मृदा संरक्षण संरचना निर्माण के चरण

- गांव में प्रवेश
- पदयात्रा
  रिश्तेदारिया
- नुक्कड सभा
- सम्पूर्ण गांव की बैठक
- ग्राम संगठन का गठन
- ग्रामीण सहभागी समिक्षा
- ग्राम विकास समिति का गठन
- संरचना का तकनीकी सामाजिक एवं आर्थिक आधार पर आंकलन
- संरचनाओ का डिजाईन, बजट
- जनसहयोग पर सहमति
- ग्राम संगठन के साथ जिम्मेदारियो का बटवारा
- ग्राम संगठन के साथ सामग्री, श्रमिक, मशीनरी कि दर, भाव तय करना
- चिन्हीकरण (ले–आउट) व कार्य प्रारंभ
- कार्य कि देखरेख
- आवश्यकता पर भुगतान
- कार्य पूर्ण होने पर बिल–वाउचर तैयार करना
- समिति, हितग्राही, कार्यकर्त्ता के द्वारा पूर्ण भुगतान व पूर्णतः प्रपत्र एवं बोर्ड लेखन
- ग्राम संगठन की बैठक कर कार्य का लेखाजोखा प्रस्तुत कर
- ग्राम संगठन को संरचना सुपर्द करना

Series of snapshots shows the Gram Gaurav Sansthan Process for Implementaion of Rain Water Harevsting Structure

Community Meeting for Planning

Intial phase of planning – small group meeting and Pad yatra

Discussion in Village Development committee

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

Discussion in VDC on progress, record keeping and payment to vendors

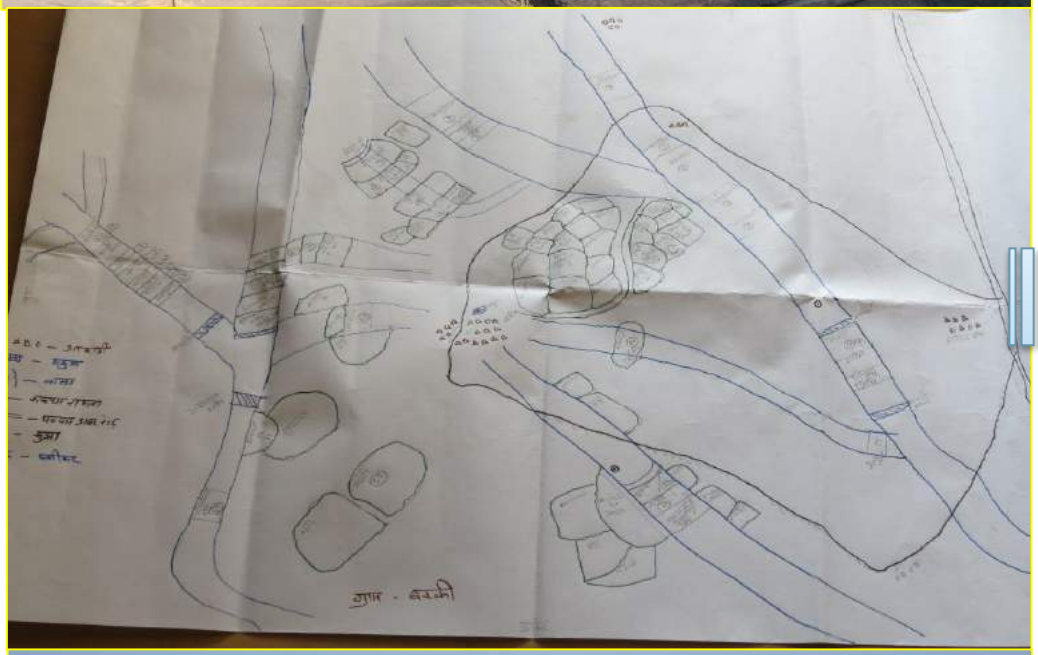

Social map of village during planning

Beneficiary is doing Jal Seva during process of construction of Pokhar

Village Level Institution

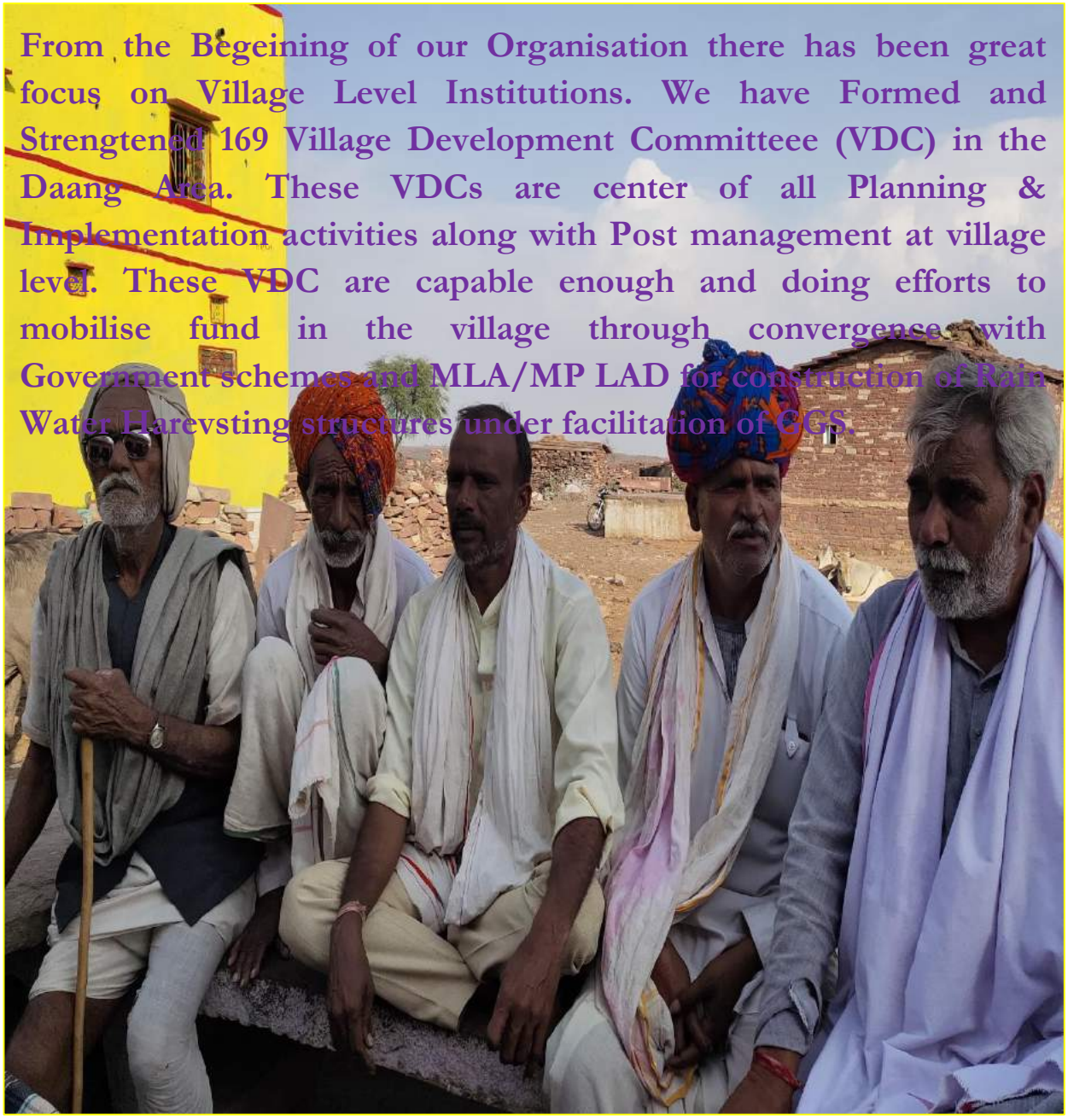

From the Begeining of our Organisation there has been great focus on Village Level Institutions. We have Formed and Strengtened 169 Village Development Committeee (VDC) in the Daang Area. These VDCs are center of all Planning & Implementation activities along with Post management at village level. These VDC are capable enough and doing efforts to mobilise fund in the village through convergence with Government schemes and MLA/MP LAD for construction of Rain Water Harevsting structures under facilitation of GGS.

RAIN WATER HARESVTING

Water, Daang and Gram Gaurav are synonymous with core competency in Rain Water Harevsting structure. Rain Water Haresvting is the core strategy for the improvement of livelihoods of Daang community and GGS has already constructed 622 structures till end of March 2019.

4. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा प्राकृतिक संसाधन के प्रबंधन के क्षेत्र में मुख्यतः जल व मृदा सरंक्षण का निर्माण, एवं पर्यावरण चेतना के क्षेत्र में मुख्यतः कार्य कर रहे है इस अध्याय में हम डांग क्षेत्र में पारंपरिक संरचनाए अर्थात् पोखर, पैगारा, धर्मताल के बारे मे जानकारी दी गई हैं ।

ग्राम गौरव संस्थान गठित कर्त्ता समूह द्वारा पूर्व में विभिन्न जिलो में वहॉ कि भौगोलिक परिस्थितियो के अनुसार समाज के सहयोग से जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण किया है जिनको अलवर, जयपुर जिलो में जोहड़, तालाब, मेड़बंदी पाली व बीकानेर जिले में नाड़ी, तालाब, टांके एवं सवाईमाधोपुर करौली जिले के मांड़ क्षेत्र में खेत तलाई, डबरा व सवाईमाधोपुर करौली, धौलपुर के डांग क्षेत्र में ताल, पोखर, पैगारा संरचनाओ के नाम से निर्माण किया गया है।

धर्मताल – धर्मताल गांव की सार्वजनिक भूमि पर समग्र उपयोग के लिए बनायी जाने वाली डांग क्षेत्र की मुख्य जल संरक्षण संरचना है । धर्मताल मुखतः पशुओ व ग्रामवासियो के पेयजल आपूर्ति के लिए के लिए बनाया जाता है लेकिन पानी की उपलब्धता के आधार पर कई–कई स्थान पर धर्मताल को कृषि में सिचाई के लिए उपयोग हेतु किया जाता है ।

पोखर – डांग क्षेत्र के गांव में बंजर व असिंचित जमीन को उपजाऊ व सिचित करने हेतु मिट्टी के द्वारा नाले के रिज में पोखर का निर्माण किया जाता है ।

पैगारा – यह संरचना एक छत पत्थर वाले निजी भूमि में बनाया जाता है इस संरचना से मृदाक्षरण रूकता है जिससे एक छत पत्थर वाली जमीन कृषि योग्य जमीन में तब्दील हो जाती है और रबी व खरीब की फसल होने लगती है।

संरचना निर्माण की आवश्यकता – डांग क्षेत्र उबड़ खाबड़ पथरीला व नालो वाला क्षेत्र है और इस क्षेत्र की मुख्य समस्या जल की कमी ही रही है इस समस्या से निपटने के लिए स्थानीय लोगो की सोच व भौगोलिक परिस्थितियो के अनुसार ताल, पोखर, पैगारा निर्माण करने से ही समस्या का हल संभव है और जब इस क्षेत्र में पानी की उलब्धता बढती है तो खाद्यान, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य में स्वतः ही लोगो में आई चेतना के अनुसार सुधार होता दिखता है इसलिए इस उबड़–खाबड़ पथरिली जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए इस संरचनाओ की जरूरत होती है ।

जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ को बनाने संस्थान की मुख्य भूमिका –

1. पारंपरिक जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ की आवश्यकता व महत्ता के प्रति डांगवासियो को जागृति किया एवं प्रेरित किया ।
2. संरचना निर्माण में ग्रामीण समुदाय की सहभागिता व जनसहयोग सुनिश्चित किया ।
3. संरचना निर्माण हेतु सरकारी योजनाओ, जनप्रतिनिधियो व जनसमुदाय को जोड़ने के लिए प्रेरित किया ।
4. ग्राम पंचायत व जनप्रतिनिधियो के सहयोग से बनने वाली पारंपरिक संरचनाओ को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए तकनीकी सहयोग प्रदान किया ।

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा विगत् 19 वर्षो में (2001–02 से 2019–20) के मध्य **कुल 624 जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ** का निर्माण 6 जिलो के 126 गांव में किया गया है जिसमें मे कुल लगभग 8.50 करोड़ रू का व्यय हुआ है जिसमें 2.50 करोड़ का व्यय ग्रामीण समुदाय द्वारा वहन किया गया है । इसके अलावा **47 जल संरक्षण संरचनाए संस्थान द्वारा ग्रामीण समुदाय को प्रेरित करके बिना किसी आर्थिक मदद के भी बनवायी गयी है।**

जल व मृदा सरंक्षण संरचनाओ का उद्देश्य

1. गांव के पशुओ के पीने के पानी हेतु
2. कृषि में सिचाई के लिए पानी कि पूर्ति हेतु
3. गांव के पीने के पानी कि समस्या को दूर करने के मकसद से
4. घाटी क्षेत्रो में मिट्टी के कटाव को रोकने व खेत बनाने तथा नमी से खरीफ व रबी कि फसल

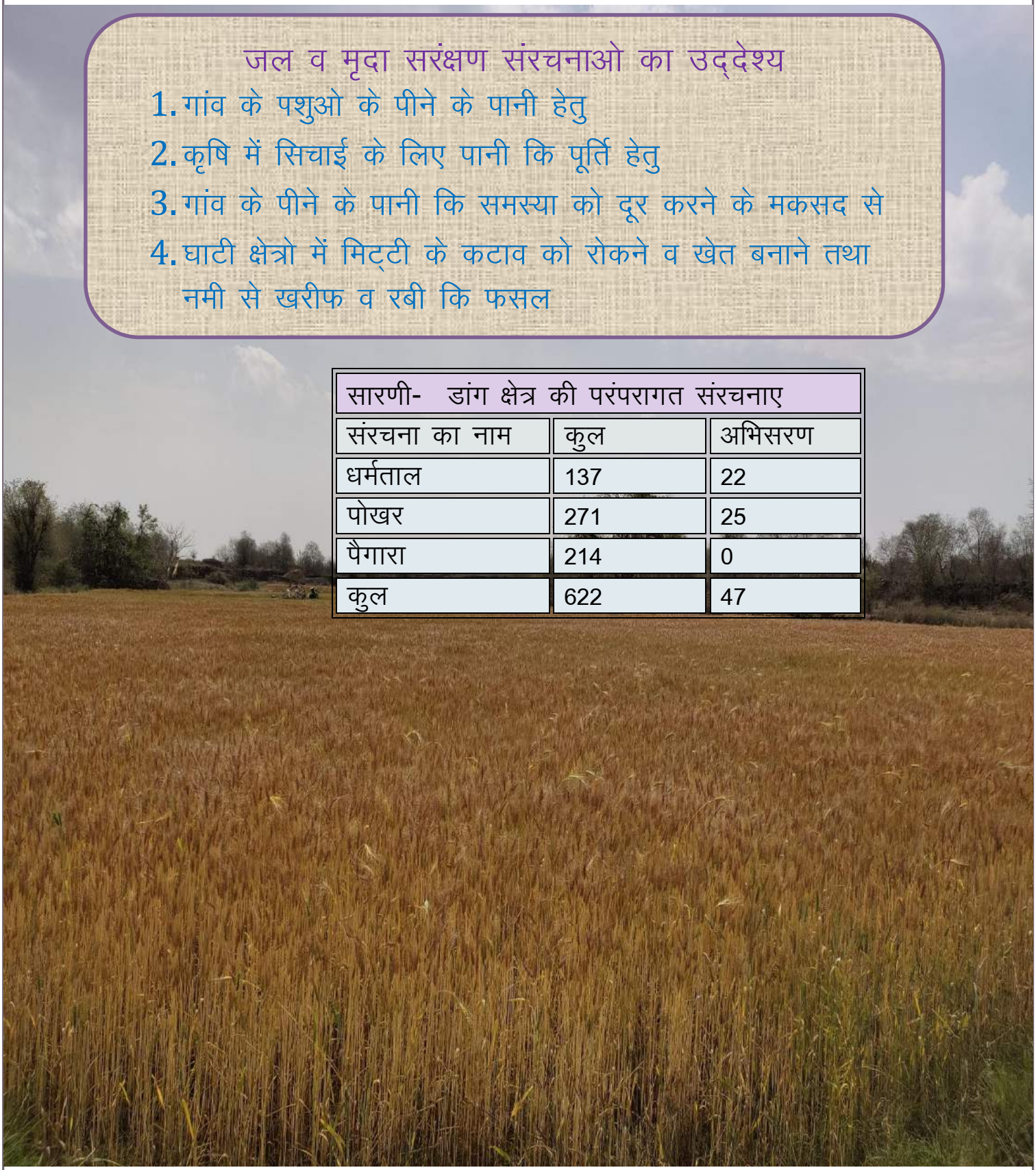

सारणी- डांग क्षेत्र की परंपरागत संरचनाए		
संरचना का नाम	कुल	अभिसरण
धर्मताल	137	22
पोखर	271	25
पैगारा	214	0
कुल	622	47

नोट :– *उपरोक्त उपर दिये गये ऑकड़े ग्राम गौरव संस्थान के उद्गम से पहले संस्थान के गठित कर्त्ता समूह द्वारा 2001–02 से किये गये कुल प्रगति के ऑकड़े है । 2011–12 में ग्राम गौरव संस्थान के उद्गम के उपरांन्त डांग क्षेत्र के 105 गांव में 239 मृदा व जल संरक्षण संरचनाओ का निर्माण किया जा चुका है जिसमें लगभग 5000 परिवारो को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर से लाभ पहुचा है*

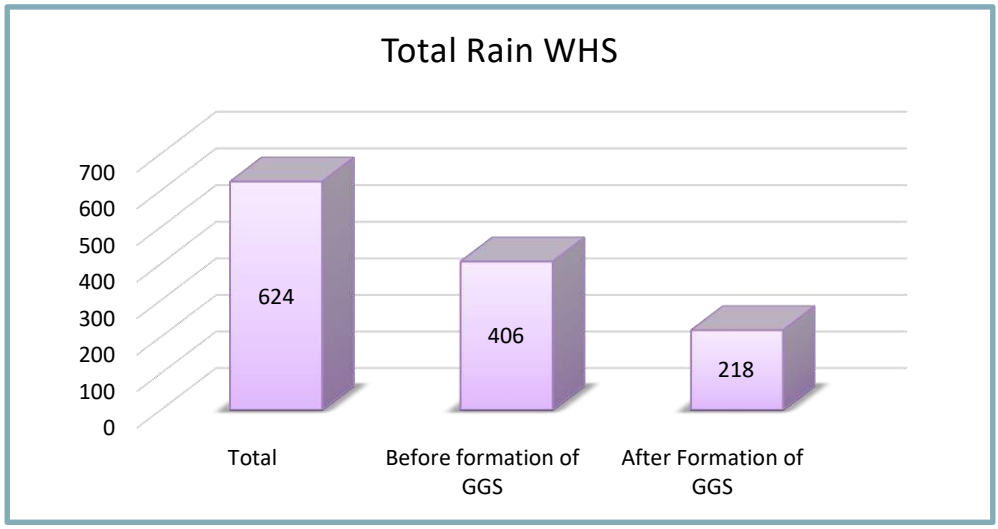

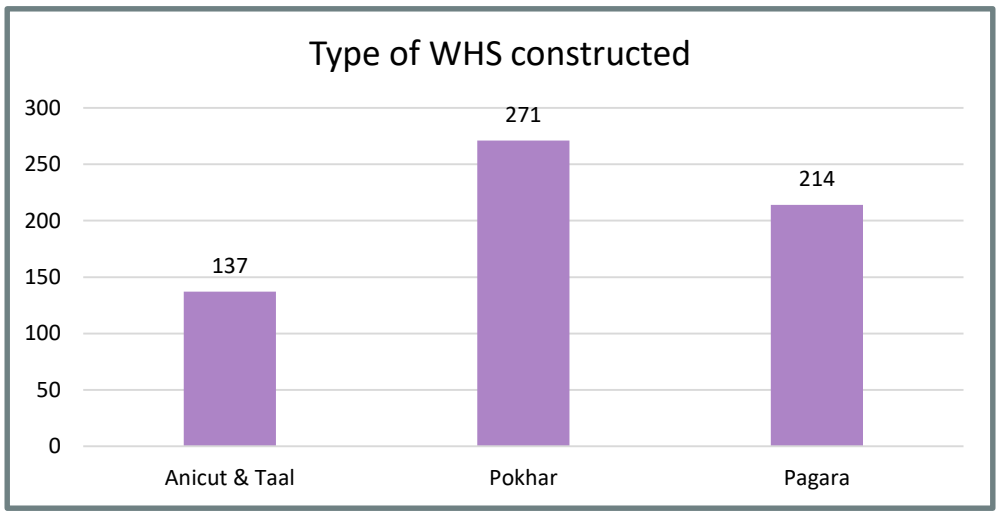

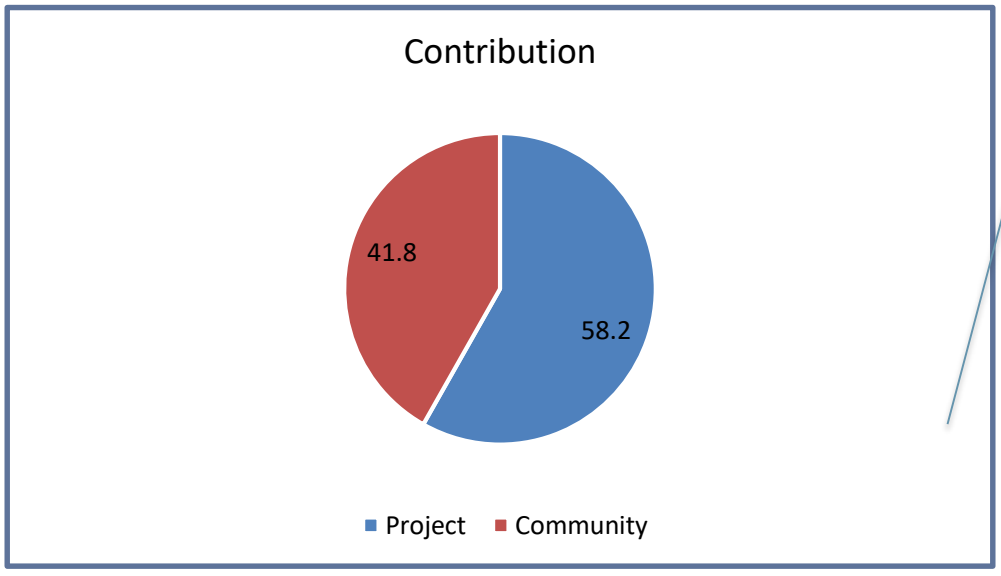

42 % genuine contribution of community is great achievement. This show people active involvement & ownership of Daang community

संस्थान द्वारा अब तक बनायी 624 जल व मृदा संरचनाओ कि वर्षा जल संग्रहण क्षमता लगभग 4.55 मिलयन क्युबिक मीटर है तथा लगभग 6.9 मिलियन क्युबिक मीटर पानी रिचार्ज होकर भूजल में चला जाता है । अगर हम प्रति लीटर जल ग्रहण क्षमता कि व्यय राशि कि बात करे तो वह लगभग 30 पैसे के करीब आती है ।

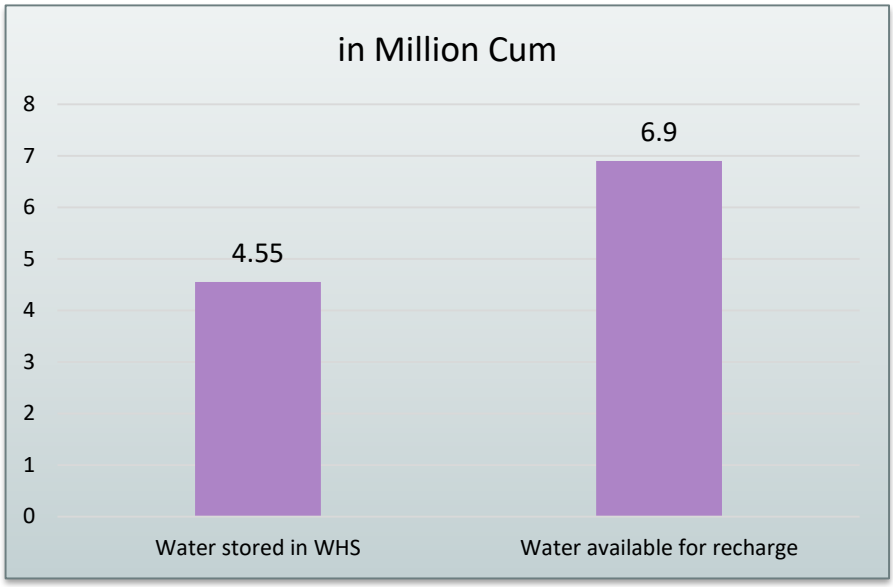

संस्थान द्वारा कराये गये जल व मृदा संरक्षण के कार्यो में कुल 1850 हेक्टेयर जमीन में सिचाई कि सुविधा मिल रही है ।1225 हेक्टयर वर्षा सिंचित क्षेत्र सिंचित क्षेत्र में बदल गया है तथा 110 हेक्टेयर पथरीली व बंजर भूमि का क्षेत्र खेती योग्य भूमि में परिवर्तित हो गया है ।

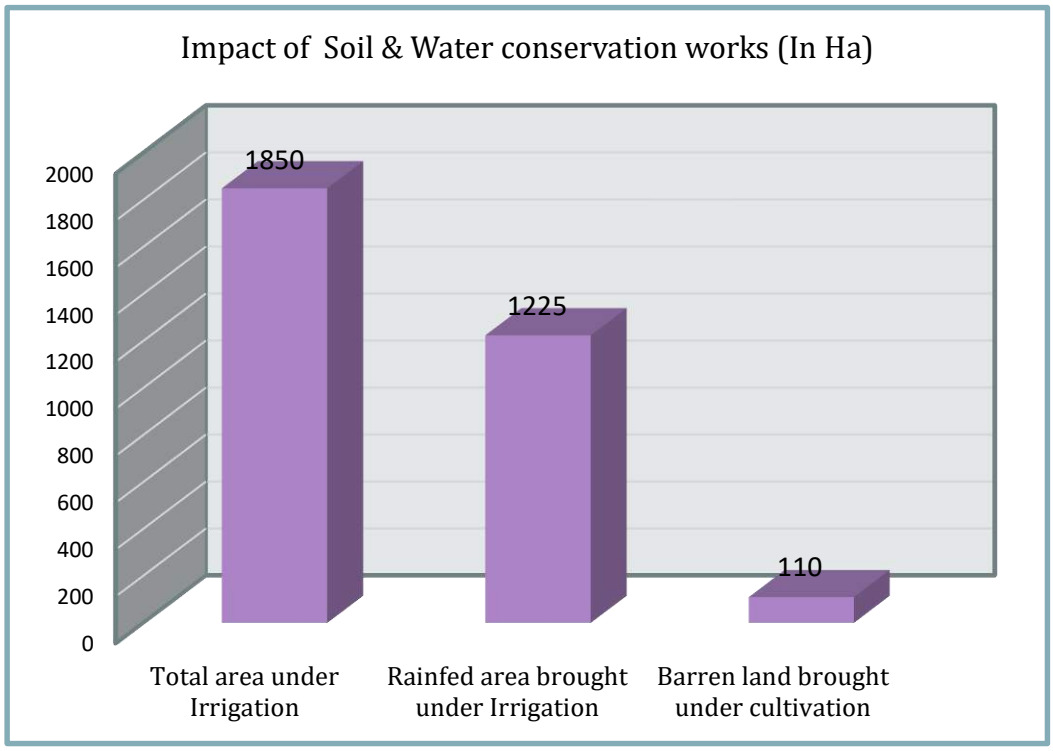

संस्थान द्वारा कराये गये जल व मृदा संरक्षण कार्यो से सीधे तौर पर 5250 परिवारो को लाभ हुआ है व अप्रत्यक्ष तौर पर यह संख्या लगभग 9000 परिवारो के आस–पास है इसमें 4100 परिवार कृषि क्षेत्र में लाभान्वित हुए है ।

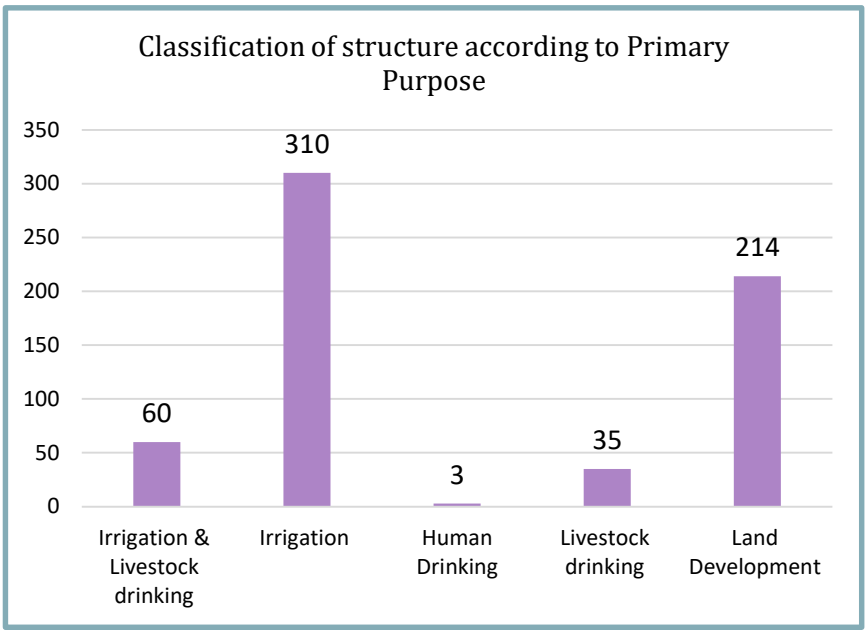

कृषि क्षेत्र में कुल 4100 परिवारो के यहाँ 66.5 हजार क्विटल अतिरिक्त बाजरा, धान, गेहूँ व सरसो कि उपज अतिरिक्त होने लगी है अर्थात् यही ग्रामीण समुदाय जो पहले गेहू व बाजरा खरीदता था व अब बाजार मंडी में गेहू, धान व सरसो बेचकर अतिरिक्त आय कमा रहा है । एवं गणना के दौरान यह पाया गया कि पहले औसत् यहां जब एक परिवार एक वर्ष में 36,405 रू मूल्य के बराबर अनाज पैदा कर पाता था पर ग्राम गौरव द्वारा मृदा व जल संरक्षण कार्यो के कारण वही परिवार अब 91,852 रू के मूल्य के बराबर अनाज पैदा कर रहा है ।

इससे ग्राम गौरव संस्थान के डांगवासियो कि आजीविका सूदृढ करने का सपना पूरा होने जैसा प्रतित होता है ।

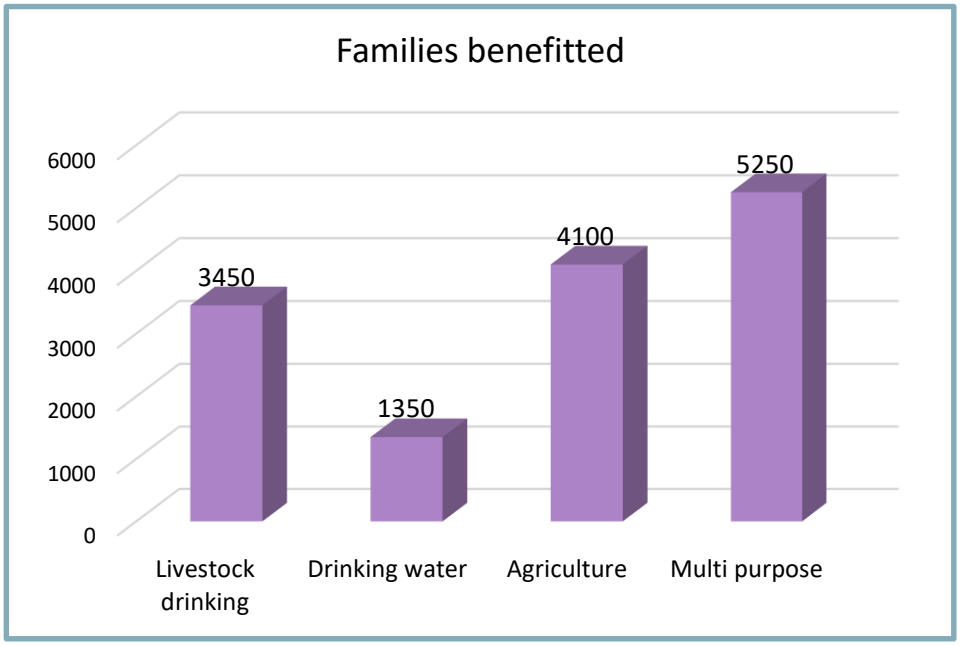

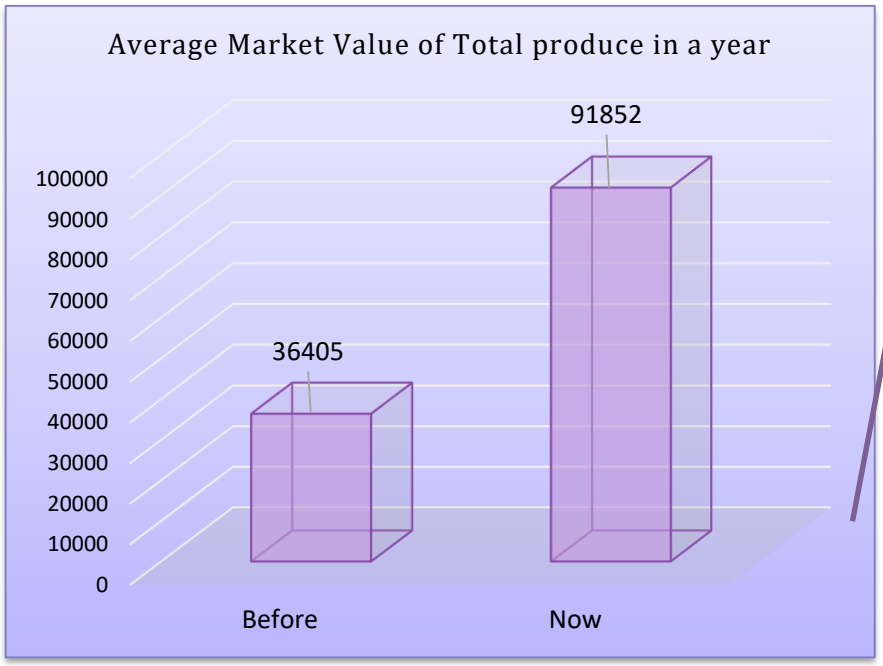

Due to access to irrigation facility and land development works, Farmer production enhanced significantly. 2.5 times increased in market value of total produced proved it

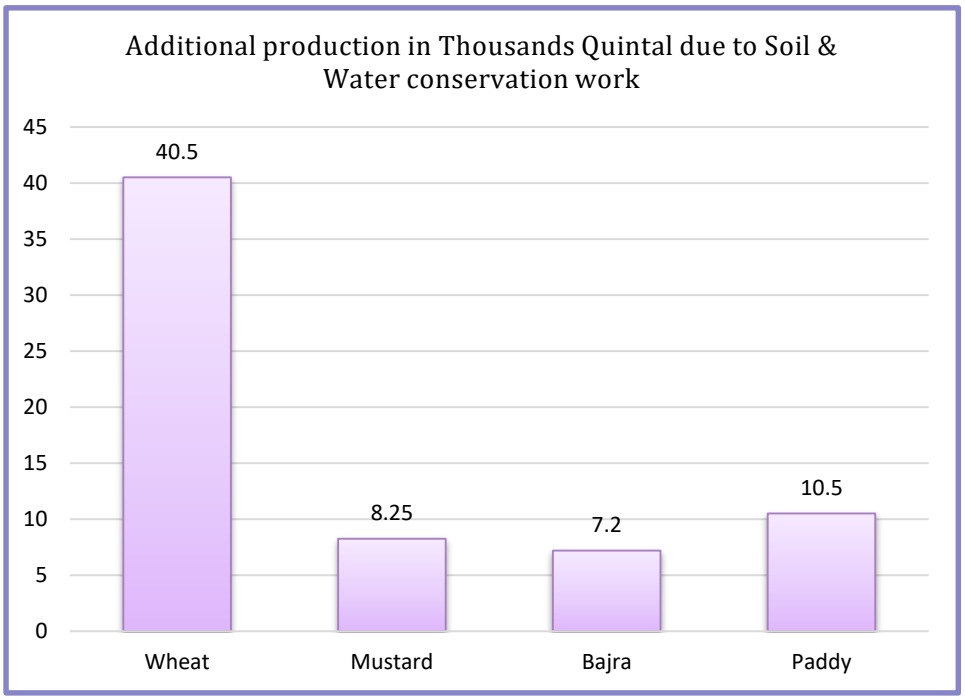

Analysis of Data collected from beneficiary farmers revealed the fact that beneficiary farmers are getting approximately 66.5 thousands Qunital additional production in two cropping season in a year. Market value of this production is approx. 15 Cr.

पोखर सैनिक –

ग्राम गौरव संस्थान अपने कार्य की कार्य प्रणाली के अनुसार गांव में जनतांत्रिक व्यवस्था के स्वरूप में ग्राम संगठन व ग्राम विकास समितियों का गठन करके अपने चेतनात्मक व रचनात्मक कार्यों की श्रृंखला को गतिमान कर रहा है पर ग्राम संगठन व ग्राम विकास समिति से हटकर गांव में ऐसे व्यक्ति उभर रहे हैं जो ग्राम संगठन या किसी अन्य नियुक्ति के बिना भी समर्पित भाव से दिन–रात अपने गांव में संस्थान के कार्य व्यापक और सघन हो इस हेतु दिन–रात प्रयासरत् है इनको पोखर सैनिक नाम दिया गया।

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा अब तक कुल 40 पोखर सैनिको तैयार किये है जिनको वर्ष में 2 बार, 2 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है संस्थान द्वारा पोखर सैनिक की क्षमता को एवं ग्राम विकास में उसकी भूमिका को सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओ द्वारा सराहा गया है । यही कारण है कि जल एवं मृदा संरक्षण के कार्यो कि योजना बनाने एवं क्रियान्वयन के दौरान ग्राम पंचायत एवं डांग क्षेत्र में काम करने वाली विभिन्न गैर सरकारी संस्थाए ग्राम गौरव संस्थान द्वारा तैयार किये गये पोखर सैनिको कि मदद ले रही है तथा स ंस्थान द्वारा तैयार किये गये इस मॉडल की भूरी–भूरी प्रशंसा की गई है।

पोखर सैनिक यह नाम गांव के उन स्वयंसेवकों को दिया गया है जो निस्वार्थ भाव से गांव के विकास हेतु समर्पित हैं इन लोगों का चुनाव प्रजातांत्रिक तरीके से ग्राम विकास समिति की बैठक में होता है जैसे बॉर्डर पर हमारे देश का जवान देश की रक्षा के लिए लड़ता है ऐसे ही पोखर सैनिक गांव की भलाई के लिए उसमें उपलब्ध जल संरक्षण हेतु गांव वालों को समझा–समझा कर उन्हें गांव के परिवार व गांव के विकास हेतु संघर्ष मय रहता है व जल संरक्षण के कार्य को धर्म का काम समझ कर उसमें लीन रहता है ।

लखनसिंह गुर्जर निवासी चौबेकी ने अपने गांव कि मुख्य समस्या पानी की कमी को दूर करने के लिए ग्राम पंचायत में पुरानी संरचनाओ के जीर्णोध्दार एवं नई संरचनाओ के निर्माण वास्ते ग्राम संभा की बैठक में ग्राम पंचायत की योजना में जुडवाकर पंचायत समिति स्तर पर नरेगा के कनिष्ठ अभियंन्ता को संरचना बनने की जगह लाकर बजट तैयार करवाया जी.ओ टेगिंग करवाकर जिला परिषद स्तर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी व सहायक अभियंता से पोखर व धर्मताल स्विकृत करवाने का प्रयास कर रहा है साथ ही अलबत की ठेकला की झोपड़ी गजसिंहपुरा गांव के लोगो को प्रेरित करके ताल, पोखर, पैगारा बनवाने हेतु प्रेरित कर रहा है।

पोखर सैनिक मुख्यतः इन जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं ।

- ग्राम गौरव संस्थान द्वारा आयोजित मीटिंग, कार्यशाला, पोखर सम्मेलन, इत्यादि में भाग लेते हैं
- गांव तथा आसपास के क्षेत्रो में जल संरक्षण संरचनाओ की आवश्यकता उसके महत्व इत्यादी के बारे में लोगो को जानकारी देकर उनको जल संरक्षण संरचनाए बनाने हेतु प्रेरित करना ।
- विभिन्न सरकारी योजनाए, जनप्रतिनिधि, गांववासियों की भागीदारी से गांव में जल संरचनाएं बनाने को मदद करना ।
- ग्रामवासियों को जल संरक्षण, उन्नत कृषि एवं पर्यावरण पर नई जानकारी प्रदान करते हैं
- वर्षा जल संग्रहण हेतु संरचना बनाने के लिए योजना बनाने से लेकर उसके प्रबंधन तक के सारे चरणो में भूमिका निभाते है।
- ग्राम संगठन व संस्थान के बीच कड़ी का कार्य करते है।
- नये क्षेत्रो में जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ के निर्माण में उपयुक्त वातावरण तैयार करते है।

पोखर सैनिक श्री रामरूप मीणा ग्राम कसियापुरा ग्राम पंचायत लांगरा अपने मां बाप के इकलौता बेटा है रामरूप मीणा ने पड़ोसी गांव में संस्थान के द्वारा वर्षा जल मृदा संरक्षण के लिए समाज आधारित प्रबंधन में ताल, पोखर, पैगारो का निर्माण होने से ग्रामीणों की कृषि उत्पादन वृद्धि को देखकर अपने गांव में भी ग्राम संगठन का गठन करने में जुट गया । ग्राम संगठन का स्वरूप तय होने के बाद ग्राम संगठन की ओर से ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया कई महीनों के प्रयासों में ग्रामीणों ने प्रयोगात्मक रूप के लिए रामरूप के खेत में ही पैगारा लगाना तय किया पैगारा निर्माण में तय अनुसार संस्थान व हितग्राही ने सहयोग किया राम रूप का 3 बीघा खेत एक छत पत्थरवाला द्विफसलीय उपजाऊ खेत तैयार हुआ जिसमें 36 क्विंटल गेहूं व 28 क्विंटल धान पैदा होने लगा इस बदलाव को देखते–देखते गांव में राम रूप मीणा के प्रयासों की मेहनत रंग लाई और प्रशंसा होने लगी सभी ग्रामवासियों की सोच में बदलाव आया और पोखर पैगारा निर्माण करने के लिए उत्साहित हुए रामरूप मीणा जी ने अपने गांव का विकास करने की मन में ठानी और लोगों को व संस्थान को सघन काम करने के लिए बताया वर्तमान में गांव के लोगों द्वारा रामरूप मीणाजी की राह पकड़ कर 29 पैगारो का ग्राम गौरव संस्थान के सहयोग से निर्माण करवाया है जिससे कई सौ क्विंटल गेहं धान की फसल पैदा हो रही है ।

Pokhar Sainik Shivir

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

Before

After

Paiki Anicut

Before

After

Amreki Anicut

Asanjod Anicut

Chobeki –Pokhar

Pictures of various types of structure constructed by GGS

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

“My Garden has bloomed – Now No Reason to Worry “

“Have Enough Food and Fodder for family and my Cattle“

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

5. कृषि

5. कृषि

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा पूर्णतः कृषि आधारित सीधे तौर पर कोई परियोजना अभी तक संचालित नही कि गई है । यद्यपि संस्था द्वारा ग्राम संगठन के माध्यम से उन्नत कृषि तकनीकी के विभिन्न विषयो पर जानकारी दी जाती है लेकिन धान व गेहू सघनीकरण पर संस्था द्वारा कार्य किया जा रहा है जिसके अभूतपूर्व परिणाम देखने को मिले है

जल व मृदा संरक्षण कार्यो का प्रभाव

- सरसो व गेंहू की उपलब्धता में 120 से 200 प्रतिशत की वृध्दि हुई है क्योकि पहले सरसो मात्र सर्दी कि मावठ (सर्दी की बरसात) के भरोसे होती थी पर अब सरसो को एक से दो पानी मिल रहा है व गेंहू में भी किसान 3 से 5 पानी दे पा रहे है ।
- फसल परिवर्तन हुआ है खरीफ में धान का रकबा क्षेत्र बढा है व रबी में गेहू का क्षेत्र बढ़ा है ।
- कुओ के जल स्तर में 5 से 15 फिट की बढोतरी हुई है ताल के नीचे के कुए में 12 महीने पानी रहता है ।
- गांव में दूध दही की मात्रा भोजन में बढ़ने से परिवारो के सदस्यो खासकर बच्चो का पोषण स्तर काफी अच्छा हुआ है ।
- वर्ष पर्यन्त पलायन पर रहने वाले सदस्यो की संख्या में कमी आई है क्योकि उन्हे गांव में ही खेती में काम मिल गया है ।
- महिलाओ के बोझ ढुलाई में अभूतपूर्व कमी आई है पहले उन्हे पेयजल के प्रबंध हेतु कोसो दूर जाना पड़ता था जो अब गांव के नजदीकी धर्मतालो से मिल रह है ।

Study carried out by independenet agency for DS Group supported project revealed that RWHS constructed under project brought significant impact in all areas. Three figures mentioned below shows the impact in Agriculture field.

1. Indicate about range of improvement in No of irrigation and area under cultivation
2. Change in average income from Agriculture per Bigha and Family level
3. % improvement in yield of Paddy, Wheat and Mustard crops

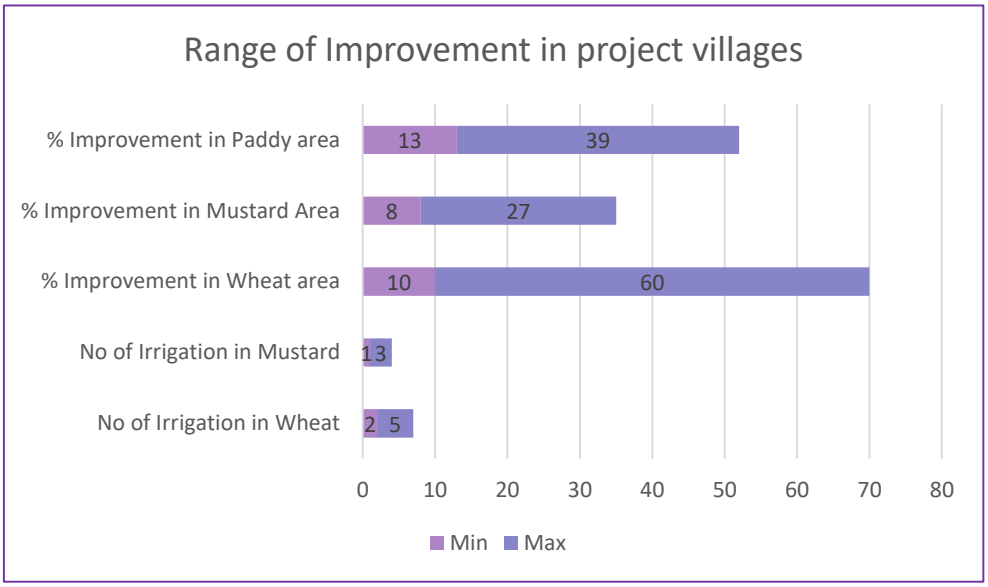
Range of Improvement in project villages
% Improvement in Paddy area
13
39
% Improvement in Mustard Area
8
27
% Improvement in Wheat area
10
60
No of Irrigation in Mustard
13
No of Irrigation in Wheat
2
5
0
10
20
30
40
50
60
70
80
Min
Max

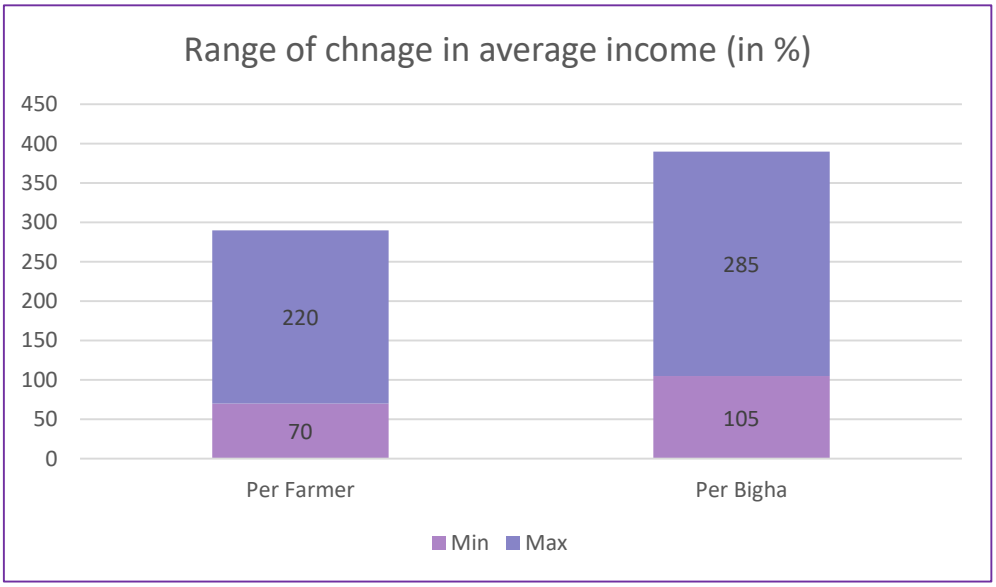
Range of chnage in average income (in %)
450
400
350
300
250
200
150
100
50
0
220
70
285
105
Per Farmer
Per Bigha
Min
Max

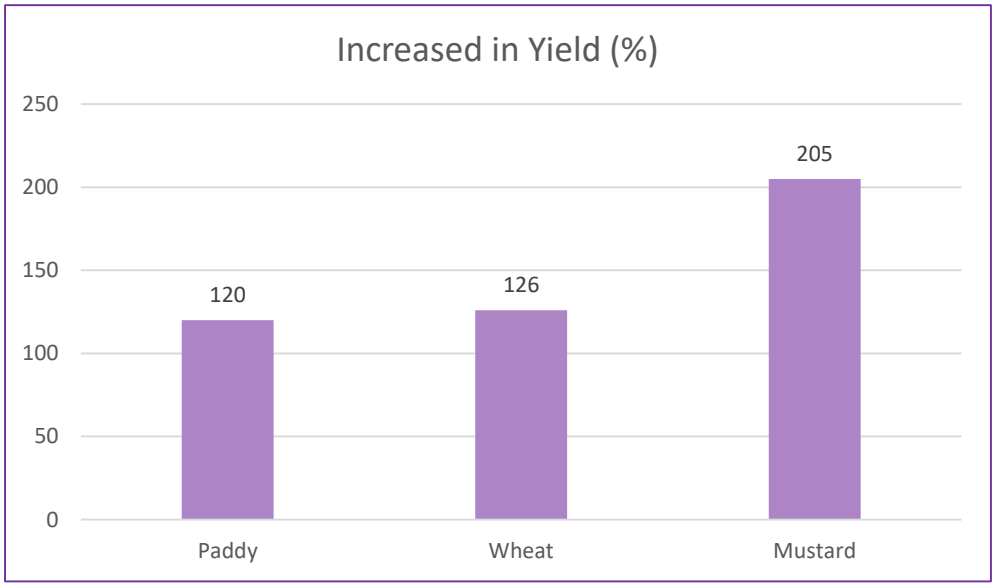
Increased in Yield (%)
250
200
150
100
50
0
120
126
205
Paddy
Wheat
Mustard

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

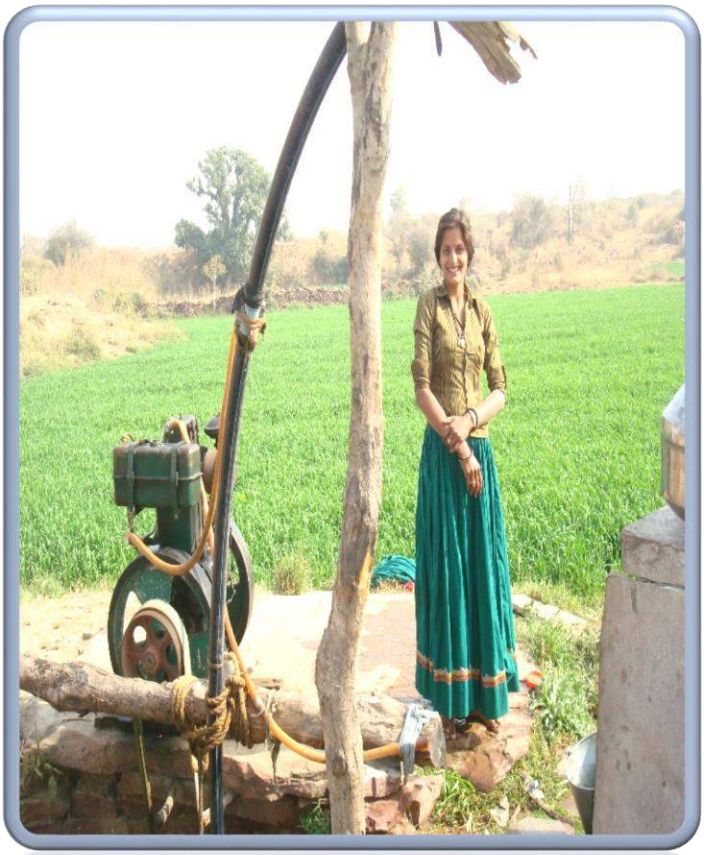

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

Bumper crop in field

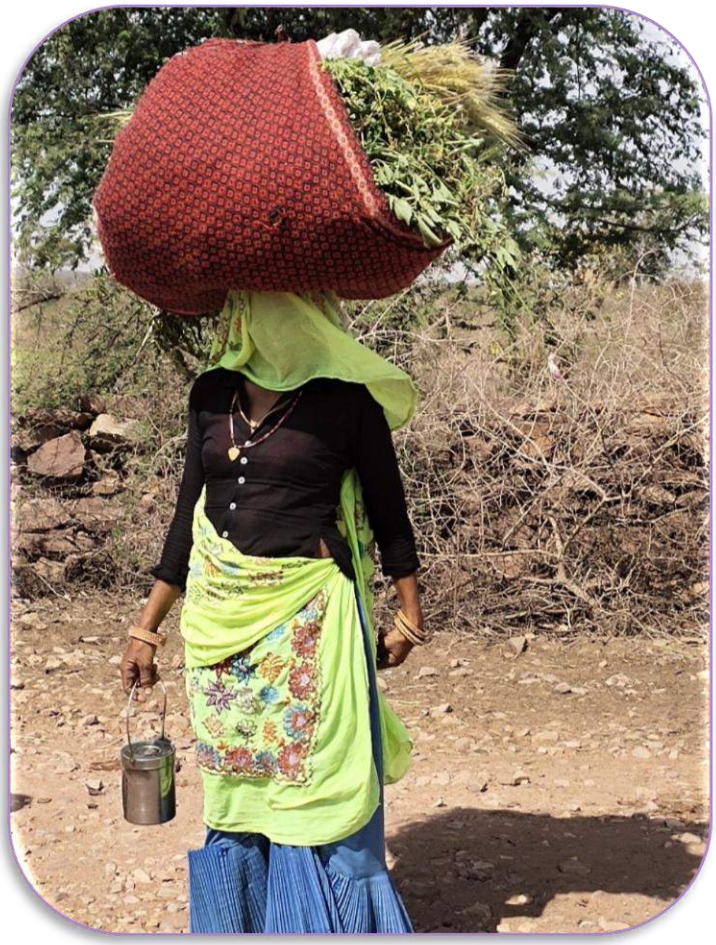

People speak

धान संघनीकरण कार्यक्रम

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा यह कार्यक्रम 2011–12 से राजीव गांधी फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से शुरू किया जो वर्तमान में भी चालू है । इसमें किसानों को वैज्ञानिक तरीके से धान व गेहू की खेती करना सिखाया गया है ।

डांग क्षेत्र में जल व मृदा संरक्षण के क्षेत्र में एक दशक के काम से डांग क्षेत्र में आए बदलाव में धान व गेहूं की पैदावार में वृद्धि होने लगी । डांग में धान बोने का दो तरीका प्रचलन में था बोया व लगाना । दोनों में अंतर स्पष्ट करने के लिए अनुकूल पानी व खेत नहीं मिलने के कारण किसानो में दोनों विधियों में से श्रेष्टता को छांटने में संकुचित भांव था । जबकि ज्यादा लोग अलग से पौध तैयार करके फिर पौधरोपण करने को ज्यादा अच्छा मानते थे पर जब ताल, पोखर, पैगारो का निर्माण हुआ तो अनुकूल खेत व पानी की उपलब्धता होने पर पौधरोपण विधि को और अच्छा समझने के लिए ग्राम संगठनों से आवाज उठने लगी । डांग जैसे पहाड़ी इलाकों में धान की रोपाई को देखने समझने के लिए वर्ष 2010–11 में लोक विज्ञान संस्थान देहरादून के द्वारा उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग सहित कई जिलों में धान सघनीकरण को लेकर एक अभियान चला रखा था इस अभियान को देखने समझने के लिए डांग क्षेत्र के 20 गांवो से 20 किसान को धान संघनीकरण की तकनीकि को समझने के लिए रुद्रप्रयाग का भ्रमण कराया । यहां पर मिली श्रेष्ठता को ग्रहण करते हुए वापस लौट कर इन 20 किसानो ने अपने–अपने गांव में प्रचार किया । संस्थान ने भी ग्रामीणों की सीख को प्रबल करते हुए डांग की अनुकूल परिस्थितियों के अनुसार धान का बीज उपलब्ध करवाना जिसमें सुगंधा ,बासमती आदि वितरण किया और वितरित बीज का सवाया वापसी बीज भंडारण में जमा करवाकर क्रमबद्ध 4 वर्ष तक इस क्रमबद्धता को चलाई बैसाखी रूपी इस कार्य से किसानों में धान की रोपाई, बीच की छटाई का रुझान अब बढ़ रहा है धान खरीद की फसल में होने वाली बीमारी से बचाव के लिए पंचगव्य, पंन्चामृत आदि औषधियों का निर्माण करवाने के लिए संस्थान प्रयासो में जुटी । डांग में किसान इसके समर्थन में पंचगव्य व पंन्चामृत बनाने में लगने लगे है।

धान संघनीकरण के उद्देश्य :–

ग्रामीणो के साथ सामुहिक संवाद करके पारिस्थितिकी के अनुकुल स्थानीय बीजो का चयन व संग्रहण करना

धान व गेहू संघनीकरण जैसी विधाओ को समाज के मानस पटल में लाना

धान व गेहू की फसल को उपलब्ध संसाधनो के अनुसार उत्पादन को बढ़ाने हेतु समाज के प्रेरित करना

देशी खाद व देशी बीज की विधाओ से समाज को रूबरू करवाना व जनमानस के व्यवहार में लाना

देशी बीज व देशी खाद का स्वास्थ्य के संबंध में महत्व को समझाना

फसलीय रोगो की स्थानीय व आधुनिक भाषा में पहचान करना एवं प्राचीन व उत्तम औषोधियो के नुक्सो को उभारना व प्रयोग में लेना

भविष्य में सहकारिता जैसी योजना का उद्गम करवाना

चूकि किसी भी खेती में बीज का महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसीलिए सबसे पहले ग्राम गौरव संस्थान ने किसानों को स्थानीय जलवायु के अनुरूप सुगंधा व बसमती चावल के बीज किसानों को उपलब्ध कराए इसके लिए पुराने बीजों को ही संधारण करके रखा गया ताकि किसान को बाजार का बीज काम में नए लेना पड़े एवं किसान द्वारा बीज का संधारण नहीं हो पाता था वह बीज खराब हो जाता था इसलिए इस परियोजना में बीज के संधारण का कार्यक्रम किया गया ग्राम गौरव संस्थान ने प्रत्येक कलस्टर में एक ग्राम विकास समिति को बीज संचय केंद्र का जिम्मा दिया उन्हें बीज खरीद कर उपलब्ध करवाया गया ।

1. प्रत्येक किसान को एक बीघा जमीन पर 05 किलो बीज दिये गये जो फसल पैदा होने के उपरान्त उसका सवाया वापस ग्राम विकास समिति को जमा करता है इस प्रकार बीज की मात्रा बढ़ रही है ।
2. किसान को बीज उपचार बीज बुआई लाईन से लाईन के तरीके से बीज बोने के लिए प्रशिक्षित किया गया ।
3. किसान को जैविक खेती हेतु प्रेरित किया जिससे खेत में पंचगव्य व पंचामृत को काम में लिया ।
4. किसान द्वारा संपूर्ण विधि से धान कि खेती की गई लगभग 30 गांव में 3200 से ज्यादा किसान इस तरीके से खेती कर रहे है ।

फायदे

- किसान को खेती की लागत बहुत कम हो गई है ।
- किसान की उपज पूर्व से सवा से डेढ गुणा बढ़ गई है ।
- किसान जैविक तरीके से धान की खेती करने लगा है ।
- दवाई व पेस्टीसाईट का उपयोग खत्म हो गया है।
- मिट्टी की उर्वरक क्षमता बढ़ गई है।
- अच्छी गुणवत्ता का बीज किसान के पास हमेशा उपलब्ध रहने लगा ।
- उपज का अच्छा भाव मिलने लगा ।

धान सघनीकरण कार्यक्रम तुलना –

पहले

- पुरानी पध्दति ।
- किसी भी प्रकार का बीज का उपयोग ।
- कम उत्पादन ।
- रासायनिक खादो का उपयोग
- बिमारिया अधिक ।
- लागत अधिक ।
- खरपतवार अधिक ।
- पानी का दुरूपयोग ।

वर्तमान

- वैज्ञानिक पध्दति ।
- स्थानीय जलवायु के अनुरूप सुगंधा व बासमति बीज का उपयोग ।
- उत्पादन में सवाया बृध्दि ।
- जैविक खेती को बढ़ावा ।
- बिमारिया कम ।
- लागत कम ।
- खरपतवार में कमी ।
- पानी का उचित सदुपयोग ।

SRI TRAINING TO FARMER IN CLASS ROOM & FIELD

Line sowing by farmer

Final Impact of SWI

6. शिक्षा

6. शिक्षा

डांग क्षेत्र के पिछडेपन् का मुख्य कारण यहॉ कि साक्षरता दर कम होना है क्योकि शिक्षा न होने के कारण ग्रामवासियो की जानकारी स्तर सभी क्षेत्रो में काफी निम्न है इसलिए डांग समाज विकास की धुरी से बहुत पीछे रह गया है ग्राम संगठन से संवाद के दौरान ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकत्ताओ द्वारा शिक्षा के लिए प्रेरित करने पर वहॉ के वृध्दजनो का यह तो मानना था कि उन्होने पढ़ाई न करके बहुत बड़ी चुक की है लेकिन वो अपने परिवारो के बच्चो को पढाने के लिए इच्छुक है लेकिन डांग क्षेत्र में शिक्षा के लिए उपलब्ध आधारभूत सुविधाए नाकाफी है जिसके कारण उनके बच्चे चाहते हुए भी शिक्षा ग्रहण नही कर पा रहे है

ग्राम गौरव संस्थान का इस बात में विश्वास है कि अगर एक लड़का पढ़ेगा तो एक परिवार का विकास होगा पर अगर एक लड़की पढ़ेगी तो एक पीढी का विकास होगा ।इसलिए ग्राम गौरव संस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में काम करने की ठानी ।शिक्षा राजीव गांधी फाउण्डेशन का मुख्य कार्यक्षेत्र है । राजीव गांधी फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से ग्राम गौरव संस्थान द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयास निम्नाकिंत है।

1) जीवनशाला
2) वंडररूम
3) ग्रामवासियो को प्रेरित कर गांव के बालक/बालिकाओ को स्कूल में दाखिला करवाने का प्रयास्

जीवनशाला

ग्राम गौरव संस्थान के गठनकर्त्ता समूह के द्वारा ग्रामीणों की आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए चलाए जा रहे वर्षाजल, मृदा संरक्षण कार्यो से ग्रामीणों की जीवन शैली में सहजता व सुगमता आने पर ग्राम पाटौरकापुरा (श्यामपुर) की महिलाओं को अपने गांव में वर्ष 2006 में अपने लाडले बेटे बेटियों की पढ़ाई की चिंता सताने लगी इसके समाधान के लिए अपने गांव में विद्यालय की मांग रखी इस बदलाव को देखते हुए दानदात्री संस्था राजीव गांधी फाउंडेशन विद्यालय के संचालन में सहयोग के लिए एक परियोजना प्रस्तुत करके पाटौरकापुरा सहित चार गांव में विद्यालय संचालन का वर्ष 2007 में निर्णय किया।

जीवनशाला **क्या है** :–

डांग क्षेत्र के अति पिछड़े गांव में शिक्षा को भी मुख्यधारा में शामिल करने की ग्राम गौरव संस्थान की अनूठी पहल जहां बच्चों को मात्र अक्षर ज्ञान ही नहीं बल्कि उनके संपूर्ण विकास के लिए अच्छे संस्कार भी दिए जाते हैं । जीवनशाला में कागजी पढ़ाई न कराकर बच्चों को पर्यावरण, जल संरक्षण, समाज, परिवार एवं गांव इत्यादि के बारे में व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता है । ताकि विद्यार्थी अपने परिवार, गांव एवं देश के लिए एक जिम्मेदार नागरिक बने ।

ग्राम गौरव संस्थान गठितकर्त्ता समूह द्वारा शिक्षा प्रणाली पर गहन मंथन किया। जिसमें क्या अक्षर ज्ञान तक ही शिक्षा की प्रारंभिकता तय रहे या इनके साथ बालकों को गांव के बारे में जानना, गांव में आय बढ़ाने के क्या–क्या संसाधन हैं । संसाधनों के रखरखाव की समझ, दादी नानी के किस्से–कहानियों से जानकारी बढ़ाई जाए इन सब पर मंथन होकर अक्षर ज्ञान के साथ–साथ गांव का ज्ञान भी बच्चों की शिक्षा पद्धति में समावेश हो इन सब को साझा करने पर विद्यालय को "जीवनशाला" का नाम दिया गया ।

जीवनशाला के माध्यम से जीवनशाला संचालक गांव में से बालकों को जीवनशाला में भेजने के लिए अभिभावकों को जागृत करता और बालकों को जीवनशाला के समयानुसार प्रार्थना, अक्षर ज्ञान, की क्रमबध्दता के अनुसार पढ़ाना और एक कालांश में उसी गांव का या अन्य गांव का अनुभवी आदमी बच्चों को कहानी के रूप में गांव की आय के स्रोत, खेत खलियान, जंगल, भैंस, गाय, झरनों, नालों, आदि पर प्रकाश डालता । जीवन शालाओं की प्रगति को देखते हुए ग्राम गौरव संस्थान के गठन करता समूह के कार्य क्षेत्र से अन्य गांवों में भी जीवन शालाओं को खोलने की मांग बढ़ी समूह के लोगों के जीवन के बदलाव को देखते हुए 29 गांव में ओर जीवनशाला संचालित करने का निर्णय करके अपनी दानदात्री संस्था राजीव गांधी फाउंडेशन को एक परियोजना वर्ष 2008 में प्रेषित की ।

शिक्षा की उपेक्षा झेल रहा डांग क्षेत्र को जीवनशालाओं में अक्षर ज्ञान को बहुस्तरीय पद्धति के अनुरूप शिक्षा दी जाए ऐसे सुझाव कई शिक्षाविदों ने दिये । उसके अनुरूप आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में ऋषि वैली स्कूल में सभी जीवनशाला संचालको का प्रशिक्षण करवाया, और हर गांव में ग्रामीणों ने कही पर छप्परपोश, पाटोरपोश, टीन शेड़ सहित छत वाले भवन भी उपलब्ध करवाये इन जीवनशालाओ में डांग में शिक्षा की और क्रांति के बीज बोए जो अब असरवान हैं जीवनशालाओं में पढ़ने वाले बालकों की गुणात्मक वर्गीकरण निम्न प्रकार से रहा ।

जीवनशाला कार्यक्रम की प्रगति	
कुल गांव	33
कुल जीवनशाला	33
कुल अध्यापक	33
कुल बालक बालिकाए	825

जीवन शालाओं के संचालन में शिक्षा का अधिकार 2009 के तहत भवन खेल मैदान प्रशिक्षित अध्यापकों की अनिवार्यता के चलते जीवनशाला चलाने में संसाधनों का अभाव रहा इसीलिए जीवन शालाओं को विराम देना पड़ा और इन जीवन शालाओं के बालकों को पड़ोसी विद्यालयों में प्रवेश दिलवाने के लिए अभिभावकों को प्रेरित किया जिनका आज मार्च 2019 में शैक्षणिक स्तर का आकलन करें तो निम्न प्रकार से हैं

जीवनशाला कार्यक्रम के बच्चो का वर्तमान शैक्षणिक स्तर			
माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	स्नातक	कुल
225	130	150	505

खास बातें – डांग क्षेत्र में शिक्षा की क्रांति जीवनशाला से ही आई है

1. यह जीवनशाला ही थी कि जहां किसी गांव में प्राथमिक स्कूल के अभाव में बच्चों की प्राथमिक शिक्षा का कोई साधन नहीं था वहां 33 जीवनशाला के माध्यम से लगभग 825 बच्चों को अक्षर ज्ञान व व्यवहारिक ज्ञान दोनों ही प्रदान किया गया

2. आज यह सभी बच्चे आगे भी पढ़ रहे हैं तथा अपने जीवन में कुछ करने हेतु तत्पर हैं ।

3. जीवनशाला का सबसे बड़ा प्रभाव क्षेत्र के अभिभावकों की शिक्षा के प्रति सोच में बदलाव होना रहा है पहले जहां अभिभावक अपने बच्चों को मात्र घर में कार्य करने हेतु अथवा खेती एवं पशु चराने तक ही जीवित रखता था वही अब अभिभावक सबसे पहले बच्चों की शिक्षा के प्रति समर्पित है ।

4. पहले ग्राम विकास संगठन की बैठक में शिक्षा से संबंधित कोई बात नहीं होती थी वहीं आज गांव के लोग शिक्षा से संबंधित सुधार की आवश्यकता पर बात करते हैं ।

5. आपसी साझेदारी में पारस्परिक सहभागिता के तहत शुरू किये गये शिक्षा क्रांति में परियोजना द्वारा शिक्षकों का मानदेय स्कूल की स्टेशनरी, क्षमता वर्धन कार्यक्रम इत्यादि का सहयोग किया गया जबकि गांववासियों द्वारा स्कूल हेतु पाटोर, घर, फर्नीचर प्रदान किया गया इसके अलावा 26 जनवरी 15 अगस्त का कार्यक्रम गांववासियों द्वारा ही कराया जाता रहा, पीने के पानी की सुविधा एवं बिल्डिंग की छोटी मोटी मरम्मत व रोजमर्रा का खर्चा भी ग्रामवासियों द्वारा ही वहन किया गया आज जब सरकार गांव की एवं छोटी स्कूल पर लाखों खर्च करके भी स्कूल में बच्चों का नामांकन नहीं करा पाती वही स्वयं के खर्चे पर स्कूल में शिक्षा का खर्च उठाने का ऐसा जज्बा व उदाहरण विरले ही मिलते हैं ।

6. लडकियो की शिक्षा के प्रति सोच में बदलाव आया ।

सीखने योग्य बिंदु – शिक्षा का अधिकार एक्ट 2009 के कारण न चाहते हुए भी भारी प्रयासों के बावजूद जीवनशाला के तहत चल रहे स्कूलों के पास एक्ट के अनुसार संसाधन नही होने के कारण एवं स्थानीय शिक्षा विभाग के असहयोग के कारण 2011 में सारे स्कूल बंद करने पड़े । ग्राम गौरव के प्रयासों के कारण लगभग 825 बच्चों को दूसरी स्कूलों में नामांकन कराया परंतु आज भी कई गांवो में स्कूल का अभाव है ।

Glimpses of Jeevan shala

Children are enjoying the education

Child development – participating in the games competiton

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

JEEVAN SHALA

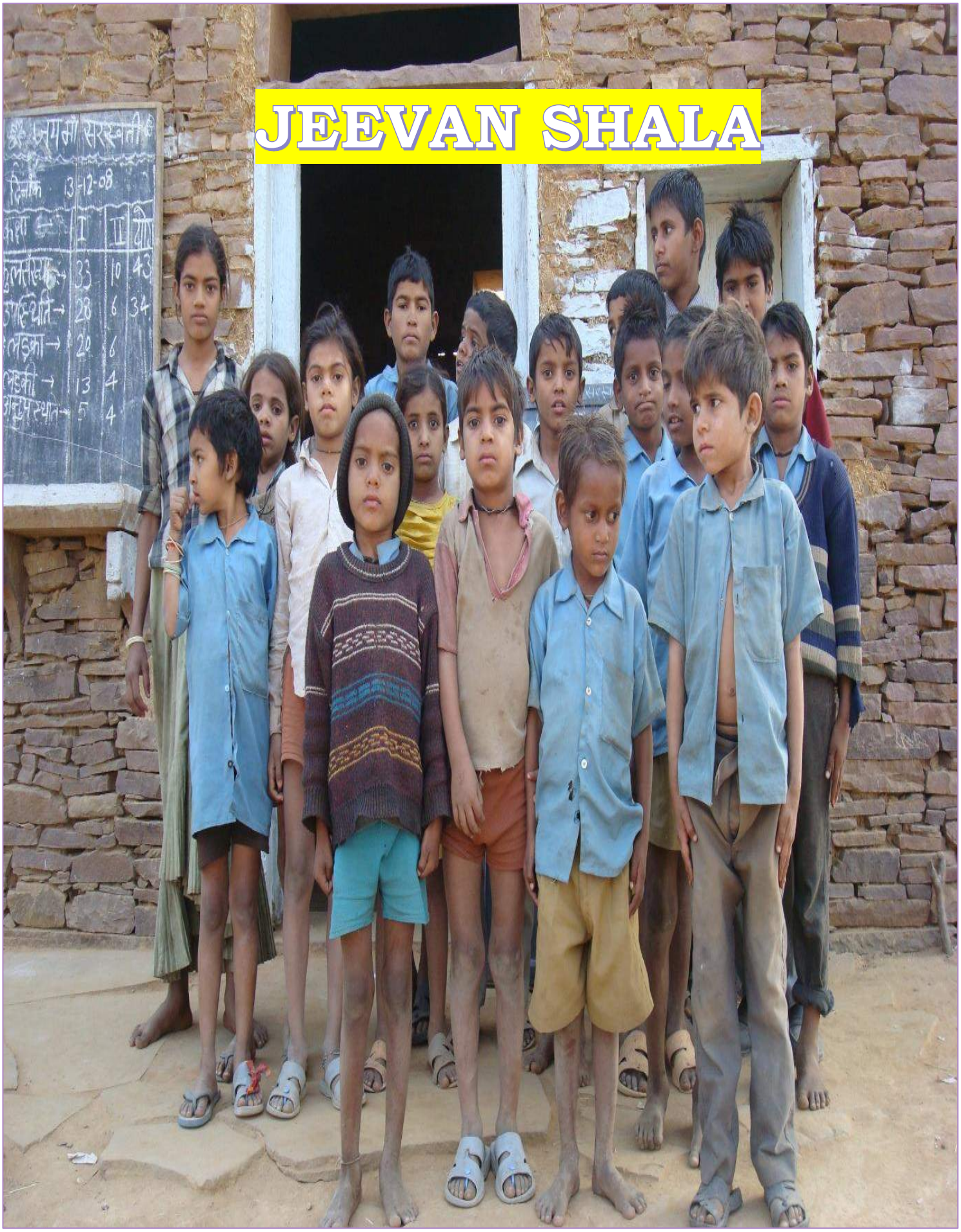

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

वंडररूम :—

बच्चों का सर्वांगीण विकास मात्र क्लास रूम में पाठ्यक्रम की पुस्तकों व पेन पेंसिल के साथ संभव नहीं है इसके लिए जरूरी है कि बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को भी निखारा जाये । बच्चे हमारी सबसे महत्वपूर्ण धरोहर है तथा अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है इसीलिए इनके सर्वांगीण विकास के लिए परियोजना क्षेत्र के बच्चों को समाज की अमूल्य धरोहर बनाने के मकसद से ग्राम गौरव सस्थान ने वंडररूम नाम की पहल की शुरुआत परियोजना क्षेत्र के 2 गांव बामूदा व बिरहटी सुक्कापुरा से की ।

परियोजना क्षेत्र के बच्चों की शारीरिक क्षमता एवं मानसिक विकास बढ़ाने तथा उनमें पाठ्यक्रम की किताबों के अलावा खेल खेल के माध्यम से तथा अन्य सरल तरीके से ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से वंडरस्कूल शुरू किए गए

गतिविधिया :—

1. वंडर स्कूल के बालक/बाालिकाओ को भ्रमण के माध्यम से ग्रामीण बालको को शहरी संस्कृति व शहरी बालको को ग्रामीण संस्कृति से रूबरू करवाया जाता है ।

2. चित्रकला, हस्तकला, संवाद, ग्रुपचर्चा, प्रोजेक्टवर्क, संगीत, खेलकूद, अभिनय इत्यादि तरीकों से महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी जाती है तथा बच्चों की प्रतिभा को निखारने का प्रयास भी किया जाता है।

वंडररूम पहल ने परियोजना क्षेत्र के बच्चों के विकास में जबरदस्त भूमिका अदा की है वंडररूम में भाग लिये बच्चों की बोलचाल की भाषा, अभिनय, क्षमता, अभिव्यक्ति, कौशल, लिखने की कला ज्ञान, आत्मविश्वास, ज्ञान व टीम भावना जैसी क्षमता में अभूतपूर्व परिवर्तन आया हैये बच्चे भीड़ में भी अलग ही दिखाई दे जाते है ।

3. बच्चों को अभिनय कला के माध्यम से महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्रदान की जाती है तथा अभिनय कला के द्वारा बच्चों को अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने की कौशलता बढ़ाई जाती है ।

4. वर्ष में दो बार आयोजित ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन शिविर के दौरान गांव के बच्चों को बड़े शहर में जाने का मौका मिलता है उनको वहां शहर की स्कूल देखने तथा वहां के बच्चों के साथ घुलने का अवसर प्रदान कराया जाता है इसमें गांव के बच्चों के ज्ञान व कौशल में अभूतपूर्व वृद्धि हुई उनमें आंतरिक विश्वास का विकास हुआ जिन्होने उनकी (पर्सनैलिटी) अभिव्यिक्ति बनाने में भारी मदद की।

5. इसी तरह शहरी स्कूलो के बच्चें भी बामूदा व बिरहटी, सुक्कापुरा गांव में आए तथा 2 से 3 दिन इन गांव में रहे यहां उन्होंने गांव के घर देखे, गांव में उपलब्ध पशुधन, खेत, जलसंरचनाएं, जंगल, इत्यादि का भ्रमण किया गांव के लोगों की जिंदगी से रूबरू हुए एवं बच्चों से मुलाकात की इसमें उनको गांव की घनी सांस्कृतिक विरासत की जानकारी हुई ।

जीवनशाला से बालिकाओं में उभरी प्रतिभा –

ग्राम फागनेकापूरा (महाराजपुरा) में संचालित जीवनशाला ने अपने गांव के बालकों में शिक्षा की प्रतिस्पर्धा की भावना को परवान चढ़ाया है जीवनशाला संचालिका मंतोषबाई अपने नाना मामा की सलाह से मैट्रिक पास करके संशयमय कि स्थिति में अपनी किशोरावस्था के पायदान पार कर रही थी इन्हीं दिनों में इनके गांव में जीवनशाला खोलने की सूची में नाम आया । ग्राम संगठन की बैठक में जीवनशाला में पढ़ाने वाले की तलाश होने लगी पढ़ाने वाले के मापदंड के अनुसार आसपास कोई पढ़ाने वाला पहचान में नहीं आया । आखरी में मंतोषबाई पर किये विश्लेषण में ग्राम संगठन ने संपूर्ण पात्रता पाई । गांव की संकुचित विचारधाराओं की दीवार भी मंतोषबाई को झकझोर रही थी पर मंतोषबाई ने हिम्मत दिखाते हुए परिजनों के सामने अपना पक्ष रखकर जीवनशाला में बालक पढ़ाने की ढान ली । आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में ऋषिवैली स्कूल में एम.जी.एम.एल पद्धति के प्रशिक्षण के लिए अकेली लड़की अन्य जीवनशाला संचालको के साथ निकल पड़ी डांग के इन दुर्गम जगहो के अनुसार बढी पहल थी प्रशिक्षु के रूप में मंतोषबाई ने प्रशिक्षण प्राप्त करके फागनेकापूरा (महाराजपुरा) में जीवनशाला का विधिवत शुभ शकुनो के अनुसार शुभारम्भ किया वर्ष 2009 से 2012 तक जीवनशाला को एक अभियान के तौर पर संचालन दिया जिससे मंतोषबाई का भी नेतृत्व उभरा और मंतोषबाई की जीवन काल में पढ़ने वाले बालकों ने अपनी पढ़ाई में प्रवीणता दिखाई और डांग के इस दुर्गम क्षेत्र के बालकों ने विज्ञान जैसे विषय भी चुने जीवनशाला के विद्यार्थी रहे **"लक्ष्मण सिंह गुर्जर की यह है जुबानी"** लक्ष्मण से कक्षा की जानकारी लेने पर लक्ष्मण ने कहा मैं उच्च माध्यमिक की उच्चतम् कक्षा में अध्ययनरत् हूँ पर मैं हमारे गांव में संचालित जीवनशाला को धन्यवाद देना चाहता हूं जीवनशाला ने हमें पढ़ने लिखने की ओर अग्रसर किया अक्षर ज्ञान के साथ–साथ जीवनशाला ने हमें स्थानीय सामान्य ज्ञान का भंडार से भरपूर किया है । जिससे हमें संपूर्णता का सुकून प्रतीत होता है लक्ष्मण सिंह से भविष्य को लेकर बातचीत करने पर कहता है कि मुझे अवसर मिला तो मैं सरकार की व्यवस्थाओं में जाकर गांव विकास के लिए पारदर्शिता व पारदर्शिता का व्रत लेकर समर्पण भाव से कार्य करूंगा लक्ष्मण सिंह के अनुसार लक्ष्मण का सपना अपनी मजबूत नींव के अनुसार साकार होता दिख रहा है । लक्ष्मण ने कहा कि घरेलू तंग व्यवस्थाओं के चलते कक्षा 10 में 70 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण होने का सोचा जो मुझे 76 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए आज मै विज्ञान वर्ग से कक्षा 12 कि पढाई कर रहा हूँ एवं मै जीवनशाला को कायाकल्प की नीव मानता हूँ

Exposure . Best way to learn

Pics of Jeevanshala

7. स्वास्थ्य

ग्राम गौरव संस्थान गठितकर्त्ता समूह ने वर्ष 2006–07 में परियोजना क्षेत्र के ग्राम संगठन के साथ संवाद के दौरान यह महसूस किया कि परियोजना क्षेत्र के गाव में स्वास्थ्य की स्थिति बहुत ही ज्यादा द्यनीय है । गांव तथा आसपास के 20–25 कि.मी क्षेत्र में आकस्मिक स्थिति में कोई स्वास्थ्य सुविधा उपलबध नही है गांव वालो कि इसी मांग को देखते हुए ग्राम संगठनो कि अनुरोध पर ग्राम गौरव संस्थान के गठितकर्त्ता समूह ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने कि ठानी ।

इस परियोजना का उद्देश्य परियोजना क्षेत्र की गर्भवती महिलाओ का सुरक्षित प्रसव कराना था । पूर्व में डांग के परियोजना क्षेत्र में के सुरक्षित प्रसव के लिए करौली तक कोई सुविधा उपलब्ध नही थी डांग क्षेत्र के उबड़–खाबड़ ढलाऊ रास्ते, नदी, नाले, व दूरभाष के अभाव के कारण अकस्मात स्थिति में प्रसुता को समय पर अस्पताल पहुचाने में परिवार को खासी परेशानी झेलनी पड़ती थी जिसके कारण डांग क्षेत्र में प्रसुता की मृत्यु भी हुई थी । जबकि सरकार ने कई कल्याणकारी योजनाओं के तहत ऐसी समस्याओं का समाधान निकाल कर व्यवस्थाएं संचालित कर रखी थी पर डांग में यह व्यवस्था चलना मुश्किल हो रहा था । ग्राम संगठन एवं सस्थान के बीच संवाद उपरान्त 2 ग्राम पंचायतों के 10 गांवों में सुरक्षित प्रसव कराने का निर्णय लिया गया ।

गांव चौबेकी में मिलन सेंटर स्थापित करके हेल्पलाइन सुविधा चालू कि गई । इस सेन्टर पर संस्था का कोई भी कार्यकर्ता 24 घंटे फोन सुनने के लिए उपलब्ध रहता था । सूचना मिलते ही कुछ ही घंटों में उस परिवार तक एंबुलेंस पहुंचाई जाती इसके बाद उस महिला को जिला चिकित्सालय में जननी सुरक्षा योजना में संस्थागत डिलीवरी कराई जाती बहुत ज्यादा खराब स्थिति में ग्राम गौरव संस्थान द्वारा डांग क्षेत्र की गांव 20 दाईयो को सुरक्षित मातृत्व हेतु प्रशिक्षण दिया गया जिसमें प्रशिक्षण के दौरान भी ममता किट भी उपलब्ध कराए गये ।

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा साल में दो बार गहन सर्वे किया जाता जिसमें गांव की सभी गर्भवती महिलाओं का पूरा आंकड़ों का संधारण किया जाता इस प्रयास से 10 गांव की 450 महिलाए लाभान्वित हुई ।

परियोजना अवधि के दौरान सुरक्षित मातृत्व के लिए किये गये प्रयासो से ग्रामीण समुदाय में जागृति आयी । वर्ष 2012 के उपरान्त डांग क्षेत्र के अधिकांश गांव में संचार के साधनो कि उपलब्धता बढने लगी, एम्बुलेस सुविधा भी गांव तक पहुचने लगी व संस्था के प्रयासो के कारण सुरक्षीत मातृत्व में जननी सुरक्षा योजना में ग्रामीण समुदाय का विश्वास बढ़ा । इसलिए सीधे तौर पर इस योजना को संचालित करने की जरूरत महसूस नही हुई ।

- इन 10 गांवो में IMR+MNR (0) जीरो हो गई ।
- गांव वालो का जननी सुरक्षा योजना में विश्वास बढ़ा व 100 % संस्थागत् डिलेवरी होने लगी
- एम्बुलेन्स के लिए 50% राशि ग्राम गौरव संस्थान व 50% राशि स्वयं परिवारो द्वारा वहन कि गई ।
- पहले लोग अंधविश्वास, झाड़ फूक, करते थे वो धीरे–धीरे समाप्त हो गया ।
- गांवो का ANC/PNC के प्रति जागरूकता बढ़ी तथा स्वास्थ्य सेवा की स्थिति पहले से बेहतर हुई ।

सारणी – स्वास्थ्य परियोजना की प्रगति	
गांव की संख्या	10
संस्थागत डिलीवरी	150
प्रस्तुति महिलाओं को अस्पताल पहुंचाया	150
दायी प्रशिक्षण	06
वितरित किए गए ममता किट	250
टीकाकरण (महिलाओ का)	130
दायी द्वारा साधारण जापा करवाया	105

8. पशुपालन एवं बकरी पालन

पशुपालन :– डांग क्षेत्र में पशुपालन आजीविका का सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है इस क्षेत्र में प्राय पड़ने वाले अकाल अथवा जलवायु परिवर्तन की स्थिति में जब किसान के पास एक सीजन की खेती नहीं कर पाता तब पशुपालन ही बड़ा साधन है जिसके कारण परिवार अपना जीवन यापन कर पाता है । इन्हीं डांग क्षेत्र के गांव में जब पोखर, पैगारा व ताल नहीं थे तो ग्रामवासियों को अपने पशुओं को ग्रीष्म ऋतु में बहुत दूर तराई के क्षेत्रों में पीने के पानी व चारे की व्यवस्था हेतु जाना पड़ता था । परंतु ताल, पोखर निर्माण के बाद गांव में पशुओं के लिए भरपूर पानी, फसल उत्पादन के कारण चारे की व्यवस्था सुगम् हो गई । इससे पशुओ के दूध उत्पादन में अभुतपूर्व वृध्दि हुई है।

बकरीपालन :– यह सर्वविदित है कि बकरी पालन भूमिहीन एवं कम भूमि वाले किसानों के लिए आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है उस पर डांग जैसे वर्षा सिंचित उबड़–खाबड़ व ढलाऊ क्षेत्रों में तो बकरी पालन की उपयोगिता और बढ़ जाती है डांग क्षेत्र के किसान बकरी पालन इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि उसको उसके चारे व पानी की इतनी चिंता नहीं करनी पड़ती तथा बकरी अपना जुगाड़ स्वयं कर लेती है तथा 6 से 10 बकरी वाला परिवार साल में चार–पॉच बकरी बेच 10000 से 15000 रू आसानी से कमा लेता है जो उसके लिए जरूरत के वक्त बहुत काम आता है इस क्षेत्र में अध्ययन करने पर यह भी निष्कर्ष निकाला गया है कि बकरी पालन से आजीविका सुदृढ़ करने में अथाह संभावनाएं हैं बकरी पालन में नस्ल सुधार, दूध उत्पादन, दूध के विभिन्न उत्पाद की बाजार में भारी मांग है जिस पर कार्य करके गांव के किसानों की आजीविका बढ़ाई जा सकती है अतः 2017 के उपरांत ग्राम गौरव संस्थान ने बकरी पालन के क्षेत्र में कार्य करने की ठानी है।

ग्राम गौरव संस्थान डांगवासियों में बकरी पालन को आजीविका का महत्वूर्ण व्यवसाय बनाना चाहता है जिसमें बकरी का दूध बकरी पालक के काम आने के साथ–साथ, दूध को उचित भाव में बाजार में बेचा जा सके । बकरी की मेंगनी (गोबर) का खाद जो खेती के लिए बहुत उपयोगी होता है, उसको नवाचार करके खेतों में काम लिया जाए । बकरी का बच्चा उचित दामों में बिके, इसका मोल भाव का पता बकरी के मालिक तक पहुंचे । यह सारे प्रयासों में ग्राम गौरव संस्थान अपने परियोजना क्षेत्र मे बकरी पालको के साथ कर रहा है ।

पशुसखियो को बकरी पालन पर प्रशिक्षण **द गोट ट्रस्ट लखनऊ"** से दिलवााया गया है जिसमें रोगों की पहचान, रोगों का निदान, बकरी के खाद में नवाचार करने के बारे जानकारी दी गई है ।

पशुसखी

ग्राम गौरव संस्थान डांग क्षेत्र में ग्रामीणो कि आजीविका सुदृढ करने के प्रयासो में प्रयासरत् है आजीविका के विभिन्न क्षेत्रो में संस्थान द्वारा तैयार किये गये स्वयं सेवको अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है उन्ही में से पशुसखी भी एक है ।

पशुसखी गांव की वो महिलाए है जो ग्राम संगठन व ग्राम गौरव संस्थान के आपसी समन्वय से चुनी जाती है, जो गांव व आसपास के क्षेत्र में पशुपालन की जानकारी स्वेच्छा से दे सके तथा जिसने संस्था द्वारा दिये गये प्रशिक्षण को सफलता पूर्वक प्राप्त कर लिया है इन्ही महिलाओ को पशुसखी के नाम से जाना जाता है । संस्थान द्वारा परियोजना क्षेत्र में 22 पशुसखियो को स्थापित किया गया है।

ये पशु सखी वर्तमान में अपने गांव तथा आसपास के क्षेत्रो में आकस्मिक जरूरत के समय मदद कर रही है तथा जरूरत के वक्त गांव में पशुओ को चिकित्सा की सुविधा न होने के कारण यह गांव वालों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है पशुसखी पशुपालकों को पशुपालन, प्रबंधन, खानपान, सामान्य बीमारी से रोकथाम के तरीके इत्यादि की जानकारी दे रही है । पशु सखी वर्ष में दो बार इच्छुक पशु पालको के पशुओ का कृत्रिम गर्भाधान एवं टीकाकरण का कार्य करती है तथा सामान्य बीमारी होने पर दवाई भी उपलब्ध कराने का कार्य करती है ।

बकरी के दूध से पौराणिक विधि रई–बिलोना द्वारा घी निकालकर **"द गोट ट्रस्ट लखनऊ"** के द्वारा लखनऊ में उन उपभोक्ताओं को बेच रहे हैं जो आयुर्वेद के द्वारा निरोगिता में विश्वास रखते हैं । साथ ही आगामी योजनाओं के अनुसार बकरी का दूध, छाछ उपयोगी होने के लिए पैकिंग के रूप में बिकने लगे ।

माया देवी पत्नी श्री खिलाड़ी गुर्जर निवासी अलवतकी, ग्राम पंचायत राहिर, तहसील मंडरायल, जिला–करौली की रहने वाली है मायादेवी से जब बकरी के दूध को लेकर चर्चा की गई तो बताया कि यह सही बात है कि हमारी दादी–नानी यह सुनाती थी कि बच्चों में कुपोषण बढ़ जाए तो बकरी के दूध की धार पिलाओ उस जमाने में आज जिन बीमारियों का नाम सामने हैं उनका पहले नाम नहीं होगा पर गरेड़ा जैसी बीमारियों में बकरी का दूध पिलाने की सलाह देते । आदमी के शरीर में चंचलता, कुदना, फादना, दौड़ना आदि गुण होना भी बकरी व गाय के दूध में ही बताया जाता रहा है माया देवी ने यह भी कहा कि डांग की बकरी अनेकों प्रकार के पेड़ धौक, बरबरा, झाड़ी, जाड़, हिंगोट, रोहिडा, गूगल, बेर, उंगा, खरेटी, गांगड़ी सहित अनेकों प्रकार की वन संपदा का चारा चरती है ।

माया देवी ने बताया कि उसने स्वयं नित्य बकरी का दूध खरीद कर औटा, पकाकर, दही जमाकर रई बिलौना से बिलोकर छाछ व घी तैयार किया । मायादैवी ने 1 किलो बकरी के दूध में बरसात के दिनों में 19 से 30 ग्राम घी निकलता है व सर्दियों में 25 से 30 ग्राम व गर्मियों में 17 से 19 ग्राम घी निकलता है मैंने ढाई माह में 533.500 ग्राम बकरी का दूध ₹30 प्रति किलो की दर से खरीद कर ₹16005 का कुल खरीदा एवं उसका दही जमा कर रई से घी निकाला जिसमें 14.327 ग्राम घी निकला जिसको **"द गोट ट्रस्ट लखनऊ"** को ₹2500 प्रति किलो के भाव से ₹35817.50 पैसे का बेचा जिससे शुद्ध मुनाफा 75 दिन में ₹19812.50 पैसे का हुआ इस कार्य से गांव व आसपास के क्षेत्र में बकरी पालन के प्रति रूझान बढ़ा है । अपने जीवन में कुछ लोगों के अंदर औरो के लिए हितकर कोई काम करने का भाव जब होता है और उनके प्रयास सफलता की ओर बढ़ते हैं तो बेहद आवभाव, दर्शना प्रतीत होने लगता है यह बात माया देवी पर सटिक बैठती है पैसे के रूप में बहुत कुछ हासिल करना मायादेवी का मकसद नहीं है पर डांग के सर्वांगिण विकास की मुख्यधारा में अपने आप को साझा करते हुए समर्पित भाव से कार्य कर रही है बकरी के दूध, घी, छाछ, मिगनी की मांग स्वास्थ्य व उत्पादन में मांग बढ़ जाए इस आस में ही माया देवी गौरवान्वित है ।

GOAT GHEE MAKING PROCESS BY GANGA DEVI

PASHU SAKHI TRAINING

Monthly meeting of Pashu Sakhi

Service in field area
by trained staff

पशुपालन के प्रभाव –

1-धर्मताल व पोखर जैसी जल संरचनाओ के कारण पशुओ के लिए पीने का पानी की व्यवस्था होने सेंलगभग 2500 परिवारो का मवेशियो के साथ पलायन रुक गया है ।

2. दुधारू पशुओ के दूध उत्पादन में 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है ।

3. परिवार की आय में दुध उत्पादन व घी बेचने से प्रति वर्ष ₹10000 से 25000 की अतिरिक्त आमदनी हुई है

4. पशुपालन का कृत्रिम गर्भाधान की ओर रूझान हुआ है ।

5. परिवारो की चारा खरीदने पर होने वाले खर्चे में प्रति वर्ष ₹10000 से 30000 की कमी आई है

6. परियोजना क्षेत्र के गांव में लगभग 500 परिवार चारा बेचकर ₹10000 से 25000 की अतिरिक्त आमदनी करने लगे है।

7. परिवार की खुशी सुचंकाक में बढोतरी हुई है क्योकि पलायन के कारण टूटने वाले परिवार एक साथ रहने लगे है।

8. सामान्य उपचार की व्यवस्था गांव में ही उपलब्ध होने के कारण पशुओ की बिमारी में होने वाले खर्चो में कमी आई है ।

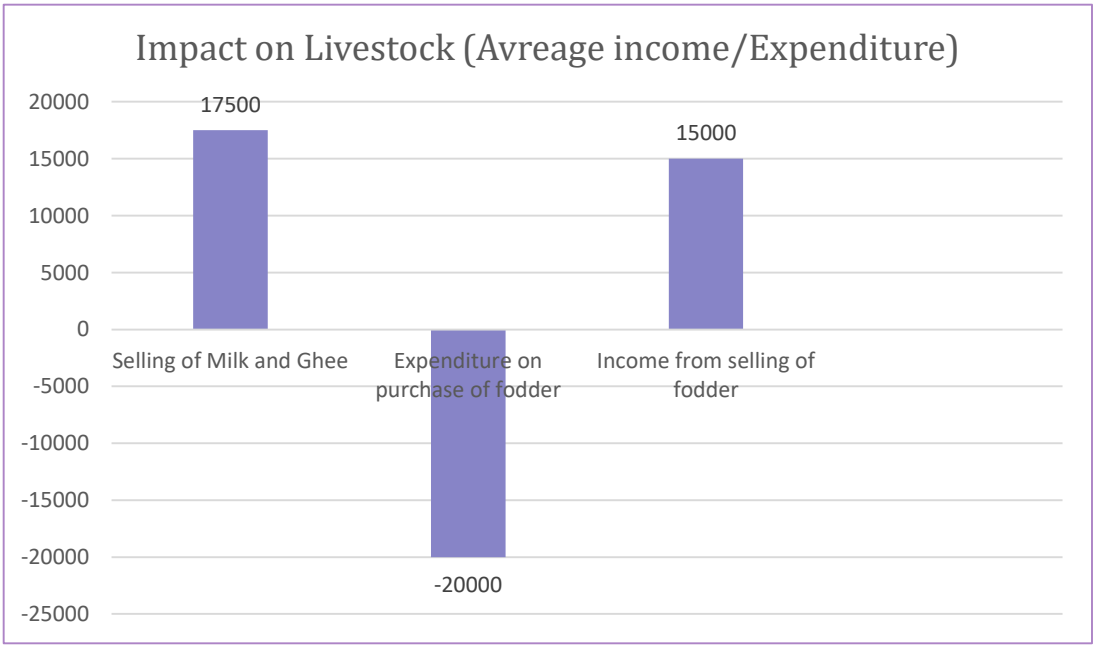

One study carried out by independent consultant proved that approximately 105 % increased in average income of beneficiary farmers from animal husbandry.

Pashu sakhi is doing primary treatment

बकरी पालन के प्रभाव :–.

1. पशुसखियो द्वारा 20 गांव के लगभग 350 परिवारो को बकरी पालन से संबंधित सेवाए दी जा रही है

2. लगभग 500 बकरीयो को कृमिनाशक एवं टीकाकरण किया गया है जिसके कारण बकरीयो की मृत्यु दर में कमी आई है।

3. पशुसखियो द्वारा 202 बकरी पालन शिविर आयोजित किये गये है जिसमें 550 बकरी पालको को बकरी का रखरखाव, सामान्य उपचार, खान–पान, बाजार से जोड़ने सें संबंधित जानकारी प्रदान की है ।

9. महिला सशक्तिकरण

डांग क्षेत्र कि महिलाओ को समाज के मुख्य धारा में लाने एवं उनके सशक्तिकरण हेतु ग्राम गौरव संस्थान दृढ संकल्प है हालाकि ग्राम गौरव द्वारा सीधे महिलाओ के साथ स्वास्थ्य कि एक परियोजना के अलावा सीधे तौर पर कार्य नही किया गया है परंतु जल व मृदा संरक्षण के कार्यो से सबसे ज्यादा फायदा गांव कि महिलाओ को ही हुआ है जिसकी चर्चा हम बाद में करेगे ।

पूर्व में संस्थान के कार्यकत्ताओ द्वारा राजस्थान के कुछ जिलो में स्वयं सहायता समूह का कार्य किया गया था जिसमें संस्थान द्वारा 79 समूह गठित किये गये समूह के माध्यम से 859 महिलाए इस मिशन से जुडी स्वयं सहायता समूह के माध्यम से गांव कि महिलाओ को जल संरक्षण के प्रति जागृत किया गया तथा कार्य कि योजना व क्रियान्वयन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की गई । समूह बनाने के उपरांन्त महिलाओ के आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई ।

1. जल व मृदा संरक्षण कार्यो से पलायन के क्षेत्र में अभूतपूर्व कमी आई जिससे घर के पुरूष लोग गांव मे ही रहने लगे जिसमें घर पर आने वाली बहुत सी समस्याओ का अन्त हुआ व परिवार कि खुशी के सुचकांक में बढ़ोतरी हुई ।
2. पीने के पानी कि डांग क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या है जिसके लिए महिलाओ को कोसो दूर पानी लेने जाती थी तथा पीने के पानी के प्रबंधन में घंटो बिगाड़ती थी पानी के प्रबंधन में महिलाओ को अत्यन्त बोझ का सामना करना पड़ता था पर पोखर व ताल के निर्माण से महिलाओ के बोझ में बहुत ज्यादा कमी आ गई है अब महिलाओ को पीने के लिए व घरेलु कायो के लिए सुगमता से पानी उपलब्ध हो रहा है ।
3. पहले गांव कि महिलाओ को पति के साथ ही ग्रीष्म ऋतु में पशुओ के साथ पलायन पर जाना पड़ता था पर अब ताल बन जाने से उनका व उनके घर में पुरूषो का पलायन रूक गया है जिससे वो अपने घर के वृध्दजल व बच्चो कि देखभाल सही ढग से कर पा रहे है।
4. अब गांव कि महिलाए बचे हुए समय का उत्पादन के कार्यो में लगा रही है इससे गांव में बच्चो कि शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण में बदलाव आने लगा है ।

10. पर्यावरण

ग्राम गौरव संस्थान के गठनकर्त्ता समूह द्वारा पिछले 3 दशको से पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य कर रहा है । इस दौरान संस्थान के प्रयासो से कार्यक्षेत्र के लोगो में पयर्यावरण संरक्षण के प्रति जाग्रति आई है पर्यावरण संरक्षण हेतु निम्न प्रकार की गतिविधिया कि जा रही है –

1. पदयात्रा
2. दिवार लेखन
3. पर्यावरण चेतना शिविर
4. स्कूलो में पर्यावरण जागृति हेतु संगोष्ठी

1. पदयात्रा – ग्राम गौरव संस्थान कार्यकर्त्ताओ द्वारा गांव–गांव में पदयात्रा करके वनसंपदा के उन पौराणिक तरीको को उभारकर प्रतिष्ठित करवा रहा है जिनके चलते वन संरक्षण के प्रति लोगो की आस्था बढे । पदयात्राए अक्षरसः पर्यावरण को बचाने के लिए चर्तुमासा (जुलाई से अक्टूबर) में कि जाती है जो डांग क्षेत्र में 2001 से 2018 तक 28 बार पदयात्रा करके 1600 कि.मी. की दूरी तय की है जिसमें 84 गांवो में 650 नुक्कड सभा करके जल, जंगल, जमीन संरक्षण करने हेतु लोगो को प्रेरित किया गया है एवं पदयात्रा के दौरान पिछले वर्षो में देवबनीयो के संरक्षण हेतु वृक्षारोपन किया व वन सुरक्षा समितियो का गठन करके गांव वार वन संरक्षण को दस्तुर बना रहा है ।

पदयात्रा से लोगो में पर्यावरण के प्रति चेतना बढ़ी है जिससे कि 15 गांवो में कुल्हाडी बंद पंचायते शुरू हुई और लोग जंगल को बचाने कि मुहीम से जुड गये है एवं 10 गांवो कि उजड़ी देवबनीयो का पुनः संरक्षण किया गया है जो हरीभरी व सघन होती जा रही है

2. दिवार लेखन – पदयात्रा के दौरान पदयात्राी दिवारो पर पर्यावरण संरक्षण से संबंधित नारे लिखते है ताकि गांव वासियो खासकर गांव की नई पीढी में पर्यावरण के प्रति जागरूक पैदा करते है।

1. पेड़ कटेगे काल पडेंगा । सासो का दुशकाल पडेगा ।।
2. जंगल है तो जहान है । वर्ना सब सुनसान है ।।
3. अरावली हरयाली होगी । घर–घर में खुशहाली होगी ।।
4. मत काटो भई मत काटो । हरे पेड़ को मत काटो ।।

इस तरह के गांवो में 2500 जगहो पर दिवार लेखन किया गया है ।

3. पर्यावरण चेतना शिविर – ग्राम गौरव संस्थान द्वारा पर्यावरण चेतना शिविर में आमंत्रित करने के लिए नुक्कड सभाए की जाती है उन नुक्कड सभाओ में लोगो के साथ अभ्यास किया जाता है कि लोगो की सोच में वन संपदा का भाव मानस पटल पर तैयार हो । शिविर मे वनो की अवैध कटाई से हो रहे पर्यावरण के नुकसान पर गहन मंथन किया जाता है जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना लाई जा सके । संस्थान द्वारा वर्ष 2002 से 2018 तक कार्य क्षेत्र के गांव में 75 शिविरो में 3500 ग्रामीणो के साथ संवाद कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृति पैदा की है

4. **स्कूलो में पर्यावरण जागृति हेतु संगोष्ठी** – संस्थान कार्यकत्ताओ द्वारा कार्य क्षेत्र कि शालाओ में पर्यावरण संरक्षण जागृति बालको कि संगोष्ठी समय–समय पर आयोजन करता है इसमें बालको से निबंधो व चित्रकला के माध्यम से एवं मौखिक प्रतियोगिता से पर्यावरण सरक्षण को लेकर संवाद स्थापित करता है जिससे नई पिढी में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृति पैदा हो । संस्थान द्वारा कार्यक्षेत्र के लगभग 25 शालाओ में 4000 बालको के साथ शिविर आयोजित किये जा चुके है ।

11. आपदा प्रबंधन

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा राष्ट्रीय आपदाओ में भी अपनी सहभागीता निभाई है । संस्थान को उत्तराखंड व जम्मु कश्मीर में आयी आपदाओ में राष्ट्र की सेवा करने का मौका मिला ।

उत्तराखंड त्रासदी :–

वर्ष 2013 के 17 जून को उत्तराखंड के भारतीय आस्थाधाम शिरोमणी केदारनाथजी के स्थल के आस–पास हुई त्रासदी में संपूर्ण भारत वर्ष का दिल दहला दिया सभी के मन में पीडित समुदाय सहित हिमालय के छटाओ के रूद्रणरूपी इस त्रासदी में सहयोगी बनने का भाव था । ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकत्ताओ ने इस त्रासदी को सुना व पढ़ा तो त्रासदी स्थल पर पहुचने कि योजनाए बनने लगी । राजीव गांधी फाउण्डेंशन के द्वारा त्रासदी से पीडित लोगो कि राहत कि योजना के साथ ग्राम गौरव संस्थान ने अपना संपर्क साधते हुए 26 जून 2013 को संस्थान के आश्रम स्थल पर एक बैठक बुलाकर संस्थान के

08 कार्यकत्ताओ के दल को उत्तराखंण्ड जाना तय हुआ । 27 जून को संस्थान परिसर सुक्कापुरा बिरहटी से रवाना होकर हरिद्वार पहुचे हरिद्वार में सहयोगियो के साथ कार्य योजना बनाकर 2 दलो में विभाजित करके एक दल को श्रीनगर एवं दूसरे दल को गुप्त काशी में जाना तय हुआ श्री नगर वाले दल ने रसद सामग्री, वस्त्र आदि कि पैकिग करके गाडियो में लदकर के आगे पहुचाने का कार्य किया व गुप्त काशी वाले दल ने मन्दाकिनी नदी को पार करके हर पीड़ित परिवार को 50 कि.लो. रसद सामग्री पहुचाई रामवाड़ा, गौरीकुण्ड, सोनप्रयाग सहित सैकड़ो गांव में चापर, खच्चर व पैदल पीठ पर सामान लदकर 1000 पीडित परिवारो तक पहुचाया एवं इसी श्रृंखला में तौसी, त्रियुगीनारायण से लेकर रूद्रप्रयाग तक 600 पीडित परिवारो का एक विस्तृत सर्वे करके राज्य सरकार को प्रेषित किया ।

जम्मु कश्मीर **त्रासदी** :–

वर्ष 2014 के सितम्बर माह में लगातार 06 दिन तक मुसलाधार बरसात से झेलम नदी के सहायक नालो में आये पानी के उफान से कश्मीर क्षेत्र के सैकड़ो गांव में लोगो का जीवन अस्त–व्यस्त कर दिया कई परिवारो के आशियाना उजड़ गए खेत, खलिहान, घर आदि को काटकर झेलम नदी ने बहा लिया कई परिवारो में तो जनहानी भी हो गई खाने को अन्न, पीने का शुध्द पानी भी नही मिल रहा था चारो तरफ त्राही–त्राही हो चुकी ऐसे में लोगो के उपर मुसीबत के पहाड़ आ गये इस त्रासदी की पूरे देश में चर्चा होने लगी और जम्मू कश्मीर के पीडित परिवार कि सहायता हेतु हाथ खडे होने लगे ऐसे में ग्राम गौरव संस्थान और राजीव गांधी फाउण्डेशन ने भी कश्मीरी लोगो कि सहायता करने कि ढ़ानी 23 सितम्बर 2014 से 30 सितम्बर 2014 तक ग्राम गौरव संस्थान के 03 सदस्य दल ने कश्मीर कि वादियो के अनन्तनाग शहर में पहुचकर के झेलम नदी के आस–पास हुई हानी या बाड प्रभावित क्षेत्र का डोर टू डोर सर्वे किया और डवापुरा खनावल सहित 08 वार्डो के 1000 परिवारो तक टीम पहुची जिसमें 698 परिवारो के मकान पुरी तरह से ध्वस्त हो चुके थे व 302 परिवारो के मकान रहने लायक स्थिति में नही हरे उनमें दरार आ चुकी थी जिन परिवारो के मकान ध्वस्त हो चुके थे वो लोग बहार ही समतली मैदान में रात गुजार रहे थे ।

राजीव गांधी फाउण्डेशन के सहयोग से लोगो को रसद सामग्री, टेण्ट, कपड़े आदि के पैकट भेजे गये और इन पैकेट को ग्राम गौरव संस्थान कार्यकत्ताओ ने अनन्तनाग, डगापुरा, खनावल, दारूनमढपुरा, कुकरनाग, वैरीनाग के आसपास के गांवो में एक हजार परिवारो को राहत सामग्री के पैकेट वितरीत किये । ऐसे में ग्राम गौरव संस्थान टीम ने सर्वे के दौरान लोगो से निकलकर आयी समस्या के समाधानो को सूचिबंध्द करके आने वाले 05 वर्षो के लिए पिडित परिवारो महिला, बच्चे आदि के बारे में परियोजना बनाकर राजीव गांधी फाउण्डेशन को प्रेषित कि गई ।

12. अभिसरण (Convergence)

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा डांग क्षेत्र में किये गये वर्षाजल एवं मृदा संरक्षण के कार्यो से डांग के ग्रामीण समुदाय कि अजिविका सुदृढ होने के अभुतपूर्व परिणाम सामने आये संस्थान द्वारा गांव संगठनो के बैठको में ग्रामीणे के साथ उपरोक्त कार्य कि महत्वता सुनिश्चित हुई । इन कार्यो के प्रभावो से प्रभवित होकर ग्रामीण समुदाय द्वारा ग्राम संगठनो के माध्यम से संस्थान के पास जल व मृदा संरक्षण संरचनाओ के लिए कार्य क्षेत्र के चार संकुलो से 690 संरचनाओ के प्रस्ताव आये । इतनी बडी संख्या में आये संरचनाओ को परियोजना के आर्थिक सहयोग से पुरा करना संभव नही था । इसलिए ग्राम गौरव संस्थान ने यह रणनीति बनाई ।

1- ग्राम संगठनो को सरकारी योजना जैसे नरेगा की जानकारी प्रदान करना तथा अधिक से अधिक प्रस्तावो को ग्राम सभा में पास कराकर नरेगा के माध्यम से क्रियान्वयन कराना ।

2. ग्राम संगठनो को प्रेरित करके जनप्रतिनिधियो से जल संरक्षण हेतु राशि आबंटन की अनुशंसा करना।

3. ग्राम समुदाय को अपने स्तर पर ही सहभागिता से राशि की व्यवस्था से संरचना का निर्माण करना ।

क्र.	संकुल का नाम	कुल संरचना
01	श्यामपुर	183
02	मासलपुर	85
03	कुरकामठ	240
04	गजसिंहपुरा	182
Total		690

ग्राम गौरव संस्थान के प्रयासो से वित्तिय वर्ष 2018–19 में कुल 47 जल संरचनाओ का निर्माण कुल 28 गांव में कराया गया है जिसमें से 38 जल संरचनाए सरकारी योजना नरेगा के तहत कराया गया है एवं 8 जल संरचनाए ग्रामीण समुदाय ने अपने स्तर पर तैयार की है इन 47 जल संरचनाओ पर कुल दो करोड सत्ताईस लाख पिच्चासी हजार रू का व्यय हुआ है तथा इन संरचनाओ से लगभग 1150 परिवार को सीधे तौर पर फायदा प्राप्त हुआ है । यह ग्राम गौरव संस्थान द्वारा तैयार किये गये सशक्त ग्राम संगठन ही थे जिन्होने अपने स्तर पर संस्था के मार्गदर्शन में इतनी बड़ी राशि डांग क्षेत्र में मात्र एक साल में सफलता पूर्वक उत्पादक कार्यो पर खर्च की ।

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

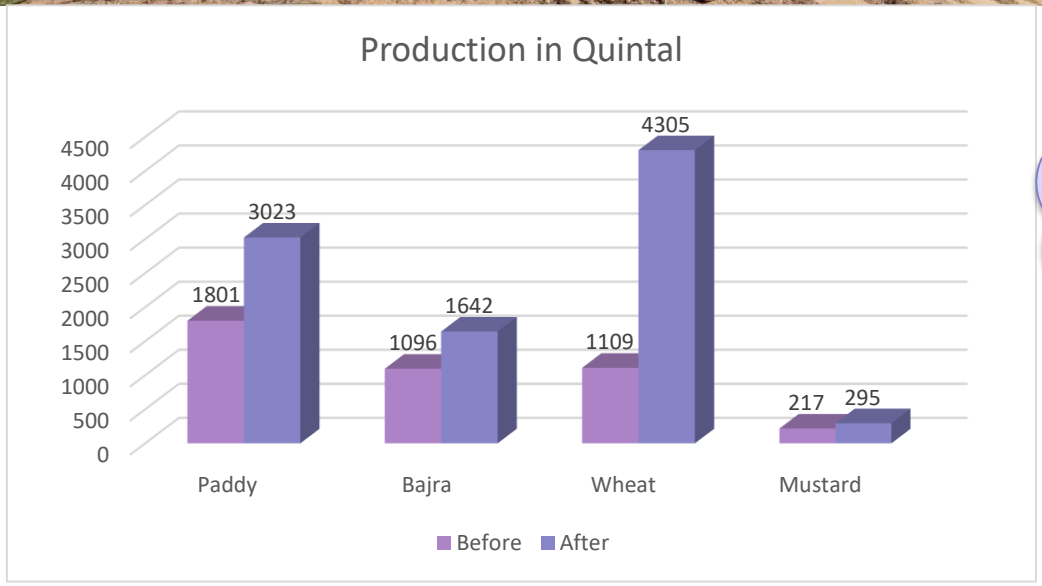

Market value of difference in production is approx. 1 Cr.

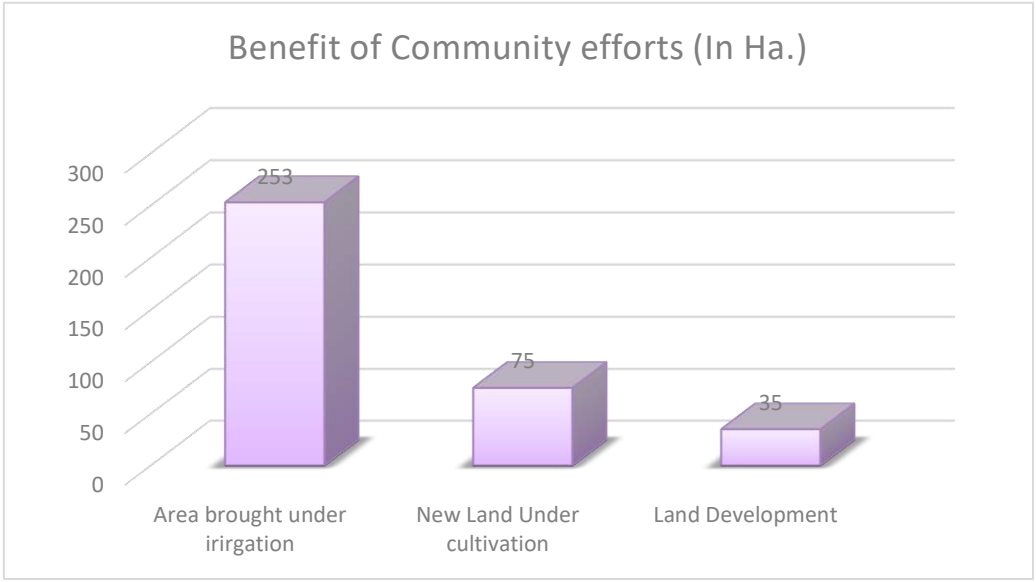

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

डांग क्षेत्र में प्रवेश एवं ग्राम गौरव संस्थान का उद्‌गम

डांग क्षेत्र में प्रवेश – 90 के दशक के अंतिम वर्षों में डांग को देखने समझने पहुंचा करणसिंह जिनके अन्य दो साथियों सहित पहुंचने पर राहगीरों ने अजनबी जानकर कई तरह के शक भांपते हुए यहां की परिस्थितियों से भी डराया शायद करणसिंह को अपने काम के प्रति समर्पण या कुदरती देन से किसी भी प्रकार के भय ने नहीं रोका करणसिंह की डांग को देखने की प्रथम यात्राओं में निभैरा गांव के धौ का खाते के बस स्टैंड पर मिले हटियाकी गांव के स्वर्गीय श्री कमलभगत दोजिया आदि ने करणसिंह के काम का वृत्तांत सुनकर अपने गांव में आने के लिए आमंत्रित किया ।

करणसिंह के हटिया कि गांव में पहुंचने पर गांव की बैठक हुई और करणसिंह को सुनकर तरह–तरह के गांव वालों के कयास रहे । जिसमे पैसा लेकर भागने वाला, जंगलात का भेजा हुआ, घरवालों से लड़कर आया हुआ बताया पर करणसिंह की वाणी में डटे रहने का भाव देखकर स्वर्गीय कमल भगत ने गांव वालों को यह कहते हुए सहमत किया कि हम पूरी तरह से सचेत होकर काम करेगें हमारा क्या ले जावेगा । प्रयोग के तौर पर कर्णसिंह और गांव वालो ने हटियाकी गांव में स्कूल चलाने का निर्णय किया ।

करणसिंह अपने अन्य साथियों के साथ पदयात्राओ पर उतरा चौण्डक्या, रावतपुरा, मोरोची होते हुए खिजूरा तक जनसंपर्क बढ़ाया हटियाकी की रिश्तेदारी खिजूरा में होने से खिजूरा के स्वर्गीय कल्याण चंदीला उनके पुत्र रमेश भतीजा रामसिंह पड़ोसी हरिचरण गुर्जर इन सब ने अपने गांव खिजूरा में करणसिंह की बात को दमदार बताया और नुक्कड़ बैठकों में ग्राम संगठन बनाने के लिए अभ्यास किया अपने गांव वालों को बारीकी से समझाने में कल्याण गुर्जर सफल हुए अपने गांव में ग्राम संगठन का गठन करके गांव के सामूहिक ताल पर काम करने का ठान लिया । काम के संचालन की चर्चाऍ जगह–जगह फैलती हुई हटियाकी गांव के तारों से जुड़ गई मेहनतकश ग्रामीणों ने 10 फीट लंबाई 10 फीट चौड़ाई 1 फीट गहराई की चौकड़ी की दर तय करके कुल लगने वाली चौकडियों को बांट लिया । ताल के काम को पूरा करने की कल्पना में ताल से होने वाले लाभों को भी प्रचारित किया एवं कारवा बढ़ता गया ।

वर्ष 2002–03 में गजसिंहपुरा के रामरूप गुर्जर, उदय सिंह, स्वर्गीय लक्खी पहलवान, स्वर्गीय रूपे गुर्जर, राधाचरण शर्मा ,जमना बैरवा, अलबतकी के रामदेव व रामजीलाल गुर्जर, चौबेकी गांव के श्रीपत गुर्जर, हरिसिंह भोपा, रामसिंह गुर्जर, धांधूरेत के रामजीलाल मीणा, रामराज मीणा, किन्दूरी मीणा, ढोयलापुरा के श्रीधर गुर्जर, श्यामपुर से प्रागदेवी गुर्जर, धप्पो देवी गुर्जर तीन पोखर गांव से रामेश्वरी देवी, राजपुर गांव से गुलाब देवी कंवर ,हल्लिकापुरा से मानसिंह मीणा, अंगदकापुरा से रामसिंह मीणा, कसियापुरा से मंगल मीणा,

रामरूप मीणा, स्वर्गीय रामेश्वर मीणा, बरतेनकापूरा से बभूती पटेल, आलमपुर से रामवीरसिंह गुर्जर, महाराजपुरा से लक्ष्मण गुर्जर, रामसहाय गुर्जर, दूल्हेराम पटेल, अररौदा से मेघराम केशुपुरा से भरौसी शर्मा कोरीपुरा से भैरो सिंह, वीरू बाबा, झल्लुकीझोड से रामवरण गुर्जर, साहबसिंह गुर्जर, घुराकी से बभूतीपटेल आदि लोगो ने ग्रामीणो की आजीविका सुदृढ करने की दिशा में अहम भूमिका निभाई है ।

ग्राम गौरव संस्थान का उद्‌गम –

ग्राम गौरव संस्थान का उद्‌गम कोई एक व्यक्ति का विचार नहीं है यह एक ऐसे पायदान से मंच तैयार हुआ है जिसमें कई प्रतिष्ठानों व स्वैच्छिक संगठनों के साथ रहकर लंबे अरसे तक ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ करने के प्रयासों में सात्विक, समर्पित कार्य के प्रति प्रतिबद्धतावान, वैचारिक पोषण व पौराणिक व आधुनिक तकनीकी प्राप्त कर कौशलवान् कार्यकर्ताओं के द्वारा मंथन करके ग्राम गौरव संस्थान का उद्‌गम हुआ । इसकी नींव की स्थिति पैदा करने के पूर्व में हुए कार्यों में अनेकों साथियों ने समर्पण के साथ काम किया है जिनकी सूची निम्न प्रकार से हैं – 1. श्री श्रवण शर्मा 2. श्री रामभजन गुर्जर 3. श्री कुलदीपसिंहजी. 04. श्री मांगीलालजी 05 श्री चमनसिंहजी 06 श्री रामसिंहजी 07 श्री जगन्नाथ शर्मा 08. श्री राकेशमीनाजी 09 श्री सुण्डाराम मीना 10. श्रीमती नंदकंवर 11. श्री बोदनलाल गुर्जर 12. श्री मुरारीलाल शर्मा 13. श्री रामदयाल गुर्जर 14. श्री मनोहर सिंहजी 15. श्री जगदीशगुर्जर 16. श्रीराधाकिशन 17. समयसिंहगुर्जर 18. कर्णसिह 19. गिरीराजप्रसाद गुर्जर 20. ठाकुरसिंह 21. रामस्वरूप गुर्जर 22. स्वर्गीय रूपेजी गुर्जर 23. गणेश कड़वे

नीवं के पत्थर :–

श्री कुलदीप सिंह – श्री कुलदीप सिंह जी द्वारा वर्ष 2004–05 में राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ परियोजना अधिकारी के रूप में जुड़कर अपनी पूरी कौशलता के साथ पूरे समूह को साधते हुए डांग की पौराणिक विधियों को साकार करने के बेहद हिमायती रहे पैगारा जैसी संरचना में अपना पक्ष रखा एवं ग्राम गौरव संस्थान के गठन में अहम भूमिका अदा की है ।

श्रवण भार्मा – श्रवण शर्मा, पुत्र श्री मांगीलाल शर्मा ग्राम– ग्वाडा व्यास अजबगढ़, वर्ष 1988–89 में तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर अपना सामाजिक जीवन यात्रा की प्रथम श्रृखला में गुजरान लोसल तहसील–राजगढ़ सरकारी विद्यालय के अभाव में बालकों को पढ़ाने से शुरू करके परम सम्माननीय स्वर्गीय सिद्धराज ढढ्ढा, स्वर्गीय श्री अनुपम मिश्रजी से वैचारिक पोषण प्राप्त करके श्री राजेंद्र सिंहजी के नेतृत्व में अबाद गतिमान प्रकृति के साथ समाज को संगठित करना व रचनात्मक कार्यों में आर्थिक व तकनीकी रूप से साझा करने के काम में महारथ हासिल की । वर्ष 2001 से राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर मनमोहन मल्होत्राजी के नेतृत्व में जमवारामगढ़ और डांग में समर्पित होकर कार्य

के प्रति प्रतिबद्धता के साथ लगे रहे इन्हें कार्यक्षेत्र में सदैव ग्रामीण जन संस्मरण में रखते हैं ।

रामदयाल गुर्जर – रामदयाल गुर्जर पूत्र श्री भरता राम गुर्जर निवासी राड़ा (नांडू), तहसील– राजगढ़, जिला– अलवर ने सन् 1989–90 में तरुण भारत संघ के साथ अपनी युवा उम्र के प्रथम चरण को सामाजिक क्षेत्र में समर्पित करते हुए कार्य प्रारंभ किया । सरिस्का की परिधि में आबाद ग्रामीणों के साथ गांव के उजड़ते वनों के संरक्षण में ग्राम सभाओं का गठन करके गांव के कानून कायदे बनवाते हुए वनों का संरक्षण कार्यो के साथ अवैध रूप से चल रहे खनन कार्यों के खिलाफ चलाए गए अभियान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया कई परियोजनाओं के कार्यों को नेतृत्व दिया वर्ष 2001 से 2009 तक राजीव गांधी फाउंडेशन के ग्रीन कोर वालियेन्टर अभियान के साथ जुड़कर अपने पिछले 10–11 वर्षों के अनुभवों के अनुसार पाली जिले का समन्वयक पद संभाल कर कार्य के प्रति प्रतिबद्धता को साधते हुए उत्कृष्ट कार्य किए हैं । श्री रामदयाल जुझारू सात्विक व पारदर्शी कार्य के प्रति समर्पित व स्वाभिमान स्वभाव वाले व्यक्ति हैं रामद्यालजी के द्वारा किए कार्यो के परिणामों ने ग्राम गौरव संस्थान के गठन में अहम भूमिका अदा की समाज में इस श्रृंखला को बनाए रखने के लिए मार्गदर्शन किया ।

श्री मांगीलाल गुर्जर – श्री मांगीलाल गुर्जर पुत्र श्री मूलचंद गुर्जर निवासी –अमावरा, तहसील– बामनवास, जिला–सवाई माधोपुर सन् 1991–92 में तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर कोचर पट्टी जो सवाई माधोपुर, करौली, दौसा 3 जिलों का संगम वाला अरावली की पहाड़ी है इसमें ग्रामीणों के पेयजल आपूर्ति के लिए टांका निर्माण के अभियान में समाज को जोड़ने के कार्य में अपनी भूमिका निभाते हुए 2001 से राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जोड़कर डांग क्षेत्र में अपना पोखर, पैगारा, ताल निर्माण के साथ वन संरक्षण में ग्रामीणों के मानस पटल में देवबनियों में वृक्षारोपण कार्य में वर्ष 2018–19 तक उल्लेखनीय कार्य किया । ये सरल सहज मिलनसार व्यक्तित्व वाले संयोगिता के व्यक्ति हैं इनके कार्यो से भी ग्राम गौरव संस्थान के गठन करने में प्रेरित किया ।

श्री रामभजन गुर्जर – श्री रामभजन गुर्जर पुत्र श्री सौराम गुर्जर निवासी – निमाज, तहसील–लालसोट, जिला –दौसा वर्ष 1991–92 में तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर कोचर पट्टी में टांका निर्माण सहित माड़ क्षेत्र में खेत तलाई कार्यों सहित संस्था द्वारा संचालित शिशु पालना केंद्रों के कार्यों व प्रबंधन को देखा वर्ष 2001 से राजीव गांधी फाउंडेशन के ग्रीन कोर वालियेन्टर के अभियान में जुड़ कर सवाई माधोपुर, करौली, भरतपुर, धौलपुर के क्षेत्रों के गांव में ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ करने के मिशन में चलाई गई पद यात्राओं संहित ताल, पोखर, पैगारा निर्माण में अपना योगदान वर्ष 2018–19 तक सक्रिय रुप से दिया राम भजन जी मितभाषी सहज स्वभाव के व्यक्तित्व के धनी हैं इनके कामों का ग्राम गौरव संस्थान के गठन में योगदान सराहनीय रहा है ।

राम सिंह अवाना – राम सिंह अवाना पुत्र श्री पुखराज अवाना ग्राम–राजाखेड़ा, तहसील–नादौती, जिला– करौली ने सन 2002–03 में राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर कई गांव में समाज के जनतांत्रिक संगठनों के गठन में अहम भूमिका निभाते हुए जोहड और तालाबों का संवर्धन व नव निर्माण कार्य करवाया जीवन शालाओं में बालकों को जीवनशाला में भेजने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करने के साथ गांव के बुजुर्गों द्वारा गांव का सामाजिक विज्ञान व भौगोलिक ज्ञान का उद्बोधन करवाते रहे हैं राम सिंह जी वर्ष 2012 तक ग्राम गौरव संस्थान के साथ जुडकर समाज में पथप्रर्दशक के रूप में कार्य किया है ।

चमन सिंह – चमन सिंह वर्ष 1990–91 से सवाई माधोपुर के कोचर पट्टी में तरुण भारत संघ के द्वारा संचालित टांका तालाबों के संवर्धन व नव निर्माण के कार्यों से जुड़कर मांड क्षेत्र सहित कई सौ संरचनाओं में मुख्य भूमिका निभाई वर्ष 2001 से 2011–12 तक राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर डांग क्षेत्र के कार्यो में कार्यरत रहे 2011–12 से 2013–14 तक ग्राम गौरव संस्थान के साथ जुड़कर कार्य किया चमन सिंह के कार्यों का ग्राम गौरव संस्थान के गठन कार्यों में अहम भूमिका रही है।

गोविंदा मीणा – गोविंदा मीणा ग्राम समरा तहसील थानागाजी ने अपने पैतृक गांव के आसपास के क्षेत्र जमवारामगढ़ में कई गांवों में राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर वर्षा जल संरक्षण के लिए निर्मित व सर्वाधिक संरचनाओं के कार्यों में वर्ष 2002 से 2005 तक कार्य किया इनके कार्यो का अस्तित्व आज भी बरकरार है जो ग्राम गौरव के गठन के लिए अहम रहा है ।

राकेश मीणा – राकेश मीणा ग्राम रामवाला ने वर्ष 2002 से 2008 तक राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर जमवा रामगढ़ क्षेत्र के गांव में जोहड़, तालाबों के निर्माण व संवर्धन कार्यों में कार्यरत रहे हैं ।

सुंडा राम मीणा – सुंडा राम मीणा निवासी लुनेठा वर्ष 2002 से 2007–08 तक राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर जोहड़, तालाब, मेड़बंदी एनीकट के कार्यों में कार्यरत रहे हैं ।

श्रीमती नंद कुंवर – श्रीमती नंद ग्राम डांगरवाड़ा जिला जयपुर राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर महिलाओं को प्राकृतिक संसाधनों के क्षेत्र में संगठित जागरूक किया जो सराहनीय रहा रामगढ़ क्षेत्र में रहकर नंद कंवर ने सैकड़ों महिला समूह को सक्रिय किया है ।

बोधन पोसवाल – बोधन पोसवाल ग्राम कल्याणा तहसील थानागाजी जिला अलवर एक विशेष क्षेत्र मेवात में तालाबों के नवनिर्माण व संवर्धन का कार्य किया है यहां के समाज के साथ वर्षा जल संरक्षण की परंपरा जानना अति उत्कृष्ट कार्य है ।

श्री जगदीश गुर्जर – श्री जगदीश गुर्जर ग्राम राडा नाडु ग्राम पंचायत नाडु तहसील राजगढ़ जिला अलवर 90 के दशक के प्रारंभ में तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर सरिस्का के गांव में संघर्ष के साथ वन संरक्षण के लिए ग्रामीणों को साझा करते हुए खनन माफियाओं के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में समर्पित रहे अलवर जिले की जहाज वाली, रूपारेल, भगानी व अरवरी नदियों के जलागम क्षेत्रों में वर्षा जल संरक्षण को लेकर कई सौ तालाब, जोहडो का निर्माण करवाया वन संरक्षण यज्ञ से लेकर 1100 किलोमीटर अरावली चेतना पदयात्रा में समाज को जोड़ने का काम किया 2001 से 2011 तक राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर मांड व डांग में समाज की पौराणिक विधाओं को उभरते हुए ग्रामीण आजीविका मिशन सूदृढ करने के मिशन में समर्पित रहे ।

राधा किशन गुर्जर – राधा किशन गुर्जर ग्राम मुरलीपुरा ग्राम पंचायत नांडु तहसील राजगढ़ जिला अलवर राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर जमवा रामगढ़ जिला जयपुर के गांव में ग्रामीण जनतांत्रिक व्यवस्था कायम करके ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में वर्षा जल संरक्षण के लिए संरचनाओं का निर्माण कार्य में समर्पित रहे डांग में शिक्षा की अपेक्षा को समाज के मानस पटल पर बैठाया एवं व्यावहारिक भाव से समर्पित रहे ।

समय सिंह गुर्जर – समय सिंह गुर्जर ग्राम आकोदिया तहसील बामनवास जिला सवाई माधोपुर राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर क्षेत्र के गांव में ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने के मिशन के तहत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में वर्षा जल, मृदा संरक्षण के लिए जल संरचनाओं का निर्माण कार्य में समर्पित रहे एवं प्रजातांत्रिक प्रणाली से संस्था का गठन में अहम भूमिका रही ।

गिरीराज प्रसाद चैची :– ग्राम चौबलीवाड़ा ग्राम पंचायत चौबलीवाड़ा पंचायत समिति बांदीकुई जिला दौसा राजस्थान ने राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर दोसा, अलवर, जमवारामगढ़ के गांवो में ग्रामीण जनतांत्रिक व्यवस्था कायम करके ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ करने के मिशन के तहत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में वर्षा जल, मृदा संरक्षण के लिए जल संरचनाओं का निर्माण कार्य में समर्पित रहे प्रजातांत्रिक प्रणाली से संस्थान का गठन में अहम भूमिका रही ।

ठाकुरसिंह :– ठाकुर सिंह गुर्जर ग्राम श्यामपुर पाटोर ग्राम पंचायत श्यामपुर, पंचायत समिति –मंडरायल जिला करौली ने राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से मांड क्षेत्र के गांव में प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन वास्ते ताल, पोखर, निर्माण होने के साथ क्षेत्र में कार्यकर्ताओं का जुड़ाव हुआ गांव में संगठन के साथ–साथ लोगों में वर्षा जल मृदा संरक्षण वास्ते जहन में लाने के लिए कार्य में समर्पित रहे ।

करणसिंह :– करण सिंह गुर्जर ग्राम अमावरा ग्राम पंचायत अमावरा पंचायत समिति बामनवास जिला सवाई माधोपुर ने राजीव गांधी फाउंडेशन के साथ जुड़कर सवाई माधोपुर,

करौली जिले के गांव में ग्रामीण लोगों के साथ यात्रा करके संगठित किया और ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में वर्षा जल, मृदा संरक्षण के लिए जल संरचनाओं का निर्माण कार्य में समर्पित रहे ।

रामस्वरूप गुर्जर :— रामस्वरूप गुर्जर ग्राम शहर ग्राम पंचायत शहर जिला करौली राजीव गांधी संस्थापन के साथ जुड़कर माड़ व डांगक्षेत्र में समाज की पौराणिक विधाओं को उभारते हुए आधुनिक तकनीकी को साझा करते हुए ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ करने के मिशन में समर्पित रहे।

शिवराम मीणा :— शिवराम मीणा ग्राम कसियापु ग्राम पंचायत लांगरा जिला करौली ने ग्राम गौरव संस्थान के साथ जुड़कर क्षेत्र में समाज की पौराणिक विधाओं को उभारते हुए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु समर्पित रहें ।

मनोहर सिंह :— मनोहर सिंह गांव गुढादुर्गा ग्राम पंचायत बासनी (जोजावर) जिला पाली ने संगठन का गठन करने को मारवाड़ क्षेत्र के बगरा बेल्ट में सामाजिक संरचना के मर्म की गहन अनुभूति है जो ग्राम संगठन बनाने से बहुत अहम समझ रखते हैं।

पेमाराम परिहार :— पेमाराम परिहार ग्राम गुढ़ा प्रेमसिंह ग्राम पंचायत रडावास तहसील मारवाड़ जंक्शन जिला पाली में रचनात्मक कार्यों की पकड़ व गहन समझ रखते हैं इनके मार्गदर्शन में आने वाली ग्राम विकास समिति सदस्यों की कुशलता बढ़ाई है ।

पुनाराम देवासी :— पुनाराम देवासी ग्राम गुढा दवेडान ग्राम पंचायत बागोल तहसील देसूरी जिला पाली राजस्थान रचनात्मक कार्यों का लेखा—जोखा रखने में अहम भूमिका रही है ।

जीताराम मेघवाल :—जीताराम मेघवाल ग्राम गुढा दुर्गा ग्राम पंचायत बासनी जोजावर तहसील मारवाड़ जंक्शन जिला पाली राजस्थान ने रचनात्मक कार्य व संगठन के गठन करने में अहम भूमिका निभाई है।

Gram Gaurav Sansthan - Board	
Sh. Sanjeev Kumar President	Sanjeev Kumar is a senior development professional with more than three decades of experience. He has worked with Government and Non Government organisation for Livelihood enhancement in Rural areas. He received a graduation degree from Dehradun and a PGDRM from the IRMA Anand in 1988. Curretly he is working as Livelihoods skilled trainer and Development practitioner. He lives in Jaipur. He has served many senior management position including senior position at ARAVALI Jaipur and BASIX. He also worked with salt producer company in Kutch and deeply involved in arrange the credit from banks, processing, production and market linkages. He has also worked in state copertaive Tilam sangh and worked for formtation and capacity building of Tilhan producer organisation. He also worked with State Government as a manger in DPIP.
Sh. Asif Zaidi	Asif is very senior development professional with experience of more than 35 years in rural development sector. He has worked across the India and specialised in the areas of Natural Resource Management, Livelhoods and Women empowerment. He did the post graduation with specialisation in hydro -geology from Aligarh Muslim University. He has worked with Irirgation department in M.P, Jal Nigam in U,P and National Mineral development corporation. He started his carrer in development sector with renowned and pioneer orgsnisation PRADAN in 1987 and worked there till 2008. Then he started his own organisation called Sir Syed Trust (SST) with support of PRADAN in 2008. Curretly he is working as executive director in SST.
Sh. Jagdish Gurjar Secretary	He is currently working as secretary of Gram Gaurav Sansthan. He is also founder member and secretary in the board. He was one of the initial team member of Tarun Bharat Sangh and deeply involved in River rejuvenation mission in Alwar. He has over 33 years of experience in development sector working with Daang community and diverse part of country. He has worked with Tarun Bharat Sangh and Rajeev Gandhi Foundation for 24 years and then he formed Gram Gaurav Sansthan in 2011. He is well knowm renowened grass root level practitioner in the field of Natural Resource management. His expertise area is community institution, livelihoods and natural resource management.
Sh. Radha Krishan Gurjar Treasurer	He is one of founder member of Gram Gaurav Sansthan. He is senior renowned and experienced grass root level worker in the field of Natural resource management. He started his social services during his college time. Thereafter he joined Rajiv Gandhi Foundation as gree core volunteer and worked in Rajasthan and deeply involved in planning, implemntaion and

	management of about 650 rain water harvesting structure. Currently He is treasurer of Gram Gaurav and also key staff member of the organisation.
Sh. Sanjay Sharma Member	Sanjay Kr. Sharma is the Executive Director of Manjari Foundation based at Dholpur Rajasthan. He has 18 years of extraordinary rural development experience. He has started his career from Professional Assistance for Development Action (www.pradhan.net) Dholour and still continuing excellent work across Rajasthan. He did his B.Tech in Agricultural Engineering from Punjab Agriculture University Ludhiana. He has been awarded a prestigious International Ford Foundation Fellowship to go for higher studies. He has completed his Master in Sustainable International Development majored in Development Economics from the Heller School of Social Policy and Management, Waltham,Boston. Sanjay has professional experience and expertise in formulating, designing, implementing, monitoring and supervision of development projects, which include social mobilization, institution building, pro-poor livelihood value chain development, organizational development and advocacy and public policy formulation in rural development sector. He has vast experience of work with international development organization and oversees which included Cambodia, Kenya, Mali and Senegal as well
Mrs. Zebul Nisha Member	She is currently working as consultant with SRIJAN, a development organisation. She has over 27 years of experience working with communities in diverse part of country. She has worked with Organisation like renowned organisation viz PRADAN and SRIJAN and also served as senior position in prestigious projects NRLM and SWA –SHAKTI. She is well known practitioner in the field of women empowerment, community institution and livelihoods.
Samay singh Gurjar Member	He is also a founder member of Gram Gaurav Sansthan. He has 19 years of rich experience as grass root level worker. He is committed to improve the livelihoods of Daang community through Rain water harsvting structure. He has also worked in the health and education field and come up with significant change in the Daang area. He joined Rajiv Gandhi Foundation as green core volunteer in 2001. He possess master degree and B.Ed from Rajasthan University. He has extensive experience in the field of natural resource management.

President

Vice President

Treasurer

Secretary

Member

Member

Member

GRAM GAURAV STAFF					
S.No	Name	Designation	Qualfication	Total experience (In Years)	Key area of expertise
1	Jagdish Gurajr	Secretary	Senior secondary	33	NRM, Livelihoods and Community institution
2	Radha Krishan Gurjar	Treasurer	B.A	19	NRM, Livelihoods and Community institution
3	Samay singh	Coordinator	B.A , B.ED	17	NRM, Livelihoods and Community institution
4	Ganesh Kadwe	Accountant	M.COM	12	Accounting & Financial management
5	Karan singh	Cluster coordinator	Secondary	25	Social mobilisation & Community institution
6	Giriraj Prasad	Village coordinator	Senior secondary	23	Social mobilisation & Community institution
7	Ram swaroop	Village coordinator	Secondary	19	Social mobilisation & Community institution
8	Thakur singh	Village coordinator	8th	13	Social mobilisation & Community institution
9	Shivram	Village coordinator	8th	2	Social mobilisation & Community institution

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

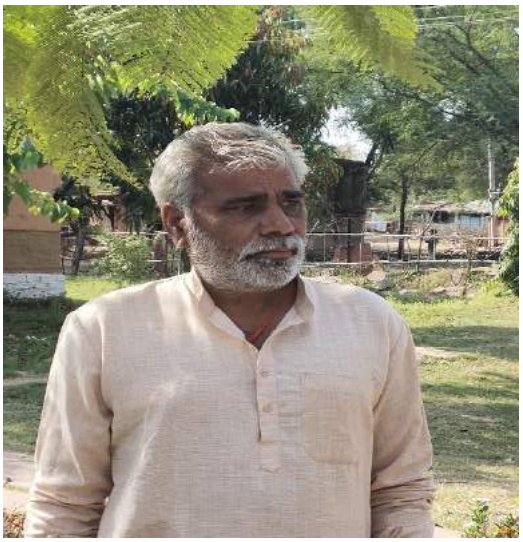

Jagdish Gurjar

Radha Krishan Gurjar

Samay Singh

Ganesh Kadwe

Giriraj Singh

Karan Singh

Shiv Ram

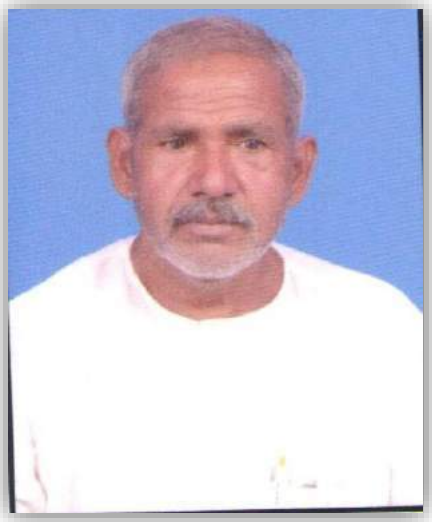

Ram Swaroop

Thakur singh

करौली-हिंडौन भास्कर

नीर की पीर मिटाने को बढ़े हाथ

राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से ग्राम गौरव संस्थान ने डांग क्षेत्र के गांवों में जल संरक्षण की जगाई अलख

सुखदेव डागुर| करौली

डांग क्षेत्र में अभावपूर्ण जिंदगी के साथ पेयजल समस्या से जूझने वाले कई गांवों के लोगों ने नजीर पेश की है। परंपरागत जल स्रोतों के रूप में जगह-जगह धर्मताल,पोखर व पैगारों का नवनिर्माण कर जल संरक्षण का प्रेरणादायी संदेश भी दिया है। डांग के सुदूर इलाकों में अब पेयजल समस्या का कहीं हद तक स्थायी समाधान होने से तस्वीर बदली है। वहीं सिंचाई की सुविधा मिलने से वर्षा आधारित पहाडी क्षेत्र में भी रबी व खरीफ की खेती लहलहाने लगी है। यह सब ग्राम गौरव संस्थान,सुक्कापुरा टीम की ओर से लोगों में जल संरक्षण की अलख व चेतना पैदा करने से ही संभव हुआ है।

गौरतलब है कि दुर्गम बीहड़ डांग इलाकों में मूलभूत सुविधाओं से महरूम लोगों की मुख्य रूप से पेयजल की पहाड़ सी पीड़ा को महसूस करते हुए जिले के गांव विरहटी के सुक्कापुरा में स्थापित ग्राम गौरव संस्थान ने जल संरक्षण कार्यक्रम चलाया। ग्रामीणों ने भी पीर की नीर मिटाने के लिए घर-घर से चंदा एकत्रित कर राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से जगह-जगह पोखर,पैगारे व धर्मताल बनाए हैं। बानगी के तौर पर बरकी, कूलराकी,लखरुकी,खोतेकी, नरेकी,राहिर,अलबतकी व चौबेकी आदि गांवों में हुए कार्यों की बहुउपयोगिता व सफलता की कहानी स्थानीय लोगों की जुबानी सुनीं जा सकती है। डांग में पेयजल समस्या से निजात मिलने पर संस्थान ने अब नाबार्ड के सहयोग से जल संरचना के अन्य कार्य कराने का बीडा उठाया है। खास बात यह है कि इसमें जनसहभागिता के लिए स्वयं ग्रामीण भी हाथ बढ़ा रहे हैं। जबकि ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज योजनाओं के कार्य यहां धरातल पर कम ही दिखे। इससे जल संरक्षण कार्यक्रम व मनरेगा कार्यों की पोल खुलती है। ग्रामीणों का मानना है कि यही कार्य सरकार चौगुनी राशि में पूरी करती,जो जल सभा ने कम लागत में कर दिखाया।

अलबतकी गांव के किसान हलकू पटेल ने बताया कि 8 साल पहले संस्थान के सहयोग से 1 लाख 85 हजार लागत का पैगारा बनाया। जलोड मिट्टी के ठहराव से खेत बना और अब धान के अलावा गेहूं की फसल लेने वाला भी वह अकेला है। करीब 7 बीघा में तीन घरों के लोगों ने 36 क्विंटल गेहूं पैदा किया है। इसी प्रकार राहिर व चौबेकी में ढलार की पोखर में कांटो की बाड के साथ फिलहाल सिंघाडा और रिसावित पानी से धान लहलहा रहा है। इस 9 किमी लंबे नाले में कई जगह पैगारे व पोखर बने हुए हैं,जिनका ग्रामीण भरपूर लाभ ले रहे हैं। इस दौरान जल संरक्षण व संरचना के कार्यों में सहभागी टीम के सदस्य जगदीश,राधाकृष्ण,रामभजन,समयसिंह,ठाकुरसिंह, गिर्राज, गांगीलाल,करणसिंह,गणेश व जगन्नाथ आदि मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि ये सभी सदस्य पूर्व में तरूण भारत संघ में कार्यकर्ता थे।

धर्मताल-पोखर व पैगारों से बदली डांग की तस्वीर,खेती को सिंचाई का लाभ मिला और पेयजल समस्या का हुआ समाधान

करौली. पांच गांवों के मवेशी सहित ग्रामीणों की प्यास बुझाने में वरदान साबित हुई बरकी की पोखर।

करौली. अलबतकी में पैगारा बनने से पहाडी भूमि पर भी धान की फसल उगने लगी।

एक पोखर से पांच गांवों को पानी

डांग व पहाडी क्षेत्र का गांव बरकी,यूं तो कैलादेवी ग्राम पंचायत का हिस्सा है,मगर पंचायत मुख्यालय से जर्जर रास्तों के बीच दूरी बहुत अधिक है। यहां लोग चार साल पहले तक पीने के पानी के लिए टैंकरों पर ही पूरी तरह निर्भर थे,मगर अब बरकी गांव में ग्राम गौरव संस्थान व राजीव गांधी फाउंडेशन के संयुक्त सहयोग से बनाई गई पोखर इनके लिए जीवन रेखा बन गई है। इस पोखर से बरकी सहित कूलराकी,लखरुकी,खातेकी व नरेकी गांव के लोग गर्मियों के दिनों में मवेशी सहित अपनी भी प्यास बुझा लेते हैं। ग्रामीण रामनारायण,रामभज न,शिवचरण,हरिसिंह,रामलखन मीना,प्रभु,जगदीश व समयसिंह आदि ने बताया कि आंक वाले स्थान पर पहले राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से छोटा एनिकट बनाया गया था। जिसे चार साल पहले ग्राम गौरव संस्थान ने स्थानीय ग्रामीणों की एक जल समिति बनाकर पुनर्निर्माण के तौर पर ऊंचाई बढाई गई और अब पांचों गांव लाभांवित हो रहे हैं।

एनिकट की ऊंचाई बढे तो सिंचाई का मिले लाभ

इस एनिकट की भराव क्षमता 11 फिट है, अगर यह 5 फिट और बढ़ा दी जाए तो इसका पानी, पीने के अलावा सिंचाई के काम भी आ सकता है और 350 परिवारों को फायदा मिले। हालांकि इस एनिकट के रिसावित पानी से एक किसान गोपाल मीना ने पहली बार गेहूं की खेती कर 50 क्विंटल अनाज पैदा किया है। जबकि यहां सिर्फ वर्षाआधारित खेती होने से बाजरा,धान की ही फसल होती है।

निर्माण का यह तरीका

ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकर्ता समयसिंह व जगदीश ने बताया कि संस्था की ओर से सीमेंट,कारीगर व पानी उपलब्ध कराया जाता है और ग्रामीणों की ओर से बजरी,खंडा व श्रम मुहैया कराया जाता है। स्थानीय लोगों की देखरेख में यह कार्य गुणवत्तापूर्ण व कम लागत में पूर्ण हो जाता है। यही कारण है कि डांग के लोग अब जल संरचना के इन कार्यों में बेहद रुचि ले रहे हैं। संस्था डांग के पहाडी व ढलान इलाकों में जल संरक्षण के लिए पोखर,पैगारे व धर्मताल बनाने का काम युद्धस्तर पर कर रहा है। बरकी पोखर के कार्य पर 185400 की राशि जनसहयोग से और संस्थागत 179110 रुपए खर्च हुए हैं।

कायाकल्प › पोखर-पगारा बने वरदान

पथरीली भूमि पर लहलहा दी फसल

दिनेश शर्मा. करौली

jaipur@patrika.com

प्रदेश के डांग क्षेत्र में शुमार करौली जिले के दुर्गम बीहड़ों में पत्थरों की भूमि पर किसान अपनी तकदीर संवार रहे हैं। दशकों से बंजर पड़ी किसानों की यह भूमि अब उपजाऊ होकर ग्रामीणों को न केवल वर्षभर का खाद्यान्न (गेहूं, चावल) दे रही है, बल्कि यह भूमि अब किसानों के रोजगार का प्रमुख जरिया भी बन गई है। यह संभव हुआ है पथरीली भूमि पर पोखर-पगारा निर्माण पद्धति के जरिए भूमि को उपजाऊ बनाने से। जिले के करणपुर, मण्डरायल, कैलादेवी, ससेड़ी, मासलपुर आदि क्षेत्रों में बड़े स्तर पर पत्थर खदानें हैं। जगह-जगह पथरीली भूमि नजर आती है। अधिकांश हिस्से में पत्थर होने से किसान दशकों से भूमि का कृषि के लिए समुचित उपयोग नहीं कर पा रहे थे, जिससे यह भूमि बंजर पड़ी थी। इसके अलावा फसल सिंचाई के लिए पानी का टोटा भी किसानों के समक्ष बड़ी परेशानी थी। शेष मिट्टीयुक्त भूमि पर ही किसान खेती कर पा रहे थे।

संस्था का सहयोग

करीब एक दशक पहले इन क्षेत्रों में [illegible] फाउण्डेशन [illegible] ने जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य प्रारंभ किया। इसके तहत पोखर, तालाब आदि बनाए गए, जिसमें संस्था ने ग्रामीणों से भी सहयोग लिया। संस्था ने डांग क्षेत्र के 84 गांवों में पोखर व पगारा निर्माण शुरु किया। पगारा निर्माण ग्रामीणों के लिए वरदान साबित हुआ और बंजर भूमि पर फसल लहलहाने लगी है। संस्था के स्टेट प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर कुलदीप बताते हैं कि वर्तमान में इन गांवों में 272 पोखर-पगारा बनाए जा चुके हैं और 1210 परिवार इनसे जुड़े हैं।

पहले इन क्षेत्रों के किसान केवल राता और लकड़ा किस्म का चावल पैदा कर पाते थे, जो 700 से 800 रुपए प्रति क्विंटल बिकता था, लेकिन अब रेशम बासमती चावल की पैदावार हो रही है, जिसे किसान 2200 रुपए प्रति क्विंटल तक गंगापुरसिटी, लालसोट आदि की मंडियों में बेच रहे हैं।

क्या है पगारा

पथरीले खेत के एक हिस्से में करीब तीन-चार फीट ऊंचाई की दीवार बनाई जाती है।

दीवार में बीच-बीच में पानी निकासी के लिए होल बनाए जाते है। बारिश के बहाव के रास्ते पर [illegible] होता है। बारिश के पानी के साथ जो मिट्टी-बजरी बहकर आती है, उसमें से पानी तो होल के जरिए आगे निकल जाता है, जबकि मिट्टी-बजरी खेत में जम जाती है।

करीब 2 से 3 वर्ष में इतनी मिट्टी जम जाती है कि उसमें गेहूं, चावल की फसल आसानी से हो जाती है, जबकि पोखर के पानी से सिंचाई होती है।

किसानों की जुबानी

भूमि उपजाऊ हो गई

पथरीली भूमि होने से पहले खेती नहीं हो पा रही थी। अब खेत में पगारा निर्माण करके भूमि उपजाऊ हो गई, जिससे पर्याप्त खाद्यान्न मिलने के साथ रोजगार भी मिल गया है।

-रूपे गुर्जर, गुजसिंहपुरा

तकदीर बदल दी

पोखर-पगारा निर्माण ने तो तकदीर ही बदल दी। जिस भूमि को बेकार समझकर छोड़ दिया, वहीं भूमि अब रोजी-रोटी का साधन बन गई। मवेशियों को भी पानी के लिए नहीं भटकना पड़ता।

-रामसहाय, महाराजपुरा

पथरीली जमीन में उपज रहा है धान

पैगारों ने बदली दशा

हरिओमसिंह गुर्जर
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, करौली

चम्बल के बीहड़ एवं कैलादेवी अभयारण्य क्षेत्र में बसे करौली जिले के दो दर्जन गांवों में भौगोलिक विषमताओं के बावजूद सामुदायिक सहभागिता से जल संरक्षण एवं पैगारे (खेत) निर्माण का जो कार्य किया गया है उससे क्षेत्र की दशा और दिशा बदल गई है।

इस उबड़–खाबड़ पथरीले क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ेपन के कारण विकास की गति धीमी रही है। डांग के गांवों में आजीविका का प्रमुख साधन पशुपालन एवं छोटे–छोटे खेतों में कृषि कार्य करना है। खेती भी केवल वर्षा आधारित है। किसान बरसाती नालों में पत्थरों को दीवारनुमा बनाकर वर्षा के बहाव की मिट्टी रोकता है जिसे खेत के रूप में तैयार होने में 2 से 5 वर्ष का समय लगता है। ये खेत ही स्थानीय भाषा में 'पैगारा' कहे जाते हैं।

डांग क्षेत्र में पूर्वजों द्वारा तैयार की गई पैगारे की कला का संसाधनों के अभाव में विस्तार नहीं हो पाया था। केवल नियमित वर्षा के समय ही पैगारे खेती के काम आ रहे थे, ऐसे में इस कला को डांग क्षेत्र में आंदोलन का रूप दिया जल संरक्षण के लिए प्रयासरत संस्था 'ग्राम गौरव संस्थान' ने।

कम वर्षा के समय पैगारों में पानी एकत्रित नहीं हो पाता था वहीं तेज बहाव के समय पत्थरों की दीवार गिर जाने से पैगारों की मिट्टी कट कर चली जाती थी। इन दोनों समस्याओं का निराकरण करने के साथ सामुदायिक सहयोग की भावना से 'ग्राम गौरव संस्थान' द्वारा पक्के निर्माण कराए गए हैं।

कम वर्षा की स्थिति में स्थानीय लोगों को अपने मवेशियों को लेकर पानी की तलाश में चम्बल नदी के पास अथवा मध्यप्रदेश में पलायन करना पड़ता था। अब प्रत्येक गांव में वर्षभर वर्षा पानी एकत्रित रखने के लिए तीन प्रकार के जल स्रोतों का निर्माण कराया गया है। सम्पूर्ण गांव के मवेशियों एवं आम लोगों की खातिर जल की उपलब्धता के लिये तैयार किए गए जल स्रोत का नाम दिया गया है 'धरमताल'। इसमें वर्ष भर पानी की उपलब्धता रहती है। इसका निर्माण गांव के समीप सार्वजनिक स्थान पर किया जाता है, इसके पानी का उपयोग सिंचाई के रूप में नहीं किया जाता है।

कुछ परिवारों द्वारा मिलकर तैयार करवाए गए जल स्त्रोत को 'पोखर' कहा जाता है इसमें किसान परिवार सिंघाड़े एवं धान की फसल सामुदायिक कृषि के रूप में करते हैं। एकत्रित पानी रबी की फसल में सिंचाई के काम आता है। तीसरे प्रकार का होता है पैगारा। यह किसी भी नाले के अंतिम छोर की तरफ होता है। पैगारा एक परिवार के स्वामित्व वाला होता है तथा सीढ़ीनुमा श्रृंखला में पैगारों की संख्या बढ़ती जाती है।

'ग्राम गौरव संस्थान' द्वारा जल स्त्रोत निर्माण एवं पैगारे निर्माण से पूर्व गांव में जल समिति अथवा जल संसद का गठन किया जाता है। जिसकी नियमित बैठक में स्थान चयन एवं श्रम व लागत का निर्णय आपसी सहमति से किया जाता है। सर्व सम्मति से लिए गए फैसले के कारण गांव के सभी लोगों की भागीदारी रहती है।

जल स्त्रोतों एवं पैगारों के निर्माण से वर्षा जल संरक्षण होने के साथ ही वर्षभर पानी की उपलब्धता रहती है। वहीं जंगली जानवरों को भी पेयजल उपलब्ध हो जाता है। जिन गांवों में पैगारे निर्माण से पूर्व लोग पलायन कर जाते थे उन गांवों में अब वर्षभर फसलें लहलहाती हैं। खरीफ में बाजरा, ज्वार, धान तथा रबी के मौसम में गेहूं व सरसों की फसल बड़ी मात्रा में पैदा की जाने लगी है।

नाबार्ड बना सहयोगी

पैगारों के निर्माण में आर्थिक सहयोग के लिए नाबार्ड ने रुचि दिखाई है। इस वर्ष 13 पैगारों के निर्माण पर 13 लाख रुपये की लागत आई है इसमें आधी लागत नाबार्ड द्वारा वहन की गई है। 'ग्राम गौरव संस्थान' के जगदीश गुर्जर कहते हैं ''नाबार्ड द्वारा पक्के धरमताल निर्माण में आर्थिक मदद दिए जाने से आमजन का आर्थिक भार कम हुआ है वहीं पैगारे निर्माण आन्दोलन का रूप ले रहा है।'' नाबार्ड द्वारा सीमेन्ट एवं बजरी तथा निर्माण मिस्त्री उपलब्ध कराए जाते हैं। ग्रामीणों द्वारा मानव श्रम, पत्थर उपलब्ध कराए जाते हैं। निर्माण लागत का सम्पूर्ण हिसाब जल समिति द्वारा रखा जाता है।

बिना लागत सिंचाई

पैगारे खेती के काम लिए जाते हैं। जिनके उच्च स्थान की ओर नाले पर सामुदायिक ताल, पोखर का निर्माण होता है। धरमताल का ओवर फ्लो पोखर में एवं उसके बाद पैगारे में जाता है। रबी की फसल के समय आवश्यकता पर स्वतः ही धरमताल से एवं पोखर से पानी पैगारे की ओर छोड़ा जाता है जिससे बिना लागत के सिंचाई हो जाती है।

'ग्राम गौरव संस्थान' के समयसिंह बताते हैं ''अब वर्षभर पानी की उपलब्धता से डांग क्षेत्र के ये गांव पशुपालन एवं जैविक खेती के नये केन्द्र बनते जा रहे हैं, वहीं आम लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।'' ग्राम बरकी, लखरूकी, नरेकी, कुल्हा के गांवों के किसान उन्नत फसलें ले रहे हैं। जैसा कि ग्राम अलबतकी के हलकू पटेल कहते हैं ''अब हम पत्थर पर धान उगाने लगे हैं।'' •

आज श्रमदान में जुटेंगे श्रमवीर

राजस्थान पत्रिका अमृतं जलम् आओ, भगीरथ बनें।

जिले में चार स्थानों पर होगा श्रमदान

करौली @ पत्रिका. राजस्थान पत्रिका के अमृतं जलम् अभियान के तहत रविवार को जिले में चार स्थानों पर श्रमवीरों द्वारा जल संरक्षण की खातिर श्रमदान किया जाएगा।

डांग क्षेत्र की राहिर ग्राम पंचायत के ठेकला की झौंपड़ी की ढणी के बहरीवाला तालाब पर ग्रामीण श्रमदान करेंगे। ग्राम गौरव संस्थान के सहयोग से होने वाले श्रमदान में जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दुर्गेसकुमार बिस्सा भी भाग लेंगे।

कदम्ब कुंज पर फिर होगा श्रमदान

हिण्डौनसिटी. राजस्थान पत्रिका के अमृतं जलम अभियान के तहत रविवार सुबह 7 बजे महू गांव के पास कदम्ब कुन्ज पर श्रमदान किया जाएगा। जल स्त्रोतों के संवारने के इस अभियान में ग्रामीणों के अलावा विभिन्न संगठनों के लोग साफ सफाई करेंगे।

गुढ़ाचन्द्रजी. अमृतम् जलम् अभियान के तहत कस्बे के खरेड़ा बालाजी के समीप नवीन तलाई निर्माण के लिए रविवार सुबह श्रमदान किया जाएगा। यह जानकारी ग्रामीण बचन गुर्जर व रतन माली ने दी। (प.सं.)

सपोटरा. अमृतं जलम् अभियान के तहत रविवार को चौड़ागांव के हिंगोटीपुरा के पास तलाई पर सुबह 8 बजे से श्रमदान किया जाएगा। श्रमदान में ग्रामीणों सहित अधिकारी, कर्मचारी, सरपंच शामिल होंगे।

ग्रीष्मकालीन शिविर 5 से

करौली. @ पत्रिका. डांग इलाके के गांवों में बच्चों की प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से ग्राम गौरव संस्थान सुक्कापुरा की ओर से ग्रीष्मकालीन अवकाश में शिविर आयोजित किया जाएगा। संस्थान के सचिव जगदीश गुर्जर ने बताया कि संस्थान की ओर से पिछले कई वर्षों से डांग इलाके के गांवों में चेतनात्मक व रचनात्मक कार्य किए जा रहे हैं। ग्रीष्मकालीन अवकाश में डांग क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की अभिव्यक्ति उभारने, चित्रकला को बढ़ावा देने, अपने देश के भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार अपने क्षेत्र के विकास की विधाओं पर संवाद के लिए 5 जून से 15 दिवसीय शिविर का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि संस्थान के सुक्कापुरा (बिरहटी) स्थित कार्यालय पर शिविर का उद्घाटन 5 जून को सुबह 9 बजे होगा।

अमृतम जलम अभियान

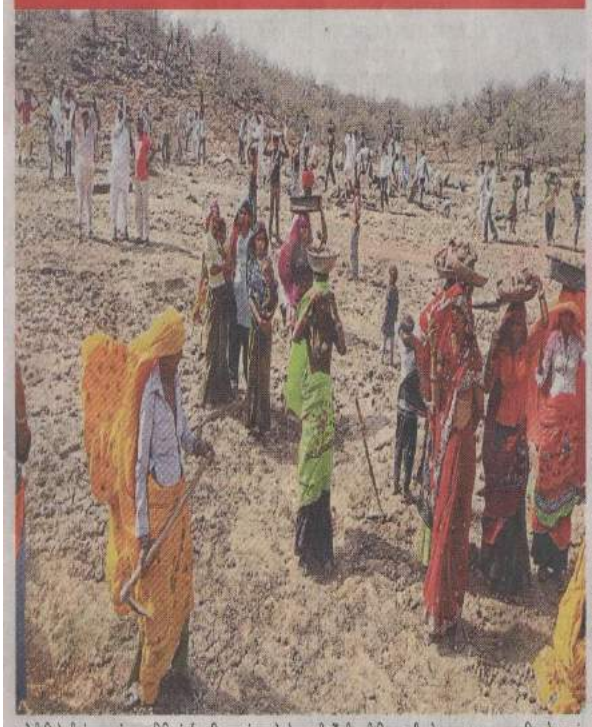

करौली जिले की मंडरायल पंचायत समिति अंतर्गत राहिर ग्राम पंचायत के ठेकला की झौंपड़ी ढाणी स्थित बहरीवाले तालाब पर राजस्थान पत्रिका के अमृतं जलम अभियान के दौरान श्रमदान करते ग्रामीण।

विस्तृत समाचार तथा अमृत जलम के अन्य समाचार सिटीजन पेज पर

बहरीवाला तालाब को अब मनरेगा में किया जाएगा गहरा

करौली @ पत्रिका. डांग इलाके में मंडरायल पंचायत समिति अंतर्गत राहिर ग्राम पंचायत के ठेकला की झौंपड़ी ढाणी स्थित बहरीवाले तालाब को अब मनरेगा से जोड़कर गहरा कराया जाएगा।

राजस्थान पत्रिका के अमृत जलम अभियान के दौरान बहरीवाले तालाब पर श्रमदान करने पहुचे जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दुर्गेस बिस्सा ने इलाके के ग्रामीणों को यह भरोसा दिलाया।

ग्रामीणों ने उनको क्षेत्र की जल समस्या से अवगत कराते हुए सुझाव दिया कि इस तालाब को गहरा कराने से इस इलाके की पानी की समस्या का काफी हद का समाधान सम्भव हो सकेगा। ग्रामीणों की मांग और राजस्थान पत्रिका के जल संरक्षण के अभियान से प्रभावित होकर सीईओ ने तालाब को मनरेगा में जोड़ने की बात कही।

राजस्थान पत्रिका अमृतं जलम् आओ, भगीरथ बनें।

अमृतं जलम् अभियान के तहत श्रमदान में जुटे सैंकड़ों ग्रामीण

जिला परिषद सीईओ ने की शुरुआत

श्रमदान करते जिला परिषद सीईओ।

करौली.@ पत्रिका. आज हमने ठाना है बूंद-बूंद जल बचाकर अमृतं जलम् अभियान को साकार करना है। जल है तो जीवन है। अब इसे नहीं सहेजा तो भविष्य में भयानक तस्वीर बनेगी। मन में कुछ इसी तरह के संकल्पों के साथ सैंकड़ों हाथों में तगारी-फावड़ा लिए ग्रामीण श्रमदान में जुट गए। इस दौरान जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) दुर्गेसकुमार बिस्सा ने भी श्रमदान में हाथ बंटाया। मौका था रविवार को डांग इलाके की राहिर ग्राम पंचायत के ठेकला की झौंपड़ी ढाणी स्थित बहरीवाले तालाब पर श्रमदान का। राजस्थान पत्रिका के अमृतं जलम् अभियान के तहत ग्राम गौरव संस्थान सुक्कापुरा के सहयोग से आयोजित श्रमदान में गांव के बच्चों से लेकर युवक, महिलाएं, बुजुर्गों ने पसीना बहाया। जिला परिषद के सीईओ द्वारा गांव के हनुमानजी की पूजा-आरती के बाद श्रमदान की शुरूआत हुई। जल रूपी अमृत सहजेने की खातिर ग्रामीण सुबह 6.30 बजे से ही तालाब पर जुटने शुरू हो गए। ग्रामीणों ने तालाब पेटे में पड़े पत्थरों को बाहर निकाला, वहीं फावड़ों से मिट्टी की खुदाई कर उसे पाल पर डाला। तालाब में जगह-जगह बिखरे पड़े पत्थरों को बाहर निकाला और मिट्टी की खुदाई की। उन्होंने पाल पर इसको डाला। इस मौके पर जिला परिषद सीईओ दुर्गेस बिस्सा को ग्रामीणों ने विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। ग्रामीणों ने कहा कि गांव में बिजली, पानी, सड़क, चिकित्सा आदि सुविधाओं का टोटा है। ग्रामीणों ने पानी की कमी से भी सीईओ को अवगत कराया।

सुध लेने नहीं आता कोई अफसर

जिला परिषद सीईओ को देख ग्रामीणों में खुशी नजर आई। वे बोले गांव में कभी कोई अधिकारी नहीं आता। आज आप आए हैं तो उम्मीद है हमारी समस्याओं का समाधान होगा। इससे पहले ग्रामीणों ने ग्राम गौरव संस्थान के सचिव जगदीश गुर्जर, समय सिंह गुर्जर के नेतृत्व में सीईओ, पत्रिका टीम सदस्यों को तिलक लगाया और कलाया बांधकर स्वागत किया। गौरतलब है कि ठेकला की झौंपड़ी तक पहुंचना सहज नहीं है। डांग में बसी ढाणी तक पहुंचने के लिए करीब 10 किलोमीटर तक पूरी तरह टूट चुकी उबड़-खाबड़ सड़क को पार करना पड़ता है। इसी वजह से यहां कोई साधन भी नहीं चलते। इसी कारण अफसर भी यहां जाने से कतराते हैं।

अभियान संवारेगा जीवन

पत्रिका के अमृंत जलम् अभियान की सीईओ सहित ग्रामीणों ने प्रसंशा की। ग्रामीण बोले दुर्गम इलाके में बसी ढाणी में यह अभियान सार्थक होगा। जिला परिषद सीईओ दुर्गेस बिस्सा, मण्डरायल पंचायत समिति के उपप्रधान लखनसिंह गुर्जर, ग्राम गौरव संस्थान के जगदीश गुर्जर, समय सिंह आदि ने अभियान की सराहना की।

ग्रामीणों ने सौंपा ज्ञापन

इस दौरान चौबेकी गांव के लोगों ने सीईओ को ज्ञापन सौंपकर नवीन तालाब निर्माण की मांग की। उन्होंने बताया कि गांव में पानी की विकट समस्या है। वहीं ग्रामीणों ने बताया कि गत कई माह से पंचायत में कोई सरकारी कार्य संचालित नहीं हैं।

श्रमदान में उत्साह

गुढ़ाचन्द्रजी. राजस्थान पत्रिका के अमृतम् जलम् अभियान के तहत कस्बे के खरेड़ा बालाजी के समीप

स्वच्छता का महत्व जान उठाया सफाई का जिम्मा

चौबेकी गांव के युवाओं ने गांव में शुरू किया सफाई अभियान

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

करौली. डांग क्षेत्र के चौबे की गांव के ग्रामीणों ने अपने गांव में स्वच्छता की अलख जगाने की पहल शुरू की है। इसके तहत गांव के युवाओं से लेकर बुजुर्गों ने अब स्वयं ही गांव में सफाई की जिम्मेदारी उठाई है। इसके तहत गांव में सफाई अभियान की शुरूआत की गई है।

मण्डरायल पंचायत समिति के उपप्रधान लखनसिंह गुर्जर की अध्यक्षता में ग्रामीणों की बैठक आयोजित हुई, जिसमें वक्ताओं ने जीवन में स्वच्छता का महत्व बताया। इस पर युवाओं को शामिल करते हुए समिति का गठन किया गया। तय किया गया कि बुजुर्गों के सहयोग से पूरे गांव में सफाई अभियान चलाया जाएगा। प्रत्येक पखवाड़े में रविवार को स्वयं ही श्रमदान कर गांव के रास्तों, गलियों को साफ किया जाएगा। इसके बाद सफाई अभियान की शुरूआत भी कर दी गई। इस दौरान ग्रामीणों ने रास्तों से पत्थर के टुकड़ों सहित अन्य कचरे को हटाया। बैठक में उपप्रधान लखनसिंह गुर्जर, दिनेश, साहब सिंह, भूरसिंह, भीमराज, धारासिंह, रामदयाल, मोहरसिंह, योगेश बैंसला, प्रहलाद गुर्जर सहित ग्राम गौरव संस्थान के सदस्य मौजूद थे।

करौली. चौबेकी गांव में रास्ते की सफाई में जुटे ग्रामीण।

राजस्थान पत्रिका Dated :- 05/09/2016

एप पर देनी होगी फसल कटाई प्रयोग की जानकारी

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में बार फसल कटाई प्रयोग करने के बाद पूरी जानकारी मोबाइल एप पर अनिवार्य रूप से अपलोड करने का नियम लागू किया गया है। तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करने से किसानों को लाभ होने की उम्मीद है।

नवाचार से बदलाव

पोखर-पगारा बने मददगार, पत्थर पर तकदीर संवार रहे काश्तकार

विनेश शर्मा, करौली

- करौली के डांग क्षेत्र में सफल रहा अनूठा प्रयोग
- लहलहाने लगी दशकों से बंजर पड़ी जमीन
- 82 गांवों की सैंकड़ों बीघा भूमि उपजाऊ हुई

जिले के डांग क्षेत्र में दुर्गम बीहड़ों की पथरीली भूमि पर किसान अपनी किस्मत चमका रहे हैं। दशकों से बंजर पड़ी किसानों की यह भूमि उपजाऊ होकर अब उनको न केवल सालभर का खाद्यान्न गेहूं-चावल दे रही है, बल्कि रोजगार का प्रमुख जरिया भी बन गई है। स्थानीय ग्राम गौरव संस्थान और काश्तकारों द्वारा पोखर-पगारा निर्माण पद्धति अपनाने से यह संभव हुआ है। इसके तहत बारिश का पानी और मिट्टी का संचय कर पथरीली भूमि को उपजाऊ बनाकर उस पर गेहूं और चावल की फसल ली जा रही है।

करौली जिले के करणपुर, मण्डरायल, कैलादेवी, मासलपुर आदि क्षेत्रों में काफी पत्थर खदानें हैं। पथरीली भूमि का उपयोग किसान नहीं कर पा रहे थे। सिंचाई के लिए पानी का टोटा भी किसानों के समक्ष फसल करने में परेशानी थी। एक दशक पहले इन क्षेत्रों में ग्राम गौरव संस्थान ने जल संरक्षण की दिशा में कार्य किया। इसके तहत पोखर-तालाब, धर्मताल आदि बनाए गए। इसमें संस्था ने क्षेत्र के 82 गांवों में पोखर व पगारा निर्माण शुरू किया। पगारा निर्माण ग्रामीणों के लिए वरदान साबित हुआ। पहले इन क्षेत्रों में किसान केवल राता और लकड़ा किस्म का चावल पैदा कर पाते थे जो 700 से 800 रुपए प्रति क्विंटल बिकता था, लेकिन अब रेशम बासमती चावल की पैदावार भी हो रही है। ग्राम गौरव संस्था के अनुसार इन गांवों में करीब 300 पोखर-पगारा बनाए जा चुके हैं। करीब डेढ़ हजार परिवार इनसे जुड़े हैं।

उपजाऊ हो गई भूमि

पगारा-पोखरों के निर्माण से डांग क्षेत्र के पथरीले इलाकों में अब धान और गेहूं की फसल होने लगी है। पहले पानी की कमी से गेहूं की खेती मुश्किल थी, लेकिन अब भूमि उपजाऊ हो गई, खाद्यान्न मिलने के साथ रोजगार भी मिला है।

लखनसिंह गुर्जर, उपप्रधान, पंचायत समिति मण्डरायल

क्या है पगारा

पथरीले खेत के एक हिस्से में करीब तीन-चार फीट ऊंचाई की दीवार बनाकर पानी निकासी के लिए होल बनाए जाते हैं। बारिश के बहाव के रास्ते पर पोखर का निर्माण होता है। बारिश के पानी के साथ जो मिट्टी-बजरी बहकर आती है, उसमें से पानी तो होल के जरिए आगे निकल जाता है, जबकि मिट्टी-बजरी खेत में जम जाती है। करीब 2 से 3 वर्ष में इतनी मिट्टी जम जाती है कि उसमें गेहूं चावल की फसल आसानी से हो जाती है। जबकि पोखर से पानी से सिंचाई होती है।

बोले ग्रामीण

इलाके में पोखर-पगारा निर्माण ने तो तकदीर ही बदल दी है। जिस भूमि को बंजर समझकर छोड़ दिया गया, वही भूमि अब रोजी रोटी का साधन बन गई है। मवेशियों को भी पानी के लिए भटकना नहीं पड़ता है।

खिलाड़ी, किसान, गजसिंह का पुरा.

पथरीली भूमि होने से पहले यहां भूमि बंजर रह जाती थी। संस्था ने जल संरक्षण-मृदा संरक्षण के क्षेत्र में कार्य किया। एक पगारा दो से तीन साल में ढाई से तीन बीघा जमीन तैयार कर देता है। एक से सवा फीट मिट्टी जमा हो जाती है, जिससे पहले चावल और फिर गेहूं की खेती हो पा रही है। वहीं पोखर से वर्ष भर सिंचाई को पानी मिल पा रहा है।

- समयसिंह गुर्जर, सदस्य ग्राम गौरव संस्थान

पत्रिका एग्रोटेक

किसान भाई कृषि, उद्यानिकी आदि से जुड़ी किसी प्रकार की जानकारी लेने या अपने प्रयोग दूसरे किसानों तक पहुंचाकर लाभान्वित करने के लिए हमें पत्र लिख सकते हैं।

राजस्थान पत्रिका, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर, पिन- 302004
हमें ई-मेल करें... agro.patrika@in.patrika.com

Fertile rocky land

With help from a non-profit, graziers reinvent a soil conservation practice, turn into thriving farmers

JITENDRA Karauli, Rajasthan

Moolchand looks up after piling a stack of his wheat harvest, wipes sweat from his face, and smiles. "Harvests are more compared to last year and I will be busy till the wheat reaches my house," he says. The 65-year-old farmer from Nivera village in Rajasthan's Karauli district points towards a low cement structure across the dried stream Karalwahoda, and says, "this pagaras has changed my life. There was a kuchcha pagaras here 10 years ago but we could harvest only a third of what we do now."

Moolchand then gets busy making a machaan (tree house) where he will stay the night to guard the harvest against wild animals. He has harvested seven tonnes from his 1.2-hectare farm. Asking his son Kuber to look after the grain, Moolchand says, "Earlier, we were completely dependent on cattle rearing. But after a fodder constraint in the early 1990s, we took to farming. The old kuchcha pagaras came to our aid. Even my grandfather had no idea when the stone structure was erected."

About 200 km east of Rajasthan's capital Jaipur, once abounding in prickly acacia and terribly parched in summer, Moolchand's village is a part of a region reinventing an old soil conservation system. The ...

Moolchand, a grazier-turned-farmer in Nivera village, Rajasthan

(Above) Concrete pagaras, a soil conservation structure, built next to kuchcha pagaras in Nivera village; Rock paintings in Albari village show pagara-like structures

... while grazier describes the kuchcha pagaras as a low wall of stone plates that check the soil being swept away by the stream's monsoon flow.

Karan Singh, an activist with non-profit Gram Gaurav, explains the structure's working. "The stream carries rainwater and soil from surrounding plateau and hills. The pagaras makes this soil settle down and accumulate on bed rocks," he describes. People grow crops on this accumulated soil once the monsoon recedes.

The genesis

Singh's organisation is among those credited with giving a new focus to these traditional irrigation structures, making them more effective. "In 2001, I initiated construction of lakes and ponds in Sawaimadhopur district adjoining Karauli. These areas were then reeling from water scarcity. Soon I was looking beyond textbook water harvesting methods," he says.

Some families in Khajura village in Karauli were practising farming by constructing kuchcha pagaras to slow down soil erosion. This traditional system of farming and water harvesting had a big influence on Singh who was schooled in water conservation by constructing ponds and lakes. "The farmers did not use fertiliser but the water coming down to the stream was replete with organic manure," he says.

Soil was still getting eroded. Singh thought a cement structure would be more effective in checking erosion. "I was, however, an outsider. People in the region were understandably wary of me and not ready to experiment," he recalls. In 2006, two residents of Albari village in Karauli, Ram Singh and Shripath Gurjar, broke the ice and helped Singh organise a meeting with farmers in their village.

Breaking mindsets

At the meeting, a few farmers described the history of pagaras in the region. They talked of a legend, which describes people of the Lodh community practising farming on rocky land using this method 300 to 400 years ago. There are remains of pagaras in the jungles surrounding the area. Such water harvest-

An oasis for cattle

Visitor's comments

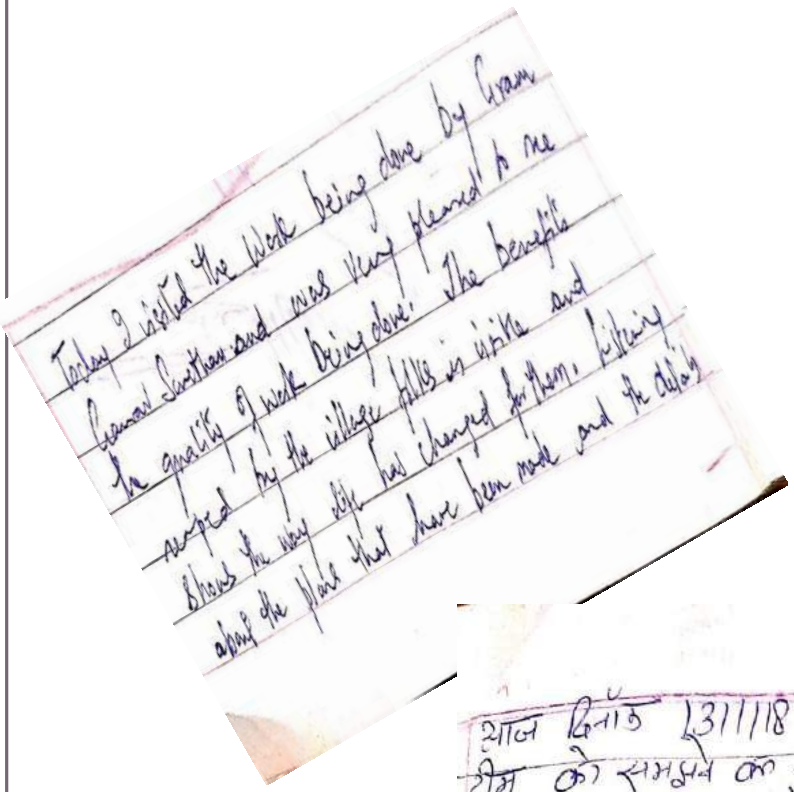

Today I visited the work being done by Gram Gaurav Sansthan and was very pleased to me the quality of work being done. The benefits enjoyed by the village folks is visible and shows the way life has changed for them. Listening about the plans that have been made and the

06.01.2018

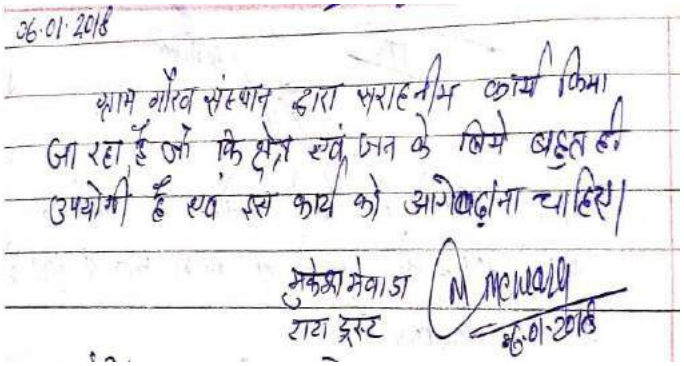

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है जो कि क्षेत्र एवं जन के लिये बहुत ही उपयोगी है एवं इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिये।

मुकेश मेवाड़ा
टाटा ट्रस्ट
[signature] 06.01.2018

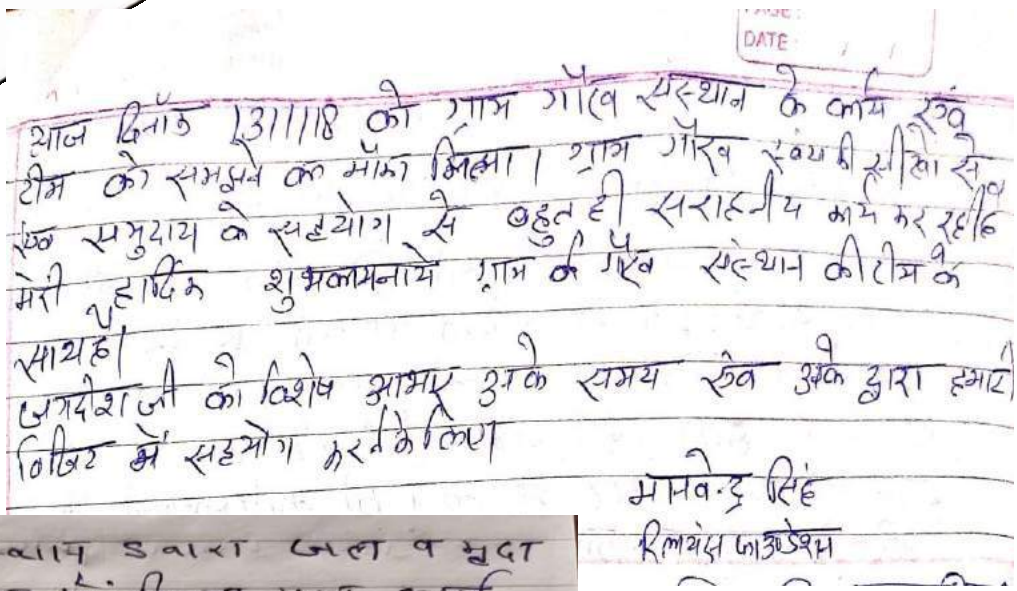

आज दिनांक 13/1/18 को ग्राम गौरव संस्थान के कार्य एवं टीम को समझने का मौका मिला। ग्राम गौरव संस्थान की टीम ने समुदाय के सहयोग से बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे हैं। मेरी हार्दिक शुभकामनायें ग्राम गौरव संस्थान की टीम के साथ हैं।
जगदीश जी का विशेष आभार उनके समय एवं उनके द्वारा हमारे शिविर में सहयोग करने के लिए।

मानवेन्द्र सिंह
रिलायंस फाउंडेशन

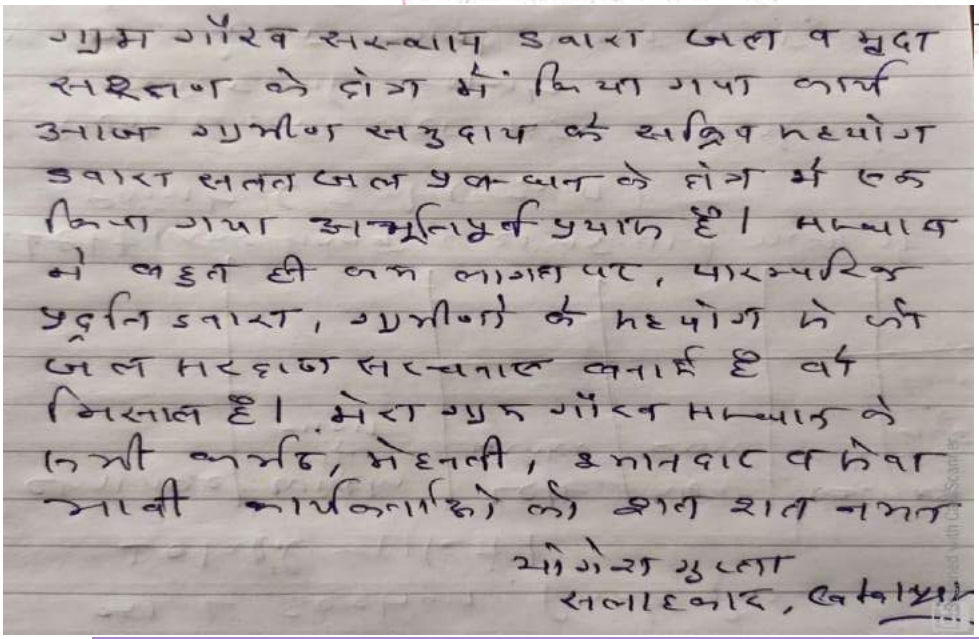

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा जल व मृदा संरक्षण के क्षेत्र में किया गया कार्य आज ग्रामीण समुदाय के सक्रिय सहयोग द्वारा सतत जल प्रबन्धन के क्षेत्र में एक किया गया अभूतपूर्व प्रयास है। संस्थान ने बहुत ही कम लागत पर, पारम्परिक पद्धति द्वारा, ग्रामीणों के सहयोग से जो जल संरक्षण संरचनाएं बनाई हैं वह मिसाल है। मेरा ग्राम गौरव संस्थान के निजी ऊर्जा, मेहनती, ईमानदार व सेवा भावी कार्यकर्ताओं को शत शत नमन

योगेश गुप्ता
सलाहकार, [illegible]

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

Sh. Vijay Mahajan, CEO, RGF

Sh. Sachin Sachdeva,Paul Hamlyn

Many important practitioners

Mrs. Poonam Madan

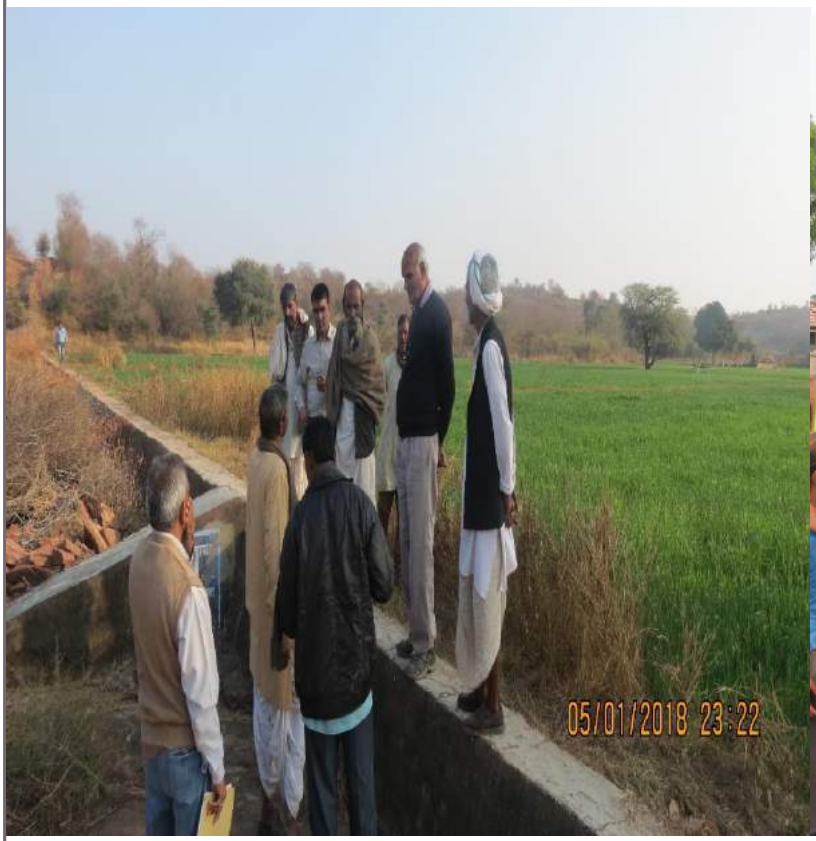

Sh. C.P.Pathak, Tata Trust

ग्राम गौरव संस्थान में विजिट किये हुए गणमान्य लोगो की सूची

क्र.	नाम	पता
01	सुरेन्द्र बाबू	नाबार्ड जयपुर
02	श्रीजा मेडम	आर.जी.एफ नई दिल्ली
03	श्री निखिल माथुर	आर.जी.एफ नई दिल्ली
04	शाहरबीनजी	मुम्बई
05	श्री ललीत मोहन	सहगल फाउण्डेशन
06	डां दीपक चंन्द्रा	आर.जी.एफ नई दिल्ली
07	श्री राजेन्द्र जयसवाल	प्रकृति फाउण्डेशन दाहोद गुजरात
08	वर्णदेव गुप्ता	आर.जी.एफ नई दिल्ली
09	वभैव वालिया	आर.जी.एफ नई दिल्ली
10	श्री प्रभाकान्तजी	डी.एस. फाउण्डेशन नोएड़ा
11	अल्का तलवार	टाटा ट्रस्ट
12	श्री मनमोहन मल्होत्रा	आर.जी.एफ नई दिल्ली
13	श्री मुकेश मेवाड़ा	टाटा ट्रस्ट
14	श्री चंन्द्रशेखर पाठक	टाटा ट्रस्ट
15	श्री मानवेन्द्रसिंह	रिलायन्स फाउण्डेशन
16	IAS श्री संपत कुमार	आर.जी.सी.टी नई दिल्ली
17	श्री सवाईसिंह निठारवाल	वाटर संस्था
18	श्री हेमन्तजी	वाटर संस्था
19	श्री शंकर मोरे	वाटर संस्था
20	श्री मक्खनलालजी मीना	डी.डी.एम नाबार्ड
21	पूनम मदान मेडम	
22	श्री विजय महाजन	राजीव गांधी फाउण्डेशन
23	श्री आसिफ जैयदी	सर सैयद ट्रस्ट
24	श्री संजय शर्मा	मंजरी फाउण्डेशन
25	कर्नर प्रभाकर	
26	श्री प्रभाकान्त जैन	धर्मपाल सत्यपाल ग्रुप
27	डा.पी.के.सिंह	CTAE महाराणा प्रताप युनिवर्सिटी
28	श्री शुभकरणसिंह	अर्पण सेवा संस्थान
29	श्री भवानी सिंह	सृजन संस्थान
30	श्री योगेश गुप्ता	Catalyst
31	श्री आचियोन्तो घोष	काबिल
32	श्री सचिन सचदेवा	पाल हेमलन फाउण्डेशन
33	श्री राजेन्द्र जयसवाल	प्रकृति फाउण्डेशन

डालमिया पानी पर्यावरण पुरूस्कार. -

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा वर्षा जल संग्रहण के क्षेत्र में किये गये अभूतपूर्व योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सी संस्थाओ, सरकारी विभागो के वरिष्ठ अधिकारी, ट्रस्ट, बुध्दीजीवियो, प्रोफेशनल एवमं मीडीया द्वारा सराहा गया है ।

संस्था के जल संग्रहण के क्षेत्र के किये गये कार्यो को देखने हजारो लोग डांग क्षेत्र में आये भी है तथा संस्था द्वारा वर्षा जल संग्रहण में डांगवासी की आजीविका सूदृढ करने के मॉडल की भूरी–भूरी प्रशंसा की है । इसी क्रम में रामकृष्ण जयद्याल डालमिया सेवा संस्थान द्वारा वर्ष 2015 में ग्राम गौरव संस्थान को अष्टम डालमिया पानी पर्यावरण पुरूस्कार से नवाजा गया । यह पुरूस्कार ग्रामीण गौरव को राजस्थान में जल एवम् पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सराहणीय भूमिका में निर्वहण हेतु प्रदान किया गया है।

रामकृष्ण जयदयाल डालमिया सेवा संस्थान
चिड़ावा, जिला-झुन्झुनू (राजस्थान)
द्वारा उद्घोषित
अष्टम् डालमिया पानी पर्यावरण पुरस्कार, 2015
ग्राम गौरव संस्था,
करौली (राजस्थान)
प्रोत्साहन पुरस्कार - हाड़ौती-ढूढाड़ संभाग
आपने राजस्थान राज्य में जल एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया है। इस महत्वपूर्ण अनुकरणीय सामाजिक योगदान के लिये हम आपका सम्मान करते हैं।
(प्रो. एम.एस. राठौड़)
अध्यक्ष
डालमिया पानी पर्यावरण पुरस्कार
(विष्णु हरि डालमिया)
अध्यक्ष
रामकृष्ण जयदयाल डालमिया सेवा संस्थान
27 नवम्बर, 2015

JOURNEY OF GRAM GAURAV SANSTHAN

सफलता की कहानियॉ
ग्रामीण समुदाय की जुबानी

DAANG PREMIER GRASS ROOT BASED ORGANISATION IN NRM

1. अपने बलबूते से बुझाई कण्ठ कि प्यास

(ग्राम रावतपुरा के एकजुट प्रयास से पीने के पानी की समस्या का अन्त हुआ)

रावतपुरा गांव डांग क्षेत्र का घने जंगलो मे काफी रिमोट क्षेत्र में बसा है । गांव में 103 परिवार हैं जिसमें 70 परिवार अन्य पिछड़ा वर्ग से गुर्जर जाति के एवं 33 परिवार अनुसूचित जाति से बैरवा जाति के हैं । पशुपालन एवं कृषि गांव की आजीविका का मुख्य साधन रहा है । गाव में कुल पशुधन भैंस 700, गाय 300, बकरी 1200, भेड़ 150 इस प्रकार से कुल 2350 पशुधन है लेकिन गांव में किसी भी सार्वजनिक जल संरचना के अभाव के कारण गांव की महिलाओ को 05 कि.मी. दूर कुरकामठ गांव में पानी लेने के लिए जाना पड़ता था । दिन में 03 से 04 चक्कर पानी लाने के बाद महिलाओ कि स्थिति अत्यन्त ही द्यनीय हो जाती है लेकिन कोई उनके दुखो को जानने वाला नही था । ग्रीष्म ऋतु में पशुपालको अपने पशुओ के साथ तराई के क्षेत्रो में पीने के पानी की व्यवस्था के लिए जाना पड़ता था गांव में 1500 बीघा जमीन खेती योग्य थी । पंरतु गांव को किसान सर्दियो में मावठ कि आस में ही रबी की फसल में लेता था जो किसी साल होती थी एवं किसी साल नही होती थी । कुल मिलाकर रावतपुरा किसान कि जिन्दगी किसी नर्क से कम नही थी ।

Water table in well in month of June

लेकिन शायद भगवान को भी रावतपुरा के लोगो का दुख गवारा नही था । वर्ष 2003 में वहॉ कि स्थानीय संस्था ग्राम गौरव संस्थान की गठनकर्त्ता समूह द्वारा कि जा रही पद यात्रा के दौरान गावं के लोगो का संस्था के लोगो से संवाद हुआ और उनके मन में आशा कि किरण जागी । पद यात्रा के समापन के दौरान गांव के कुछ लोग संस्था के लोगो से मिले और संस्था के लोगो को

आमंत्रित किया । बस उसके बाद तो क्या था, भगवान ने गांववासियो कि ऐसी सुनी कि **वर्ष 2003 से लेकर वर्ष 2016 के बीच रावतपुरा गांव में 18 निजी व सार्वजनिक पोखरो को निर्माण संस्थान द्वारा किया जा चुका है** ।

पोखर के निर्माण की श्रृंखला के कारण कुओं का जल स्तर काफी बढ़ चुका है । आज 5 किलोमीटर नही 50 मीटर पर ही शुद्ध पेयजल मिल रहा है आज तो 250 बीघा सरसो व 300 बीघा के क्षेत्रो में गेहूं पक रहा है जो बहुत बड़ा चमत्कार है । ऋषिकेश जैसे किसानों ने तो लाखों रुपए लगाकर अपने स्वयं के पोखर वर्ष 2018–19 में निर्माण कर के मिसाल कायम कर दी है।

21वीं सदी देश–दुनिया के लिए कैसी भी रही हो पर रावतपुरा के रामनिवास, अर्जुन, जगन्नाथ, पूरण की जुबानी जब सुनते हैं ***तो ग्राम गौरव संस्थान गौरवान्वित होता है ।***

अर्जुन बोला – सही बात है जी संस्था वाले आए उन दिनों में चैत्र माह से असाढ तक कोसों दूर कुरकामठ की खोह से (सैकड़ों हाथ नीचे) सिर के बल एक कोस पैदल चलकर पानी लाते थे सोते और जागते तो पान्यो (पानी) की चिंता सताती थी संस्था वालों ने खूब मीटिंग की और साहस बंधाया कि कि जब तक आप और हम सब मिलकर ताल, पोखर नहीं बना पाएंगे तब तक हमारे दिन बहाल नहीं होंगे

रामनिवास कहता है "दादा पान्यो तो आपने ही पिलाया है"

आज गांव में पीने के पानी भरपुर है तथा किसी भी परिस्थिति में गांव कि किसी भी महिला को पीने के पानी की व्यवस्था के लिए बाहर जाने कि जंरूरत नही पड़ती है तथा कोई भी किसान भाई पशुओ को लेकर पलायन नही करता है । पहले जिस रावतपुरा गांव में पीने के पानी कि एक बूद नही थी उसी रावतपुरा गांव के ग्रामीण समुदाय ने पारस्परिक सहभागिता एवं ग्राम गौरव संस्थान के नेतृत्व में अपने गांव को पानीदार बना दिया है ।

- लगभग 6500 पशुओ को वर्ष पर्यन्त पीने के पानी की सुविधा हो गयी है ।
- गांव के 1500 परिवारो को पीने का पानी सुगमता से प्राप्त हो रहा है ।
- जहॉ गांव में 1500 क्विटल गेहू खरीदे जाते थे वही गांव आज 3000 क्विटल गेहू व 1000 क्विटल सरसो पैदा कर रहा है ।
- गांव में पारस्परिक भाई चारा व एकजुटता का माहौल बना है ।
- खेती व पशुपालन से परिवार की आय बढ़ी है जिससे गांव के परिवार की सामाजिक व आर्थिक उन्नति हुई है ।

Jhirniya wala Taal, Rawatpura

2. मेहनत रंग लाय

दो गांव के सहयोग से मिलकर पेयजल आपूर्ति की समस्या का किया समाधान

गांव बरकी व नरेकी कि लगभग 125 गांव की आबादी पशु एवं आमजन के पीने के पानी से त्रस्त थे । गांव कहने को तो एक नाला बहता है परंतु नाले में जगह–जगह 3 से 4 फीट गहरे–गहरे कई भुजा वाले स्थानीय भाषा में कोयले कुआं या बेरा खुदे हुए थे जिनका दिनभर का झरना 8 से 10 मटकी पानी का ही होता था जो गाव की आवश्यकता से बहुत कम था इसलिए बरसाती दिनों के बाद पशुपालको को दूर–दूर अपनी भैंस, गायों को रायबेली गांव तक 6 किलोमीटर दूर भी मवेशियों को पानी पिलाना पड़ता था । ग्रामीण समुदाय द्वारा ग्राम पंचायत एवं जनप्रतिनिधियो से लाखो बार गुहार लगाने के बावजूद भी कोई बात नही बनी तो ग्राम संगठन ने अपनी बात ग्राम गौरव संस्थान के सामने रखी । चूकि संस्थान के पास उस वक्त ग्राम बरकी के लिए कोई ज्यादा राशि उपलब्ध नही थी ऐसी स्थित में भी ग्राम वालो ने हार नही मानी तथा ताल में लगने वाले खर्च का आधा सहयोग स्वयं के स्तर पर करने की ठानी । गांव बरकी के जुझारूपन व द्रढ निश्चय को देखकर पडोसी गांव नरेकी भी आगे आया क्योकि वहॉ के लोग भी यह जानते थे कि इस ताल के निर्माण से उसके पशुओ व आमजन के कण्ठ की प्यास बुझेगी ।

बस फिर क्या था, वर्ष 2010–11 में संस्थान के कार्यकर्ताओं के प्रयासों से बरकी गांव की सोई हुई शक्ति को जगा कर ऐसी जाग्रतता प्रदान की जो कार्य असंभव या ऊंचे लोगों के हाथों होना था वह गांव वालो के ही हाथों से ऑक वाला ताल का निर्माण हुआ जिससे आज चार गांव खातेकी, नरेकी, बरकी, कुलराकी गांव की 300 परिवारो की आबादी भरपेट 12 महीनें पानी पीते हैं तथा लगभव 1500 दुधारू पशु 4000 छोटे जानवरो को वर्ष पर्यन्त पानी उपलब्ध रहता ।

ग्राम गौरव संस्थान के सचिव जगदीशजी बताते है कि गांव बरकी के नीचे कि तरफ **आंक वाला तालाब** बना हुआ है जिसमें साल भर पानी रहता है इसलिए गरमी के दिनो में 8 से 10 कि.मी. क्षेत्र के सभी गांव के पशु यहॉ पानी पीने आते है पास के गांव नरेकी, खातेकी, कुलराकी, दौलतियाकी तथा लखरूकी के ग्रामीण **आंक वाला तालाब** बनने से खुश है वरना उनको अपने पशुओ के साथ 30–40 कि.मी. दूर तराई के क्षेत्रो में पलायन करना पड़ता था जो अभी पलायन नही करते है।

आंक वाला ताल के बनने के बाद उसके नीचे बने हुए कुओ में 1 किलोमीटर दूर तक खोदे कुओ में हमेशा पानी रहता है अब बरकी के लोगों का अपने हाथों से बनाये हुए आंक वाला ताल के पानी से आनंद हो गया एवं अपने आप को ग्राम वासी गौरवान्वित महसूस करते है । जिनसे आस रहती थी वो नहीं कर पाए उनकी स्थिति वो जाने पर बरकी गांव की मेहनत

रंग लाई अब गांव में ऐसे कई और ताल, पैगारा बना कर खेतों में भी स्वावलंबन की ओर बढ़ने की तैयारी में प्रयासरत् हैं ।

3. बंजड़ से सिंचित हुई जमीन

ग्राम–चौबेकी की जुबानी

ग्राम–चौबेकी, कैलादेवी से 6 किलोमीटर अतेवा गांव के समीप से पूर्व दिशा में डांग में चढ़ने पर 5 किलोमीटर दुर स्थित है गांव में कुल परिवार 104 हैं । कहने को तो गावं मे पांच नाले है परंतु नालो में जल संरक्षण के अभाव अथवा उपलब्ध टूटी फूटी संरचना के कारण अधिकाश पानी नालो के माध्यम से बह जाता है जिसके कारण 100 से 120 बीघा जमीन में ही धान व गेहूं की बुवाई होती थी ।

वर्ष 2005–06 में संस्था के प्रवेश के बाद गांव में एक धर्मताल का जिर्णोध्दार किया गया तथा पांच नई पोखर एवं आठ पैगारो का निर्माण हुआ । तीन से चार वर्षों से हर वर्ष 400 बीघा में गेहूं और 200 बीघा में धान पैदा होने लगा है यहां करीब 60 से 70 बीघा जमीन एक छत पत्थर से द्विफसलीय तैयार हुई है और 200 बीघा ढलाउ बंजर जमीन सिंचित हुई है बंजर भूमि को सिंचित करने में गांव ने अपनी पेयजल आपूर्ति से बचे ताल के पानी से गेहूं, जौ, सरसो की पैदावार कर रहे हैं इस ताल का संवर्धन गांव वालों ने संस्थान व स्वयं के आर्थिक सहयोग से अपनी स्वयं की देखरेख में की है ।

डांग क्षेत्र में धर्मताल, पोखर, पैगारा कैसे गांव कि किस्मत को बदलते है इसका सबसे अच्छा उदाहरण गांव चौबेकी है जहॉ 1 धर्मताल के जिर्णोध्दार व 5 नई पोखर एवं 8 पैगारो के निर्माण से सुखे के अभाव से ग्रसीत गांव आज अन्नदाता बन गया है गांव में आज –

1. गांव की 400 बीघा भूमि मे गेहू व 100 बीघा भूमि में धान पैदा हो रहा है ।
2. गांव के 5 नालो कि 70–80 बीघा भूमि जो जल बहाव के साथ मिट्टी कटने से बेकार हो चुकी थी पुनः पैगारो के कारण खेत में परिवर्तित हो गई है तथा उस पर खेती होने लगी है ।
3. लगभग 250 बीघा अतिरिक्त भूमि में सिचाई कि सुविधा बढ़ी है।
4. गांव के लोग गेहू के अलावा सरसो, जौ जैसी फसले भी ले रहे है ।

5. गांव के लगभग 125 परिवारो को स्वयं व पशुओ के पीने के पानी की सुविधा हो गई है ।

Pokhar

Chobeki Anicut

4. डांग में पैगारो से कृषि कि बदलती तकदीर

छोटेलाल की कहानी उसी की जुबानी

छोंटेलाल हुआ खुशहाल – छोटलाल मीना पिता श्री रघुवरमीणा ग्राम कशियापुरा का रहने वाला इनके परिवार में दो बेटा व एक बेटी सहित कुल पांच सदस्यो का परिवार है ं। छोटेलाल के पास सिंचित व असिंचित पांच बीघा जमीन है यह जमीन नाले में स्थित होने के कारण बरसाती दिनो में बरसात का पानी बहकर निकल जाता था तथा पानी क साथ मिट्टी भी बहकर चली जाती थी इसके कारण छोटेलाल की खेत की उत्पादन क्षमता न के बराबर थी और उसको अपने खाने के लिए अनाज क्रय करना पडता था ।

कहने को तो छोटेलाल के पास चार भैस थी पर इन भैसो के लिए चारा तीन से चार माह का ही मिल पाता था तथा छोटे लाल का चार से पांच महिने का समय अपनी भैसो के साथ उनके चारा व पानी की उपलब्धता के लिए पलायन कर जाता था । इन दिनो में छोटेलाल के परिवार को बहुत ज्यादा समस्याओ से गुजरना पड़ता था क्योकि उसके परिवार में उसके वृध्द मातापिता व छोटे बच्चे थे ।

पैगारा बनने से किसी परिवार के जीवन मे क्या बदलाव आता है तथा उसको बनाने के लिए ग्राम गौरव संस्थान एवं हितग्राही को संस्थान की किन प्रक्रियाओ से गुजरना पड़ता है इसका बखुबी वर्णन छोटेलाल ने अपनी जुबानी किया है ।

छोटेलाल बताता है कि "मेरी जमीन में हर वर्ष में बीस से पच्चीस दिन तक कोरे पत्थरो को लगाकर पैगारा तैयार करता था पर पहली बरसात में ही या एक दो बरसातो के बाद में कोरे पत्थरों का पैगारा टूट जाता था एवं बरसाती पानी के साथ मिट्टी भी बहकर चली जाती जमीन में जाकर देखता तो ऐसा प्रतीत होता जैसे खून और मांस नही रहने पर कंकाल दिखाई देता है " । ऐसा ही मेरा खेत पानी और मिट्टी के अभाव में सूखा पड़ा हुआ था मेरे बालको को सहित मेरे परिवार को बारह महिने में तेरह क्विटल अनाज कि जरूरत उस समय होती थी जो मै मण्डरायल से या हिण्डौन से खरीदकर लाता चूकि मेरा गांव करौली से चालीस किलोमीटर दूर है साधनो का अभाव रहता था तो अनाज के लिए हर महीने करौली जाना आना पड़ता था ऐसी स्थिति में मैने उपरवाले से अरदास

(प्रार्थना)करी कि हे भगवान मेरे पशुओ को चारा, मेरे बालको को अनाज मेरी जमीन में भी पैदा हो, पर मेरे खेत की मिट्टी रोकना मेरी सामर्थ के बाहर था ।

भगवान में मेरी अरदास 2010–11 में सुन ली और हमको पता चला कि हमारे नजदीकी गांव तीनपोखर में ग्राम गौरव संस्थान वाले लोग आए है जो कोरे पत्थरो के बजाय सिमेंट कांक्रीट का पैगारा निर्माण करने में आर्थिक मदद करते है इन सीमेंट, कांक्रीट के पैगारो से मिट्टी तो रूकती है साथ में पानी भी रूकता है जिससे सात से आठ माह तक जमीन नमी बनी रहती है।
इसी सोच के साथ मै हमारे पडोसी गांव तीन पोखर में गया चूकि तीन पोखर में संस्था वालेा का आना जाना रहता था तो मैने सेाचा मै भी उनके सहयोग से पैगारा निर्माण करवाउगा ता कि मेरे भी बंजर जमीन से द्विफसलीय जमहीन तैयार होगी संयोग वश उसी दिन तीन पोखर में संस्थान के लोग गांव में निर्मित पैगारो का हितग्राहियो एवं ग्राम वासियो के बीच बैठकर संरचना निर्माण का हिसाब किताब करते देखा । हमने उनसे पुछा आप किस चीज का हिसाब कर रहे है चूकि हम संस्थान के कार्यकत्ताओ को पहले से नही जानते थे तो तीन पोखर के गोविन्दाजी ने संस्था के कार्यकत्ताओ के बारे में विस्तार से हमको बताया साथ में उन्होने कहा कि ***"ऐसो ईमानदार लोग न देख्यो"*** इस तरह गोविन्दाजी ने अपनी भाषा में टीम कि कर्त्तव्य निष्ठा पारदर्शिता एवं इनके द्वारा किये जाने वाले कार्य कि महत्वता से विस्तार से संवाद हुआ ।

मैने ग्राम गौरव संस्थान कार्यकर्त्ता मांगीलालजी से हमारे गांव में आकर हमारे पैगारे में सहयोग करने वास्ते कहॉ तो उन्होने हमसे कहॉ कि हम हमारे साथियो के साथ आपके गांव में आकर आपके ग्रामवासियो के साथ एक बैठक करेगे उसके बाद आपके कृषि योग्य नालों का अवलोकन करने के बाद ही हम कह सकते है कि हम आके यहॉ सहयोग कर पायेगे मै निराश भाव से होकर तीनपोखर से वापिस कसियापुरा आया आते ही मेरी घरवाली ने पूछा कि क्या संस्था वाले साथ में नही आये हमारा चेहरा पढकर वह चिंता में बोली कोई बात नही अब नही तो दोबारा आऐगे ।

जनवरी 2011–12 में इन्ही दिनो में दोपहर बाद के ढलते सूरज के साथ संस्थान कार्यकर्त्ता हमारे खेत के ऊपर नाले में आते हुए दिखाई दिये तो हमारे मन में अचानक आया कि सूरज छिप नही रहा ऊग रहा है हमने उनके साथ रामा श्यामा किया हमारी जमीन को बताया और जमीना में भी पैदा नही होने से होने वाली समस्याओं के बारे में जिसमें पशुओ का चारा, बालको को अनाज, दूध, समय पर उपलब्ध न होना और हमारे घर खर्च के लिए खान खूट्टी में मजदूरी करते हुए तंगहाल फटेहाल देखा ।

मै बड़े उल्लास के साथ इन कार्यकत्ताओ को शाम को हमारे गांव मे ले गया गांव जाकर मैने इनके द्वारा किये जाने वाले काम की बातचीत रखी चूकि तीनपोखर में इनका पहले से अच्छा काम था इसकी प्रशंसा गाव के सभी लोगो ने सून रखी थी गांव के पच्चीस तीस

लोगो ने इनके काम के बारे में समझा व हमारे काम के बारे में भी हमने इनको बताया इनके द्वारा तय किया गया कि हमको जहॉ–जहॉ से मदद मिलेगी उस मदद में से कार्य हेतु आपके गांव को भी जोड़ा जावेगा चूकि आपका गांव भी आंगईताल, पांचनाबांध व चंबल तीनो के बने संगम रीज पर है तो हम आपके गांव में काम करेगें ग्राम वासियों के अनुसार नाले में काम शुरू करने से पहले नाले को देखकर काम तय किये जिसमें 2011–12 में मेरे खेत के पैगारे का नंम्बर नही आ सका ।

मै काफी निराश हुआ पर विश्वास अंदर से बना रहा कि गांव की बनाई हुई संगठन व समिति जो निर्णय करेगी व मान्य होगा ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकत्ताओ के सहयोग से गांव में ग्राम संगठन एवं ग्राम विकास समिति का चयन हो गया व काम शुरू गांव में कर दिया गया वर्ष 2014–15 में काफी लंबे इंन्तजार के बाद मेरे खेत में

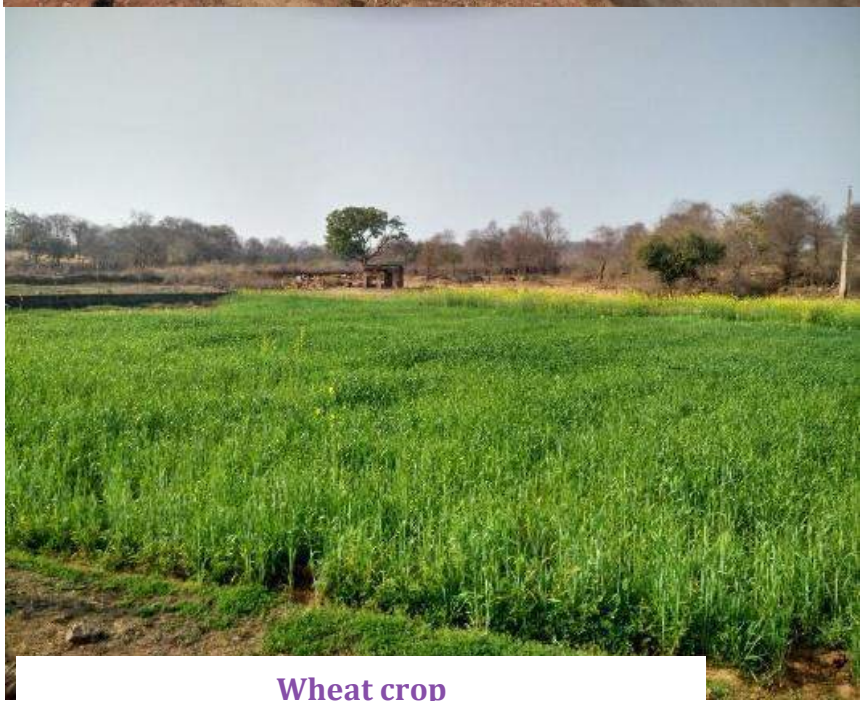

Wheat crop

पैगारा लगना तय हुआ जिससे सस्थान का सहयोग भी रहेगा ग्राम गौरव संस्थान द्वारा ग्राम संगठन के साथ तय कि गई शर्तो के अनुसार पैगारे निर्माण में सिमेन्ट, पानी, कारीगर, नीव खुदाई व तकनीकि ग्राम गौरव संस्थान देगा व पत्थर, बजरी, श्रमीक मेरी (हितग्राही) तरफ से देना तय हुआ,

Mustard crop

मार्च 2015 में मेरे पैगारा का निर्माण पुरा हुआ आज भी मेरे मौखिक याद है कि मेरे पैगारे निर्माण का हिसाब ग्राम गौरव संस्थान व ग्राम सगठन के बीच बैठकर हुआ जिसमें रू 75340/– (अक्षरी पचहत्तर हजार तीन सौ चालीस रू) ग्राम गौरव संस्थान के द्वारा दिया गया एवं रू 78050/– (अक्षरी अठहत्तर हजार पचार रू) मेरे स्वयं के खर्च हुए पैगारा निर्माण को अभी तीन साल हुए है तीन संवत् ही इन पैगारा ने देख है अभी मेरी गेहूँ कि फसल खड़ी है मैने घर खर्च लायक सब्जी बो रखी है जिसमे (सेगरी, लहसून, मेथी, पालक, धनिया) जिससे में घर में रोजाना शाम को सब्जी बनती है पौ वर्ष मे मेरे खेत में अडतालीस मन गेहूँ पैदा हुए गेहू रखी हुई टंकी की तरह इशारा करते हुए छोट लालजी के मुह से बरबस निकला (अन्न पुराना घी नया) वाली कहावत चरितार्थ हुई है मेरी भैसो को पूरी बारह महीने का सूखा चारा, आठ माह तक हरा चारा, मेरी जमीन मे पैदा हो रहा है आज मेरे घर में सुबह शाम दोनो समय का 10 लीटर दूध होता है मेरे बालक अच्छी बिना फटी हुई ड्रेस पहनकर स्कूल जा रहे है मेरी जमीन में पौ वर्ष 40 मन धान पैदा हुआ है जिसको बेचने पर मेरे को रू 42,000 नगद प्राप्त हुए वही अब मेरे को भैसो के साथ पलायन नही करना पड़ता ।

छोटेलालजी अपनी खुद की जमीन पर धान व गेहू की खेती उगाकर अचानक कहता है साहब आपके काम ने मेरे जीवन जीने की दशा एवं दिशा में बदलाव किया है **मेरा तो एक ही कहना है मेरे खेत जैसा पैगारा पूरे गांव के नालो में बन जाये तो हमारे गांव को अन्न, दूध, चारा के भण्डार कभी कम न होगे । नाबार्ड द्वारा सहयोगीत पैगारा श्रुखलाओ में इसी गांव के शिवराम मीना के खेत पर पैगारा बना**

शिवराम मीनाजी के अनुसार साहब हमारा पैगारा भी छोटेलालजी के पैगारे के साथ में बना था हमारे एक दाना पैदा नही होता था जो पौ वर्ष में 40 मन गेहू व 15 मन धान हुआ है मेरी भैसे को पूरे 12 माह चारा मिलता है शिवरामजी कहते है कि मेरे खेत नही थे ऐसा लगता है एक छत पत्थर वाला नाला है खेत कि तरफ ईशारा करते हुए बडे हर्ष व उल्लास के साथ अपने खेत में खड़ी फसल गेहूँ व सरसो को हर आने जाने वाले आगन्तुक को दिखाता है और कहता है *"हे भगवान सब किसी के हुईयो" (होना चाहिए)*

5. सफल कहानी महाराजपुरा की

डांग का नाम लेते ही रूहे खडी हो जाती है क्योकि यहॉ अरावली की तंग घाटियों में बहुत ही मेहनत से लोग जीवन–यापन करते है यहां तंग घाटियों का लाभ उठाते हुए डकैत भी अपनी शरणस्थली बना लेते है । महाराजपुरा गांव कहने को तो बड़ा गांव था जहॉ 110 परिवार निवास करते थे पर कुओ व ट्युबवेल में जल के अभाव के कारण यहॉ रबी की खेती न के बराबर थी जिनके पास सिचाई के साधन थे उनके साधन भी 1.30 से 2 घंटे ही इंजन की चाल झेलता था तथा फिर दम तोड़ देता था ।

टयुबवेल में भी अपर्याप्त पानी होने के कारण रबी की फसल की प्यास नही बुझाती थी देखे तो हर दुसरा खेत रबी की फसल में मायुस नजर आता था । ऐसे में यहॉ भू जल स्तर की जगह सतही जल संरचना ही सिचाई का एक मात्र विकल्प नजर आता था ।

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा सबसे पहले मासलपुर के बरतेन का पुरा गांव मे पोखर का निर्माण किया गया । इस काम के संपादन तक संस्था के कार्य शैली से ग्रामीण समुदाय भली भाती अवगत हो गयबरतने का पुरा के पोखर सैनिक भभूती पटेल की प्रेरणा से महाराजपुरा गांव के लोगो ने भी ग्राम गौरव संस्थान के सहयोग से मिलकर ताल बनाने का निर्णय लिया । हालाकि शुरूआत में आपसी विश्वास के कारण ताल निर्माण का कार्य लंबा खिचता चला गया परंतु इस दौरान रामसहाय कि निजी पोखर पर निर्माण कार्य शुरू

हुआ उस दौरान जब लोगो ने ग्राम गौरव संस्थान के कार्यो कि प्रक्रिया, पारदर्शिता, संस्थान के कार्यकत्ताओ कि कर्मठता एवं इमानदारी को देखकर तुरंत ग्रामीण समुदाय कि बैठक बुलाकर ताल निर्माण कार्य शुरू करने का निर्णय लिया ।

पर शायद समस्या खत्म होने का नाम नही ले रही थी ग्राम पंचायत ने एन.ओ.सी देने में काफी अड़गे लगाये तत्पश्चात सभी ग्रामवासियो ने एक जुट होकर बैठक की एवं ग्राम पंचायत पदाधिकारियो पर नैतिक दबाव बनाकर एन.ओ.सी ली व ग्राम विकास समिति द्वारा तीन महीने में ताल का निर्माण पुरा किया । ताल निर्माण में 2012–13 में इस पर 704401/– का खर्च हुआ जिसमें 471244/– संस्थान द्वारा दिया गया अगर सरकारी BSR को देखे तो इस ताल में लगभग 15–20 लाख के आस–पास लागत आयेगी ।

1. जिस गांव में 2012 तक मुश्किल से 150 बीघा रबी की बुआई नही होती थी वहॉ 2012 के बाद 712 बीघा जमीन में सरसो गेहूँ व जौ कि बुआई हुई ।
2. उस वर्ष गांव में 5000 क्विटल रबी कि फसल हुई ।
3. पहले वर्ष कि सफलता से गांव वालो ने प्रेरित होकर 120 बीघा भूमि नई तैयार कर ली तथा 2013–14 में लगभग 850 बीघा में रबी की फसल की बुआई हुई ।

उस वर्ष के उपरान्त गांव के विकास की राह खुल गई

6. आंडी नली की पोखर आयी आढै

डांग क्षेत्र की ढालु, पथरीली, उबड़– खाबड़, जंगल के क्षेत्र में बिरमका गांव बसा हुआ है जिसमे बच्चु सिंह का परिवार निवास करता है । कहने को तो गांव के लोगो की आजिविका खेती व पशुपालन पर निर्भर थी पर अनियमित व कम वर्षा के कारण लोगो कि आजिविका पर संकट बढ गया था ।

जब हुम बच्चु सिंह के पास बैठकर उनके आडी नली की पोखर पर चर्चा करने लगते है तो बडे रून्दे गले से बताते है कि हम चार भाईयो के पच्चीस सदस्यो के परिवार का पेट पालने वाली पोखर ग्राम गौरव संस्थान कि देन है अपने पुराने दिनो को याद करते हुए वो सहमा जाते है तो चेहरे पर ऐसे लगता है जैसे डरा व सहमा हुआ है कही उन पुरानी समस्याओ ने घेर लिया हो बताते है कि आज से 35–40 साल पहले हम 4 भाईयो के जीवन से मॉ का साया उठ गया था हमारे पिताजी बड़े मुश्किल में खेती, पशुपालन व मजदूरी करके हमको पाला जब हम 15–16 साल के हुए तो मै व मेरा छोटा भाई रामफूल खनन कार्य पर मजदूरी करने लगे वहॉ मिली मजदूरी से हमारे घर का खर्च तो चलते लगा पर 8–10 साल के खनन पर हम भाईयो को टी.बी. कि बिमारी ने जकड़ लिया और हम स्वास्थ्य पर हुए बुरे असर से और भी द्यनीय स्थिति पर आ गये । भाईयो की शादी का बोझ घर के खर्च व टी.बी. कि बिमारी के खर्चो के कारण हम लगभग कंगाली के कगार पर आ खडे हुए अब शरीर ऐसा हो गया कि मजदूरी भी नही कर सकते थे खुद की जमीन में पानी के अभाव में बंजर थी हम दूसरो की भूमि को बटाई पर लेकर

रामफूल के पास में जाकर जब बात करते है तो रामफूल अपनी भाषा में कहता है कि संस्था वाले तो **यहाते गंगा तक बसीयो** ये उसकी आत्मा की पुकार है अब रामफूल व बड़ा भाई बच्चूसिंह पोखर की पाल पर जाकर बैठते है लहलहाती फसल को जब निहारते है तो मानो उन 40 वर्ष पहले भगवान ने जो परिक्षा ली उसको पास कर ली हो ऐसा प्रतीत होता है और एक सुर में कहते है कि हमारे तो आंडी नली की पोखर ही आढे आई है जिससे हमारा परिवार का भरण पोषण अच्छे तरीके से हो रहा है हम चाहते है कि ऐसी कार्य ग्राम गौरव संस्थान पूरी डांग में करे। जिससे कि लोगो को अन्न, धान के लिए तरसना नही पड़े, बच्चूसिंह और रामफूल सहित चारों परिवारों की खुशी इस डांग की खुशी से जुड गई है भविष्य के बारे में भीमा गुर्जर कहता है कि हमारे जो नूहान (जल संरचना) बने है वैसे ही पूरी डांग में जल, जमीन, संरक्षण का कार्य तेजी से बढ़े जिससे लोगो में स्वालंबन का भाव बडेगा और संम्पूर्ण डांग का विकास पोखर, पैगारा व ताल से होगा ।

परिवार का पेट पालते परिवार के घर खर्च पूरा नही होने के कारण हमको रात–रात भर नींद नही आती थी । इस मुश्किल की घडी में जीवन जीना भारी हो गया और हम लोगो की समस्याए बढ़ती गई हम निराश हो कर के घर में ही रहने लगे ।

भगवान से हमारी सुनी व ग्राम गौरव संस्थान वालो से मिलवाया ग्राम गौरव संस्थान व हमने मिलकर हमारी आड़ी नली की पोखर बनाई जिससे हमारे परिवार का जीवन खुशहाल हुआ । आज पोखर के नीचे जाकर देखते है तो उन परिवार जनों के चेहरे को व मन के भावों को समझ सकते है । खेतो में लहलहाती गेहू की फसल चारों तरफ हरियाली व पोखर में भरा नीला जल और आसमानी रंग विदेशी पक्षियों के जमावडा व चिडियों का कौतुहल इस परिवार की खुशी को माना चार चांद लगा रहा हो ।

पहले	अब
जमीन बंजर थी	8 बीघा जमीन खेती योग्य हो गई ।
कोई फसल नही	फसल लेने लगे ।
कोई पैदावार नही	धान व गेहू का 80 क्विटल उत्पादन
15 क्विटल अनाज खरीदते थे	40 क्विटल अनाज बेचते है ।
2 सदस्य मजदूरी करते थे	कोई मजदूरी पर नही जाता ।
1.50 लाख रू का कर्ज था	कोई कर्जा नही ।

7. सहेजना वाली पोखर ने सहजा पानी

गांव का बढ़ाया गौरव

सहेजना वाली पोखर ग्राम मानिकपुरा में स्थित है मानिकपुरा गांव करौली से 50 कि.मी. दूर आबाद है । मानिकपूरा गांव से करौली शहर में पहुचने के लिए कई पहाड़ चढने व नालो को पार करके करीब पचास कि.मी. कि यात्रा करनी होती है यह यात्रा कष्ट में जब अधिक होती है जब बरसात का करार पूरा हो चूका होता है धूप भी तेज और मौसमी बीमारी भी अपनी जड़ जमाने लगती है बाजार का काम भी सर पर होता है बुखार की चपेट में बालको सहित परिवार को चलाने वाले मुखिया भी आ जाता है इलाज के लिए अपने तन पर चादर ओढकर बच्चो को गोद व कंधे पर बिठाकर मुह से हू–हू कि आवाज करते हुए कभी सर्दी कि कमकपी कभी पसीनो का लथपथ को झेलता हुआ डॉ साहब के पास करौली शहर में पहुचते है कपकपांते हुए अपने बच्चो को आये बुखार के लक्षणो का बखाने करते हुए कहता है कि दो दिन से तो भाई मै भी गाफिल हूँ, इंलाज लेकर जल्दी करता हुआ वापिस अपने कन्तव्य कि और चल

पढते है इसी प्रकार से खाद्यान आपूर्ति के लिए गेहूं और अन्य सरद का सामान भी इन्ही रास्तो से ढोना पढ़ता है नालो पहाड़ो को पार करते हुए सांन्झ के समय को रास्ते मे बिताते हुए रात को घर पहुचते है

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा डांग जैसी कठिन परिस्थितियो वाले ग्रामीण क्षेत्र कि आजिविका सुदृढ करने इस गांव मानिकपूरा में ग्रामीणो के आर्थिक सहयोग के द्वारा कई पैगारा, पोखर निर्मित हुए है इन निर्मित संरचनाओ से गांव में धान व गेहू कि फसल में गुणात्मक वृध्दि हुई है जिससे अब गांव में खाद्य आपूर्ति, चारा व पानी उपलब्ध होने लगा है जिससे कारण लोगो का जीवन स्तर में बदलाव आ रहा है और ग्रामीण का गौरव बढ़ने लगा है ।

सहेजना कि पोखर उदाहरण है । गांव में 14 परिवारो कि 35 बीघा जमीन में कृषि में क्या परिवर्तन आया है इसका परिवर्तन आंकड़ो के माध्यम से दिखाया गया है धान व गेहू की पैदावार में 160 से 250 प्रतिशत वृध्दि एक उल्लेखनीय उदाहरण है ।

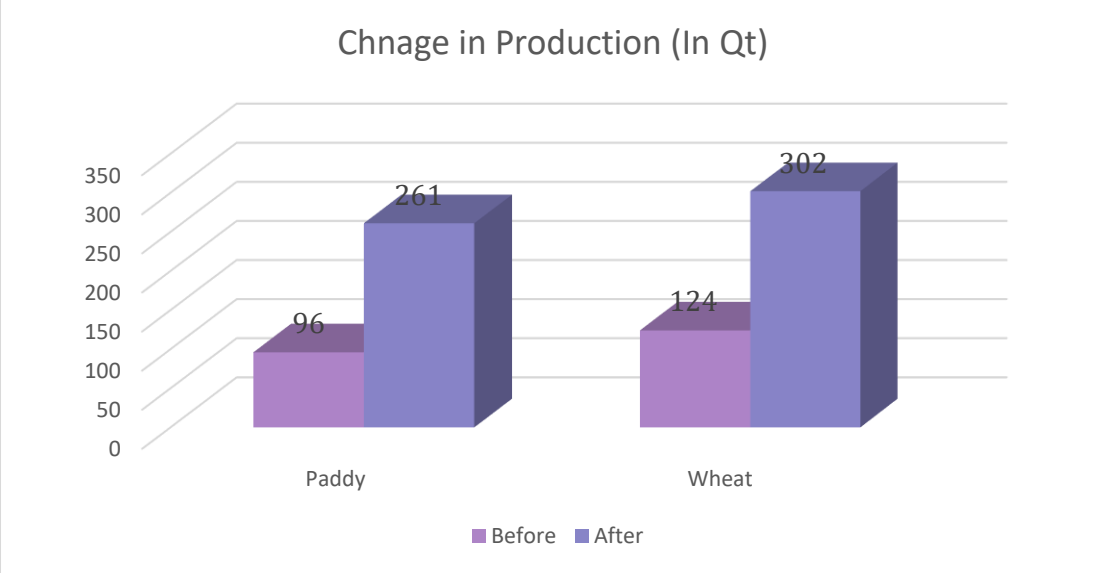

8. करमवीर जब कर्म ठेहलता है तो पत्थर का भी पानी बन जाता है

बामूदा गांव की बदलती तकदीर

बामूदा गांव करौली से 55 कि.मी. दूर चंबल के बिहड़ो को पार करते हुए अत्यन्त दुर्गम परिस्थितियो में बसा एक गांव है जहॉ गांव में सड़क नही है व डांबर रोड़ गांव से 18 कि.मी. दूर है गांव के लोग आज भी सड़क तक पैदल ही आते जाते है । डांग वासियो से बात करने पर जवाब में मिलता है साहब शासन में पकड़ शहर की ही रहती है इस पर बामूदा गांव के चिरंजीलाल गोठियाजी का कहना है साहब अन्न, दूध, वन पैदा करने वालो कि आज के शासन में कोई मान्यता ही नही, कई शुभ दूरदृष्टिवान् ग्रामीण खेद जताते हुए कहते है जबतक देश कि उत्पादन शक्ति कि पहचान नही करके गांव का विकास नही होगा जब तक देश का कुपोषण व बेरोजगारी कम नही होगी ।

Dharam Taal

डांग में ग्राम गौरव संस्थान ग्रामीणो कि सूदृढ आजिविका के प्रयासो में प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण में प्रयासरत् है समाज में चेतना जागृत करके डांग वासियो के श्रम व पौराणिक ज्ञान को उभारकर संसाधनो के संरक्षण में साझा करते हुए कार्य कर रही है इसी श्रृखला में ग्राम गौरव संस्थान ने बामूदा गांव में कई वर्षो से लगातार मेहनत की मेहनत ने 2016–17 में रंग दिखाने लगी गांव का चेतना पक्ष मजबूत होता गया संस्थान के द्वारा डांग के अन्य गांव खिजूरा, बध्दनकापुरा, रावतपुरा, चौबेकी, सहित बहुत से गांव में संस्थान के साथ मिलकर ग्राम संगठन बनाकर रचनात्मक कार्य किये उनके परिणामो से भी

बामूदा गांव के लोग रूबरू हुए 2017–18 में गांव का ग्राम संगठन मजबूत होकर उभरा कई पूजिपतियो को गांव के ताल, पोखर, पैगारा निर्माण से होने वाली उपज का भय भी सताने लगा उन्होने संगठन को कमजोर करने का मौन चुनौती दी, पर 2017–18 मार्च तक बामूदा के ग्राम संगठन ने अपने गांव के प्रस्ताव के अनुरूप गांव में पैगारा, ताल, पोखर निर्माण कार्य किया

Impact of Pagara

Hathila Ki Pokhar

वर्ष 2018–19 कि खरीब कि फसल ने ताल, पोखर, पैगारो के वर्षा जल के भरने से धान कि फसल कि बुआई कि अक्टूबर माह में पकते हुए धान को देखकर ग्रामीणो में हर्ष कि लहर चेहरो पर देखने को मिली धान कि फसल कि कटाई के बाद धान कि पैदावार ने घरो में धान का ठेर लगाया, रबी की फसल ताल व पोखर में लबालब भरा हुआ सा जल को देखकर हर्षित होते हुए ग्रामीण किसानो ने अपने बंजर भूमि में गेहू और सरसो कि बुआई कि जिसमें पहली बार अपने बंजर खेतो में सरसो एवं गेहू कि बंढती फसल को देखते निहारते किसानो की सर्दी खेतो में बीना महसूस किये निकली साथ ही ताल में 10–11 इंजन चलने पर अपने गांव को अन्न, धान वाले गांव कि पहचान देने लगे खेतो में सरसो में फूलो ने पिली चद्दर बिछा दी अपनी मेहनत से बने ताल के भराव क्षेत्र में से अपने पडौसी गांव पाटौरकापुरा वाले किसानो को खेतो में पानी देकर भाई–चारा कायम किया काका कमल कहते है नीर में सबका साझा होता है बस नीति से खर्चे, फरवरी माह में सरसो कि कटाई हुई खरीददार सरसो कि ठेरियो पर पहुचे घर बैठे ही भाव न्याव होने लगे मार्च माह में गेहू कि फसल ने भी किसानो कि कोठी भर दी गाय भैस को चारा के ठेर लगे ताल के नीचे मीठे पानी से आज गर्मी के महीने में भी लबालब भरे हुए है । बामूदा गांव कि मुस्कान डांग मे

पहचानवान् बन रही है गामीणो को अपने श्रम संगठन से स्वावलंबन कि व पारदर्शिता कायम करने पर सफलता हासिल होने का अहसास अपने मानस पटल पर दिखने लगा

एक परियोजना के अन्तर्गत बनाई गई धर्मताल, 7 पैगारा व 1 पोखर ने कैसे बामूदा गांव के जिन्दगी बदली साथ में पास के गांव कि स्थिति में बदलाव आया है 02 साल के उपरान्त प्रत्येक गांव के परिवार में पानी की उपलब्धता खेती की पैदावार की जानकारी जुटाने पर ये आंकड़े उपलब्ध हुए है जो ग्राम गौरव संस्थान के मुख्य उद्देश्य आजिविका को सूदृढ करने कि भावना को सत्यापित करते है ।

1. रबी कि फसल में जहॉ पहले मात्र पूरी जमीन के 1/4 हिस्से में के आसपास खेती होती थी अब 80 प्रतिशत ज्यादा हिस्से में खेती होने लगी है।
2. गांव की फसल की तीव्रता जो मात्र 95 प्रतिशत थी अब 165 प्रतिशत हो गई है।
3. ग्रामवासी खरीफ में बाजरे कि जगह धान कि खेती लेने लगे है ।
4. गेहू में 4–5 पानी मिलने के कारण 9.5 क्विटल प्रति बीघा गेहू होने लगा है तथा 6.8 प्रति बीघा क्विटल धान होने लगा है । पहले अगर कोई किसान गेहू करता भी था तो 1 से 2 पानी लग पाते थे व 4 क्विटल प्रति बीघा ही पैदा होता था ।
5. खेती में प्रत्येक परिवार को औसतन् 10,000 से 35,000 कि अतिरिक्त आमदनी होने लगी है व 5,000 से 25,000 रू तक चारा खरीदा जाता था जो अब नही खरीद रहे है।

ब्रजमोहन बताते है कि पहले मेरा इंजन मुश्किल से दिन में 1.30 से 2 घंटे चल पाता था इसके कारण एक सिचाई में ही मुझे 3 से 4 दिन लग जाते थे पर अब ताल ऊपर बनने से एक दिन में ही पूरे खेतो कि सिचाई कर लेता हू दिन भर इंजन चलता है ताल के कारण कुए में पानी रहने लगा है ।

गांव की धन्नो बाई बताती है कि ग्राम गौरव संस्थान वाले तो हमारे लिए साक्षात् भगवान है पहले हमारे गांव की बहु बेटीयो को पानी लाने के लिए 5 कि.मी. तक पैदल जाना पड़ता था क्योकि आस–पास के कुए गरमी में सुख जाते थे आस–पास के 3–4 गांव में कही पानी नही था पर अब पोखर व ताल बन जाने के कारण ताल के नीचे के कुओ में 12 महीने पानी रहता है हमारे गांव की महिलाए वही से पानी भरती है गांव का सभी लोगो को नहाने धोने पशुओ को पानी पिलाने व पीने के पानी का 12 महीना पूरा होता है भगवान ऐसे लोगो का भला करे ।

9. गुनठा देवी की जुबानी

गुनठा देवी विधवा जगनलाल मीना उम्र 45 वर्ष ग्राम अंगदकापुरा (बारदा) तहसील–मण्डरायल, जिला–करौली (राज.) 30 वर्ष की उम्र मे विधवा हो गई गुनठा देवी के 4 बेटा व 1 बेटी का कच्चा कुनबा छोडकर जगनलालजी का स्वर्गवास होने पर गुनठा देवी को इस डांग के गांव में अपने नन्हे मुन्हो का भरण पोषण करने के लिए दर–दर पहुचकर काम की तलाश करना प्रारंभ हो गया

हाट बजार दूर होना जहा से रसद सामग्री लाने पर किराया व किमत बराबर होती देख गुनठा देवी समय पर अपने नन्हे मुन्हो का तन भी नही ठक पाती थी गुनठा देवी के पास 4 बीघा जमीन थी पर वह नाले कि एक छत पत्थर वाली व बंजर भूमी थी जिसमें कही–कही रबी की फसल में गेहूँ कि बुआई होती 4 से 6 क्विटल गेहू पैदा होते है इसी पर सब्र करके किसी भी प्रकार का काम मिलने पर अपने नन्हे मुन्हो की भूख–प्यास बुझाने का जतन करती थी कठिन दिनो को पार करते हुए गुनठा देवी अपने नन्हे मुन्हो को किशोर अवस्था में देखने लगी तो शादी करने के लिए मन में जतन करने लगी अपने 2 लाड़ले बेटो कि अपने देवर (रामानंन्द) के सहयोग से शादी रचाई औरो को आभूषण दिखाकर व मिठाई बाटकर शादी को नही दिखा पाई पर मन को बड़ा प्रफुल्लित पाया यह गुनठा देवी से बात करने पर जानकारी मिली सन् 2016–17 में ग्राम गौरव संस्थान अपनी ग्रामीण आजिविका सूदृढ करने की श्रुखला को विस्तारित करती हुए अंगदकापुरा में पहुचा और अंगदकापूरा का संगठन बनाना प्रारंभ किया श्री गिरीराज गुर्जर के प्रकाश में गुनठा देवी कि दयनीय स्थिति व बीते वर्षो में कड़ी मेहनत का व्रर्तान्त सुना जो तो अंगदकापुरा के ग्राम संगठन को गजबूत करने के लिए बहुत जरूरी समझा गया ग्रामीणो ने आखिरकार इस चेतना को अपने अंदर स्वीकार किया। हमे मानव व हमारे पशुधन कि खाद्यान व पेयजल आपूर्ति के

लिए संस्थान के अनुसार संगठित होकर स्वयं को कार्य करने पर ही सुनिश्चित होना है अपने खेतो में पैगारा व ताल निर्माण होना अति आवश्यक है ग्राम संगठन का गठन हुआ और कार्य के प्रारंभ के तौर पर संस्था व हितग्राहियो के आपसी साझा सहयोग से 1 पैगारा निर्माण किया जिसमें दोनो पक्षो कि प्रतिबंधता व त्याग व कार्य कौशलता पर विश्वास हुआ वर्ष 2017–18 में गुनठा का पैगारा व गांव सामलाती ताल व अन्य पैगारो का निर्माण हुआ, गुनठा देवी ने वर्ष 2018–19 कि रबी फसल में अपने खेत में गेहूँ कि बुआई कि जिससे फसल के खेत में उगने से छाई हरीयाली ने गुनठा देवी के चेहरे को तहे दिल से प्रसन्नचित्त कर दिया । गुनठा के खेत में मार्च माह मे फसल पकने पर कटाई करके गेहू कि रास जब तैयार हुई तो नजर नही लगे कार खिची गुनठा ने अपने अनाज 30 क्विटल व तूड़ा 40 क्विटल को अपने रहवासी घर के हिस्सो में भरकर रखा गुनठा से बातचीत करने से जाहिर होता है गुनठा सहित संपूर्ण अंगदकापुरावासी अपनी कुशलता कि ये सही राह मिली